HINDI

THIRD BOOK.



हिन्दी

तृतीय पुस्तक ।



PUBLISHED BY THE
CHRISTIAN LITERATURE SOCIETY,
ALLAHABAD.

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

1898.

11*th Edn.*] [6000 *Copies*.


ASSOCIATED MENNONITE BIBLICAL SEMINARIES
ELKHART
LIBRARY

3

कभी आप इस हिन्दुस्तान में

आवेंगी प्यारी मामा जी मैं तो आप

लोगों को दस सदा याद करती हूं

और आप ने हम लोगों को जो

ड्रीलन सीख लीये वह भी सदा याद

आती है प्यारी मामा जी अब

समय नहीं है आगे मेरा प्यार

और सलाम आप लोगों को मिले

इस छोटी सी पत्री में कहीं गलती

हुई है सो मेहरबानी से क्षमा कीजियो

अब मैं अपने प्यार के साथ इस छोटी पत्री

को बन्द करती हूं इति।।

दः आप लोगों की प्यारी बेटी सुकवारी

2

पर आज कल बहुत ठराए पड़ती
है और हमारे यहां घेरों के पोताई
होती है, प्यारी मामा जी मैं तो फुलवारी के काम करती हूं और कमरा
संभालती और स्कूल में पांचवी
कक्षा के सी, क्लास को पढ़ती हूं
हमारे बागीचा में बिंज, मका, मूली
खोलराबी, दच गोफी, लाल गोफी,
प्याज, मटर, सेलरी, टनप, सल्लद
रोज़ेल, तमाता, मीरची, बैंगन और
नाना प्रकार के बीज बोये है और
बोते जाते हैं प्यारी मामा जी क्या

यह ख़त डडवारा मामा को मिले

ता:१९-११-०८ ईस्वी

१

अत्यन्त प्यारे मामा पापा जी को
सुकवारो का बहुत २
प्यार और सलाम पहुंचे ।।
नवीन समाचार हाल यह है कि
मैं ईश्वर पिता के दया से यहां
पर बहुत अच्छी तरह से पाई जा-
ती हूं और आशा रखती हूं कि आ-
प लोग ईश्वर के अनुग्रह से
अच्छे होंगे मैं ईश्वर से आप लोगों
के लिये प्रर्थना करती हूं प्यारे
मामा और पापा जी हमारे यहां

HINDI

THIRD BOOK.

हिन्दी

तृतीय पुस्तक ।





PUBLISHED BY THE CHRISTIAN LITERATURE SOCIETY, ALLAHABAD.

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

1898.

हिन्दी की तृतीय पुस्तक।



१.—कई भांति के विद्यार्थी।

श्रेणी—दरजा. क्लास. वृद्धि—बढ़ती.

हम बहुत करके उन लड़कों को जो पाठशालाओं में सिखाये जाते हैं तीन श्रेणियों में रख सक्ते हैं। पहिली श्रेणी के वे हैं जो विद्या को अच्छी रीति से प्राप्त करते हैं। दूसरी श्रेणी में वे हैं जो सीखने में मध्यम भांति के हैं। और तीसरी श्रेणी के वे हैं जो अच्छी रीति से विद्या को प्राप्त नहीं करते।

पहिली श्रेणी के विद्यार्थियों का दृष्टान्त गाय हो सक्ता है। जिस रीति कि गाय को थोड़ा ही सा भूसा अथवा सानी देते हैं पर उस की सन्ती में

वह बहुत सा दूध देती है इसी रीति अच्छे विद्यार्थी थोड़ी सी शिक्षा पाकर बहुत विद्या को प्राप्त करते हैं।

दूसरी श्रेणी के वे हैं जो कुछ तो ज्ञान पाते हैं परन्तु बड़े यत्न और कठिनता से। वे तोते की नाईं हैं कि जो केवल इतना सीख सक्ते हैं जितना कि उन को बतला दिया जाता है और अपने स्वाभाविक ज्ञान से कुछ भी वृद्धि नहीं कर सक्ते हैं।

तीसरी श्रेणी के विद्यार्थी टूटे हुए घड़े के समान हैं जिस में यद्यपि जल भर दिया जाय तौभी शून्य का शून्य बना रहता है। ऐसे लड़के जो कुछ सीखते हैं उस को शीघ्र भूल जाते हैं और ज्यों के त्यों मूर्ख बने रहते हैं।

इन तीन श्रेणियों को छोड़के ऐसे लड़के पाठशालाओं में आते हैं जिन को विद्यार्थी न कहना चाहिये क्योंकि निरे आलसी और निकम्मे हैं। वे चलनी की नाईं होते हैं जिस में से सारी अच्छी बस्तु निकल जाती है और कंकर पत्थर घास और नाना भांति की निकम्मी बस्तु एकट्ठी रह जाती हैं। ऐसे लड़के बुरी बातों को छोड़ अच्छी बातों को अपनी समझ में रख ही नहीं सक्ते हैं। इस से निकम्मा और क्या हो सक्ता है।

हे पढ़नेवालो इस पर ध्यान करो और देखो कि तुम इन में से किस श्रेणी में हो और चाहिये कि तुम परिश्रम करके अच्छे विद्यार्थी बनो और अपने लाभ के लिये ज्ञान प्राप्त करो।





२.—कौवे और घड़े की कथा।

कहानी है कि एक कौवा प्यास के मारे बिस्मित होकर एक पानी के घड़े पर आके बैठा पर देखता क्या है कि उस में बहुत थोड़ा सा जल है वह घड़ा इतना बड़ा और सकरा था कि उस की चोंच पानी तक पहुंच न सकी। यह दशा देखकर कौवा बिचार करने लगा कि अब करूं तो क्या करूं यदि इस को छोड़के और कहीं उड़ जाता हूं तो कदाचित् इतना भी जल कहीं न पाऊं। कहावत है कि जहां इच्छा तहां उपाय।

वह इस चिन्ता में था कि उस को एकाएकी एक श्रेष्ठ उपाय सूझ पड़ा। उस घड़े के समीप बहुत से कंकर पड़े हुए थे। उस ने यह कंकर अपनी चोंच से उठा उठाकर उस घड़े में डालना आरंभ किया और उस का फल यह हुआ कि ज्यों २ कंकर बैठते गये त्यों २ जल ऊपर को उठता आया। निदान होते २ पानी इतना ऊंचा हो आया कि उस की चोंच उस तक पहुंच गई और उस ने इच्छानुसार पानी पी लिया। यदि वह ऐसी चतुराई से उपाय न करता तो वह जल उसे किसी रीति से न मिल सक्ता।

इस की शिक्षा यह है कि यदि कोई बात तुम्हें कठिन देख पड़े तो उस की कठिनता से हार न मानो परन्तु परिश्रम करके उस कठिनताई को जीत लो। तुम्हारे यत्न का फल अच्छा निकलेगा और तुम्हारा अर्थ सिद्ध हो जायगा। परन्तु यदि यत्न से हाथ धो बैठो तो निष्फल रहोगे और तुम्हारी इच्छा कभी पूरी न होगी। इस कौवे के दृष्टान्त से शिक्षा पाओ और परिश्रम करने को न छोड़ो।



३.—घोड़े का वर्णन।

जन्तु—पशु. जानवर.

सब लोग जानते हैं कि घोड़ा कैसा उत्तम जन्तु होता है और मनुष्य के कैसे बड़े काम आता है। उस के शरीर में बड़े चिकने बाल होते हैं। उस का गला लंबा होता है और उस की चोटी बहुत चमकीली और सुन्दर होती है। वह अपने अति दृढ़

ओर बलवान पैरों से शीघ्र दुलकी सर्पट आदि चालों को चल सक्ता है। उस के पांव के नीचे के भाग में खुर होते हैं परन्तु वे समूचे हैं ओर गाय बैल ओर भेड़ बकरी इत्यादि के खुरों की नाईं चिरे हुए नहीं होते हैं। उस के पांव में लोहे की नालें बांधी जाती हैं जिस्तें सड़क के पत्थर कंकर से उस के पांव में चोट न लगे। घोड़े घास ओर नाना भांति का दाना खाते हैं किन्तु पागुर नहीं करते हैं।

संसार के घोड़ों में अरब लोगों के घोड़े अति नामी ओर प्रसिद्ध हैं। अरबवाले उन को मारा नहीं करते किन्तु अपने मुंह के बचन ओर बाग की सैन से उन को चलाते हैं। वह अपने घोड़ों की बड़ी रखवाली करते ओर पोसते ओर उन को अपने बालकों की नाईं प्यार करते हैं।

एशिया ओर अमेरिका देशों के कई भागों में जंगली घोड़े झुंड के झुंड पाये जाते हैं। जब यह घोड़े रात को सोने लगते हैं तो उन में से एक वा दो उन का पहरा देते ओर रखवाली करते हैं ओर २ सब घोड़े कुशल क्षेम से सो जाते हैं।



४.—ईश्वर हमें देखता है।

कहते हैं कि एक समय कोई मनुष्य अन्न चुराने की लालसा करके अपने घर से निकला ओर अकस्मात् अपने पुत्र को भी संग ले गया। जब खेत पर पहुंचा तो अपने पुत्र को अपना बोरा पकड़ाके आप इधर

उधर ताकने लगा जिस्तें देखे कि कोई दहिने बायें देखने में तो नहीं आता है। जब किसी को न देखा तो खेत को सूना समझके उस में से काटने और बोरे में डालने लगा।

यह देखकर पुत्र ने अपने पिता से कहा कि हे पिता आप ने एक ओर तो देखा ही नहीं।

वह मनुष्य यह सुनके डर गया और घबराके पूछा कि बेटा किधर।

पुत्र ने कहा पिता आप स्वर्ग की ओर देखना भूल गये। आप को यह भी तो देख लेना चाहिये कि कहीं ईश्वर की आंखें तो आप को देख नहीं रही हैं।

पिता यह सुनकर बड़े सोच में आया और लज्जित होके अपने काम को छोड़ दिया। यह तो केवल आठ ही बर्ष का बालक था पर देखो उस ने कैसा बड़ा काम किया कि उस ने अपने पिता को चोरी करने से बचा लिया और इस का ऐसा अच्छा फल हुआ कि उस ने जीवन भर चोरी न किई।

यदि किसी को किसी दूसरे की बस्तु चुराकर ले लेने की परीक्षा होवे तो उचित है कि उस समय बिचार करे कि यद्यपि वह काम और मनुष्यों की दृष्टि से छिपा है पर ईश्वर की दृष्टि से कभी नहीं छिप सक्ता है। परमेश्वर हमारे सारे कर्म्मों को रात दिन देखता रहता है। छिपे से छिपे स्थान और रात का बड़ा अंधियारा उस की दृष्टि के आगे दो पहर दिन की नाईं उंजियाले हैं। उस की दृष्टि मनुष्य की दृष्टि की नाईं नहीं होती है। मनुष्य तो केवल जो प्रत्यक्ष है सो ही देखता है परन्तु ईश्वर सारे

छिपे हुए कामों को भी देखता है हां अन्तर्यामी होके मन के बिचार तक उस की दृष्टि पड़ती रहती है और मन की शुद्ध और अशुद्ध इच्छायें भी उस की दृष्टि से गुप्त नहीं हो सक्ती हैं। चाहिये कि सकल मनुष्य सदा इस बात का बिचार करें कि ईश्वर हमें देखता है और कि कोई बात उस की दृष्टि से बच तो नहीं सक्ती है।



५.—एक अद्भुत घर का वर्णन।

पट—परदा.

इस संसार में एक ऐसा अद्भुत घर बना हुआ है कि सकल जगत में कोई ऐसा बनानेहारा नहीं है जो इस प्रकार का घर बना सक्ता है। यह घर तो बहुत छोटा सा है परन्तु दो बहुत हलके और दृढ़ और सुन्दर खंभों पर संभाला हुआ है। उस में केवल दो ही खिड़कियां हैं पर इन का उंजियाला अति तेजोमय और उजला होता है। घर का स्वामी इन खिड़कियों को दिन भर में कई बार धो डाला करता है इस कारण से उन में कहीं एक धब्बा तक मलीनता नहीं दिखाती है। रात के समय इन खिड़कियों पर दोहरी झिलमिल पड़ जाती हैं जिन में यद्यपि चिटकनियां नहीं लगती हैं तथापि बड़ी दृढ़ता से बंद रहती हैं।

इस घर में एक साम्ने का फाटक और दो बग़ली किवाड़े होते हैं। साम्ने फाटक में दो लाल रंग के पट होते हैं जो खुलते और बंद होते रहते हैं।

यदि कोई मनुष्य इस घर के स्वामी से बात करना चाहे ता केवल बगली किवाड़ों ही के द्वारा से संदेशा भेज सक्ता है। इस घर के दाहिने बायें पर दो पहरेवाले सदा खड़े रहते हैं और उस की रक्षा किया करते हैं। घर के भीतर एक चक्की बनी हुई है जिस से स्वामी सारे घर के लिये अन्न पीस पिसाकर तैयार करता जाता है बरन घर में ऐसी नलें लगी हुई हैं कि सब घर में गीलाई बनी रहती है। तो यह कैसा अद्भुत घर है।

हे पढ़नेवाले क्या तुम ने कभी इस घर को देखा है। तुम उस का नाम जानते हो। यह अद्भुत घर मनुष्य ही का शरीर है और यह परमेश्वर की अद्भुत बुद्धि का साक्षी है। उस को छोड़ न किसी में सामर्थ्य न ज्ञान है कि इस प्रकार का घर बना सके।



६.—पतङ्ग की डोर का वर्णन।

सब लड़के इस बात को जानते हैं कि जब पतङ्ग

उड़ाई जाती है और हवा में चढ़ती है तो अवश्य होता है कि उस की डोर बड़ी दृढ़ता से थांभी जाय। यह हो सकता है कि पतङ्ग अच्छी रीति से बनी और पोढ़ी होय और पुच्छल भी ठीक हो पवन भी अच्छी रीति से चलती हो किन्तु यदि डोर भली भांति से पकड़ी न जाय तो पतङ्ग का उड़ना कठिन होगा। जब पतङ्ग ऊपर चढ़ी हो और डोर टूट जाय तो वह चक्कर खाने लगती है और ऐसा देख पड़ता है कि डोर के टूट जाने से मारे आनन्द के नाचने लगती है परन्तु उस का फल यह है कि लुढ़कते २ भूमि पर गिर पड़ती और नुच पुंचकर टूट फट जाती और निष्काम हो जाती है।

हम देखते हैं कि लड़के भी पतङ्ग की नाईं होते हैं। जब लों वे अपने माता पिता और शिक्षकों के बश में रहते और उन की आज्ञानुसार जीवन बिताते हैं तब लों वे आगे बढ़ते चले जाते हैं पर जभी उन के बंद से छुटकारा पाते तभी बिगड़ने लगते हैं और अपने को नाश कर डालते हैं। कभी २ अपने को बिगड़े हुए देखकर वे पछताने भी लगते हैं परन्तु उस समय के पछताने और पश्चात्ताप करने की इच्छा से कुछ लाभ नहीं होता। जैसे जब तक पतङ्ग की डोर हाथ में रहती है तभी तक सधी रहती है वैसे जब तक लड़के अपने माता पिता और शिक्षक की अच्छी शिक्षा के अनुसार चलते हैं तब लों उन का नाना प्रकार का भला होता है। चाहिये कि लड़के लोग बड़ों की आज्ञासेवन से आनन्दित रहें।

७.—लड़के और बिल्ली का वर्णन।

कहते हैं कि एक दिन कोई लड़का अपने घर के आगे एक पेड़ की छाया में बैठके अपना मन बहला रहा था। अकस्मात् उस के घर की बिल्ली भी उसी के पास बैठी हुई खेल कूद में लगी थी। उस लड़के ने बिल्ली को पकड़ लिया और उस के साथ कलोल करने लगा। थोड़ी देर लों तो दोनों मिलके आनन्द से बिहार करते रहे परन्तु खेलते २ लड़के के जी में दुष्टता समाई और उस ने बिल्ली की दुम पकड़के ऐसा झटका दिया कि उस ने क्रोध में आके उस का हाथ नोंच लिया।

उस समय से इन दोनों की मित्रता में भेद आ गया। बिल्ली उस बालक को देखते ही भाग जाती और उस के हाथ न चढ़ती थी उस लड़के ने बार २ उस के फुसलाने में अत्यन्त परिश्रम किया परन्तु बिल्ली उस के निकट न आती परन्तु उस के देखते ही छिप जाती थी और खेलना उन का बन्द हो गया।

जो लोग अपने मित्रों के साथ दुष्टता करने लगते हैं वे अपने मित्रों की प्रीति को नाश कर देते हैं और जो उन के प्रिय थे उन के पास तक आना भी नहीं चाहते हैं। बुराई की संती बुरा होता है। जिन के मन में प्यार होता है उन के मित्र उन को अपनी दृष्टि में प्रिय रखते हैं और सत्य प्रीति प्रतीति बन जाती है। कहावत है कि नेकी का दरजा नेक है बद की बदी ही साथ।

इस लिये जो जन सत्य मित्रों को पाने चाहता है तो अवश्य है कि प्यार के बदले प्यार करे और सदा भलाई की संती भलाई करे। इस का फल अच्छा होगा और प्रिय लोग हम से अलगाये न जायेंगे।



८.—ईश्वर हमारा पिता है।

बालकों के इस संसार में माता पिता होते हैं जो उन के भोजन वस्त्र आदि बातों की चिन्ता करते रहते हैं उन की भलाई के नाना भांति से चाहनेवाले होते हैं और उन को प्यार भी करते हैं।

पर इन सांसारिक माता पिताओं को छोड़ हमारा एक और भी पिता है अर्थात् ईश्वर जो हमारा स्वर्गबासी पिता है।

इस पिता से सकल जगत के माता पिता और सब जगनिवासी जीवन पाते हैं और सर्बशक्तिमान् होके वह सब जीवों को जीता रखता है। यदि वह हम को न संभाले तो हमारा जीवन पल भर नहीं रह सक्ता है। वह दिन और रात सोते और जागते में सदा हमारी रखवाली करता है और हम को मृत्यु से बचाता है। वह कभी नहीं सोता है पर सर्बकाल में हमारी चिन्ता करता है। वह सदा हमारे संग रहता है। यद्यपि हम उस को देख नहीं सक्ते हैं पर वह सदा हमारी सुनता है और हमें जो कुछ अवश्य होता है यदि हमारी भलाई के लिये

हो तो वह अपनी दया से वहीं हम को पहुंचा देता है।

बालक बहुधा अपने माता पिता से नटखटी करते हैं और उन के कहने पर बिचार नहीं करते हैं बरन कृतघ्न होकर उन की आज्ञाओं का सेवन नहीं करते। यह तो बहुत ही अनुचित बात है। परन्तु इस से भी अधर्म्म की बात यह है कि हम अपने स्वर्गबासी पिता को मन में नहीं लाते हैं और उस की आज्ञाओं को तुच्छ जानकर उल्लंघन करते हैं। तौभी वह दयालु पिता की नाईं हम को नहीं छोड़ता है यद्यपि हम अकृतज्ञता करते और आज्ञाओं को उल्लंघन कर देते हैं तौभी वह हम को प्यार करता है और हम को अपने पास बुलाता है कि हम अपनी बुरी रीतों को छोड़कर उस से आशीर्बाद और अनुग्रह पावें। कौन है जो ऐसे प्यारे पिता को प्यार न करेगा और उस से प्रसन्न होने का प्रयत्न न करेगा।

परमेश्वर सब पर यों दया करे कि वे अपने स्वर्गबासी पिता से प्रीति उत्पन्न करें और उस की अगुवाई के अनुसार जीवन को बितावें तब दोनों लोक में हमारा भला होगा और जीवन के अन्त में सदा का आनन्द और कल्याण होगा। और वह मंगल कभी हम से दूर न किया जायगा। लिखा है कि जिस रीति पिता पुत्र पर दया करता है उसी रीति परमेश्वर उन पर कृपा करता है जो उस से डरते हैं और उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं।



९.—पाठशाले में का चालचलन ।

जब लड़के अपने घरों में रहते हैं तब अपनी इच्छा के अनुसार चलते फिरते और खेलते कूदते रहते हैं। पाठशाले में खेलने और बतियाने चलने फिरने के लिये नहीं जाते हैं। वह तो पढ़ने लिखने और ज्ञान प्राप्त करने का स्थान है। लड़कों को उचित है कि पाठशाले में अपनी पुस्तकों से काम रखें और पाठ के सीखने ही में लगे रहें।

फिर चाहिये कि शिक्षक की आज्ञाओं को पालन करते रहें। और उस के कहे के विरुद्ध कोई काम न करें। यदि किसी लड़के से कोई बुरा काम होय और शिक्षक उसे चितौनी दे तो वह यह न कहे कि तुम्हारी बात की मुझ को चिन्ता नहीं है। यह बात अति बुरी होती है और उस से बुरा फल भी उत्पन्न होता है। चाहिये कि सब लड़के शिक्षक की बात मानें अच्छी रीति से चित्त लगाके पाठों को कंठ करके सुनावें और पढ़ने लिखने में सुधरने के लिये परिश्रम करें। इस को छोड़ उन सब लड़कों को जो एक पाठशाले में जाते हैं यह उचित है कि एक दूसरे को प्यार करें किसी से न लड़ें न झगड़ें। यदि कोई लड़का दोषी हो तो प्रेम से उस बुरे काम वा बात के कहने से उसे रोक दें। जब पाठ-शाले से बिदा किये जाओ तो सीधे घर को चले जाओ और बिन माता पिता की आज्ञा के कहीं मार्ग में बिलम्ब करना योग्य नहीं है। इस बात में

यत्न करो कि प्रतिदिन कोई न कोई और लाभदायक बात को सीखो और चाहिये कि प्रतिदिन धर्म्म और भलाई में तुम्हारी वृद्धि होय।



१०.—आलसी लड़के का वर्णन।

कहानी है कि एक मूर्ख और निर्बुद्धि लड़के का मन खेल कूद में इस रीति लगा रहता था कि पाठशाले में जाना और किसी प्रकार का ज्ञान पाना उसे सम्पूर्णरूप से अप्रिय था। एक दिन खेल की धुन में होकर उस ने मधुमक्खी को एक फूल से दूसरे फूल तक उड़ते हुए देखा और कहा आओ जी हम तुम खेलें। मक्खी बोली कि मुझे खेलने का अवकाश कहां है मुझे तो मधु एकट्ठा करना है नहीं तो जाड़े में कहां से खायेंगे सो मुझे इस से क्षमा रखिये।

थोड़ी देर पीछे उस लड़के को एक कुत्ता दृष्ट आया जो घर को लपका दौड़ा जाता था। उस ने उस कुत्ते से भी खेलने के लिये बिन्ती किई पर कुत्ते ने कहा मुझे इतना अवकाश नहीं है कि निश्चिन्त बैठकर तुम्हारे संग खेलूं मुझे चिन्ता लग रही है कि कोई चोर उचक्का घर में घुसके मेरे स्वामी की संपत्ति की हानि न करे क्योंकि आज घर मेरी रखवारी में सौंपा गया है सो मुझे क्षमा रखिये।

थोड़ी बिलम्ब के पीछे लड़के की दृष्टि एक चिड़िया पर पड़ी जो चोंच से घास फूस के उठाने में लग

रही थी। उस लड़के ने उस से पूछा क्यों जी तुम हमारे साथ खेलोगी। उस चिड़िये ने कहा अब खेलने का कौन सा समय है मुझे तो घोंसला तैयार करना है और मुझे फूस के ढूंढ़ने की चिन्ता लग रही है कोई निष्कामवाला तुम्हारे साथ खेले। वह तो इतना कहके उड़ गई।

जब यह लड़का एकान्त में छोड़ा गया और देखा कि कोई भी खेलने में मेरा साथी नहीं है तो वह यह बिचार करने लगा कि कैसे शोक की बात है कि मैं ही अकेला निष्प्रयोजन फिर रहा हूं। सब अपने २ काम में लग रहे हैं तो मैं भी क्यों बेकाम रहूं। यह सोचकर उस लड़के ने अपनी आलस्य को त्याग दिया और पाठशाला में जाके पढ़ने लिखने में अत्यन्त परिश्रम करने लगा। यह दशा देख उस के शिक्षक ने इस परिश्रम के कारण से उस की बड़ी प्रशंसा किई और वह लड़का अति आनन्दित हुआ। आलसी होना सारी बुराइयों की जड़ है और सब को उस से बचना चाहिये।



११.—अच्छे प्रकार का पढ़ना।

पढ़ने के समय उचित है कि लड़का सिर उठाये रहे और निडोल खड़ा रहे और मुंह शिक्षक की ओर रखे। पढ़ने में बहुत शीघ्र न बोलना चाहिये हर एक बचन ठीक २ निकले और दूसरे बचनों के साथ मिलाया न जाय न शब्द बहुत ऊंचा हो न

बहुत नीचा परन्तु ऐसा बराबर रखना चाहिये कि सुन्नेहारा तुम्हारी बातें को भली भांति से सुन ले। इस का भी बिचार रखना चाहिये कि पढ़ते समय किस २ स्थान पर शब्द टूटता है और वहां शब्द न तोड़ना चाहिये कि जहां आशय पूरा न हो जाय। शब्द के तोड़ने के निमित्त अंगरेज़ी और रोमन अक्षरों की उर्दू पुस्तकों में चार प्रकार के चिन्ह स्थापित हैं।

जहां शब्द थोड़ा सा रुकना चाहिये वहां यह चिन्ह (,) होता है जिस को कामा कहते हैं। जहां शब्द टुक और अधिक रुकना चाहिये वहां यह चिन्ह (;) जिस को समीकोलन कहते हैं होता है। यदि शब्द कुछ और तोड़ना चाहिये वहां इस को (:) अर्थात् कोलन को लिखते हैं। जहां पूरी रीति पर ठहरना चाहिये वहां यह चिन्ह (.) आता है जिस को पीरियड और फुलस्टाप भी कहते हैं।

हिन्दी की पुस्तकों में यह चिन्ह कम मिलते हैं परन्तु इन की सन्ती में इन तीन प्रकार के चिन्हों को काम में लाते हैं अर्थात् बिराम द्विविराम त्रिविराम। उन में से द्विविराम (।) वहां लिखते हैं जहां कि एक वाक्य पूरा हो जाय और त्रिविराम (॥) वहां लिखते हैं जहां कोई भाग वा अर्थ पूरा हो जाय। इन चिन्हों की सहायता से पढ़ना अति सहज हो जाता और अर्थ भी भली भांति निकल आता है।

एक और बात का भी बिचार रखना चाहिये कि शब्द को खींचके वा गाके न पढ़ना चाहिये। इस

रीति पर पढ़ना उचित है जिस रीति से कोई किसी जन से बातचीत करता है। फिर पढ़ते समय अर्थ का भी बिचार रखना चाहिये क्योंकि यदि वह बात जो पढ़ी जाये समझ में न आवे तो वह अच्छी रीति से पढ़ी भी न जावेगी। स्वर का उच्चारण भी केवल उन्हीं बचनों पर लगाओ कि जिस से अर्थ और भी स्पष्ट निकल आवे।



१२.—वर्णों का वर्णन।

जितनी बस्तु हमारे देखने में आती हैं सभों में किसी न किसी प्रकार का रंग अवश्य ही होता है। इस पुस्तक के कागज़ का वर्ण श्वेत होता है छापे के अक्षरों का रंग काला होता है सोने का पीत वर्ण है पीतल का रंग पीला सा होता है लहू का रंग लाल होता है और आकाश का वर्ण नीला होता है। तीन प्रकार के रंग अर्थात् लाल पीला और नीला महावर्ण अर्थात् विशेष वर्ण कहलाते हैं और जितने और रंग हैं सो इन तीनों के मिलाने से बनते हैं। नीले और पीले के मिलाने से हरा रंग बन जाता है। घास का रंग हरा होता है और यह नेत्रों के लिये बहुत ही अच्छा रंग होता है जिस पर बड़ी बिलम्ब लों दृष्टि ठहर सक्ती और न आंख थकती न हम उस से अप्रसन्न हो जाते हैं और परमेश्वर की दया से चारों ओर हरा रंग बहुतायत से देखने में आता है। पीला और लाल

वर्ण के मिलाने से नारंग वर्ण बन जाता है और नीले और लाल की मिलावट से बैंगनी वर्ण हो जाता है। जब मनुष्य पर बुढ़ापा आ जाता है तो बालों पर सुफेदी आ जाती है इन में से कई रंगों की रंगत में अधिक गहिरापन और कितनों में अधिक हलकापन प्रगट होता है।

वह कौन जो आकाश और घास पेड़ों और फल फूलों में इस सुन्दर रंग को निकालता और इन नाना प्रकार के रंगों से क्या लाभ होता है। कई ऐसी बस्तुन के नाम बताओ कि जिन के बर्ण श्वेत और पीले और लाल और हरे और नीले और काले होते हैं।



१३.—चमगोदड़ और पशु पक्षियों का दृष्टान्त।

कहते हैं कि एक समय पशुओं और पक्षियों में बड़ी भारी लड़ाई होने लगी। इस दशा में चमगोदड़ किसी को कुछ नहीं पूछता था और उस ने अपने को उस दुःख से अलग रखना भला समझा न इन में का न उन में का अपने को बतलाया। पहिले तो आनन्दित होकर कहता था कि पहिले देखूं इन दोनों में जो जीते तो उन में जाके मिलूंगा। किसी समय ऐसा देख पड़ता था कि लड़ाई में पशु जीतेंगे तो उन के समूह के पास जाकर चमगोदड़ बोला कि हे पशुओ मैं तुम्हारे बीच में का हूं। मैं

तो चिड़ियों की गिन्ती में से नहीं हूं। आप देखिये क्या आप लोगों ने कभी कहीं कोई ऐसी चिड़िया देखी है जिस के मुंह में इस प्रकार के दांत होते हैं जैसे कि मेरे हैं।

परन्तु इस के पीछे गिद्ध की सहायता से पक्षी प्रबल होने लगे श्रौर ऐसा देख पड़ता था कि लड़ाई में यही जीतेंगे। यह दशा देखकर चमगीदड़ उन में जा मिला श्रौर बोला कि हे चिड़ियो देखो मैं भी तुम में का हूं। देखिये मेरे भी पर हैं। क्या पशु मेरे समान आकाश में उड़ सक्ते हैं तो अब यह प्रगट है कि चिड़िया को छोड़ मैं श्रौर क्या हो सक्ता हूं।

पर यद्यपि उस के इतने यत्न श्रौर इतनी प्रवीणता थी तोभी न पशुश्रों ने न पक्षियों ने चमगीदड़ को ग्रहण किया। कोई भी उसे अपनी सभा में आने देना उचित न जानते थे सो बेबश हो दोनों से अलग हो गया इस लिये कहावत है कि चमगीदड़ दिन के समय छिपा हुआ बैठा रहता है श्रौर केवल रात ही को निकलता है जब चिड़िया बसेरा ले लेती हैं श्रौर पशु भी सो जाते हैं।



१४.—ऊंट का वर्णन।

ऊंट तो डील में बड़ा ऊंचा पशु होता है श्रौर उस की पीठ पर एक बड़ा कूबड़ होता है। देखने में उस का आकार अद्भुत प्रकार का होता है पर



इस जन्तु से मनुष्य के बहुत सा लाभ नाना प्रकार से पहुंचता है। अरबवाले ऊंट के दूध के बहुत पिया करते हैं और उस के रोम से जो कि बर्ष में एक बार गिर जाया करता है वह अपने पहिरने के लिये बस्त्र और रहने के लिये तंबू बना लिया करते हैं।

ऊंट इस बात के लिये बहुत प्रसिद्ध है कि वह यात्रा करने में कई दिन तक पानी बिना चला जाता है। उस के पेट में जल के लिये एक अलग स्थान होता है और बन में चलकर जब पानी नहीं मिलता है तब वह अपने पेट के इसी जल से अपनी प्यास बुझा लेता है। ऊंट कंटैली झाड़ियों के खाने के लिये बहुत चाहता है और उस का मुख ऐसा बना है कि इन कांटों से उस के चोट नहीं लगती है।

बड़े ऊंट की पीठ पर छः मन का भार रखा जा सक्ता है। भार रखते समय वह अपने घुटने तोड़के

भूमि पर बैठ जाता है। कई भाषाओं में ऊंटों को मरुस्थल की नौका कहते हैं इस कारण से कि बालू के जंगलों में यात्रा और ब्योपार विशेष करके इस के द्वारा हो सक्ता है। यदि अरब लोगों में ऊंट न होते तो वहां की मरुभूमि में चलना और ब्योपार करना मनुष्यों के लिये अनहोना होता।



१५.—सृजनहार का वर्णन।

इस संसार की बस्तुन पर बिचार करने से प्रत्यक्ष देख पड़ता है कि वे आप से आप सृजी नहीं गईं पर हर एक बस्तु का कोई न कोई बनानेहारा है। अपने घर को देखो कि जिस में तुम रहते हो क्या वह आप से आप बन गया है। सब जानते हैं कि बहुत से और अलग २ बनानेहारों ने मिलकर घर को बनाया है और जब लों राज और बढ़ई और लुहार और ग्रामी अपने २ काम को न करें तब लों घर ठीक नहीं किया जाता है। प्रत्येक घर में दीपक रहते हैं जिस में तेल और बत्ती वा मोम वा चर्बी के द्वारा से ज्योति उत्पन्न कर देते हैं कि अंधकार के समय में काम आवे पर क्या यह दीपक आप से आप बन गया है। कभी नहीं। इस को तो किसी मनुष्य ने बनाया है।

अब एक बस्तु ऐसी है जो दीपक से अधिक चमकनेवाली है और कोई सांसारिक ज्योति उस के बराबर प्रकाश नहीं दे सक्ती है। उस को सूर्य्य

कहते हैं। उस से मनुष्य को केवल प्रकाश ही नहीं मिलता है किन्तु वह गर्मी भी पहुंचाता है और इन दोनों अर्थात् ज्योति और उष्णता के द्वारा से इस संसार की वस्तु अर्थात् घास फल फूल इत्यादि जीते और बढ़ते हैं। यदि सूरज न होता तो कोई वस्तु भूमि से उग न सक्ती न जड़ पकड़ सक्ती। क्या मनुष्य सूर्य्य को बना सक्ता था। कभी नहीं। फिर उस का बनानेहारा कौन है। इस प्रश्न का केवल एक ही उत्तर हो सक्ता है अर्थात् कि ईश्वर ही इस का सृजनहार है। वही ईश्वर हमारा स्वर्गबासी पिता है। यह पृथिवी भी जिस पर हम चैन से जीवन बिताते हैं उसी ईश्वर ने बनाई और हमारे निवास के लिये सिद्ध किई है। जितनी बस्तु इस संसार में देखने में आती हैं सब उसी सर्बशक्तिमान् ईश्वर और हमारे स्वर्गीय पिता की सृष्टि हैं। सारी सृष्टि का वही उत्पन्न करनेहारा है। तो वह कैसा बुद्धिमान और पवित्र और प्रेमी है।

वह बड़ा और महात्मा और सामर्थी ईश्वर हमारा परमेश्वर है इस लिये चाहिये कि हम उसी अकेले की पूजा और आराधना करें और किसी दूसरे के आगे सिर न नवावें।



१६.—दस मित्रों का दृष्टान्त।

कहानी है कि गोपाल नामे एक बड़ा आलसी लड़का अंकड़ाइयां लेता और जंभाइयां भरता

हुआ अपने मुख से यह बचन निकालता था कि क्या ही भला होता यदि मेरे कई सत् मित्र होते जिन की सहायता से मेरा जीवन आनन्द और बिश्राम से कट जाता। अकस्मात् उस के शिक्षक ने उस की इस व्यर्थ बात को सुनकर कहा क्यों लड़के तू मित्रों और सहायकों की खोज में रहता है। क्या तू नहीं जानता कि तेरे पास ही ऐसे दस मित्र बने रहते हैं।

यह लड़का बिस्मित होके बोला कि महाराज आप दस मित्र कहते हैं मैं तो जानता हूं कि मेरे पांच मित्र भी नहीं हैं और जो हैं भी वह ऐसे दीन हीन हैं कि उन से तो मेरी कुछ भी सहायता हो नहीं सक्ती है।

शिक्षक बोला कि भला तुम कहते हो कि नहीं हैं अब अपनी उंगलियां तो गिन डालो। उस लड़के ने गिनके कहा कि महाराज हैं तो दस ही।

उस के शिक्षक ने कहा कि यह कभी न कहो कि मेरे पास दस मित्र नहीं हैं कि जो जीवन भर में तुम्हारा सहारा नहीं कर सक्ते हैं। देखो कि उन से तुम को कैसी सहायता होती है। उन की परीक्षा कर लो और तब यदि कर सक्ते हो तो उन की निन्दा करो।

फिर जिन को इतना ढाढ़स है कि अपना सहारा आप करें तो ईश्वर भी उन की सहायता करता है। जो जन कि दूसरों से सहायता का खोजी रहता है और अपनी उंगली आप नहीं हिलाता सो निर्बल और दीन हीन रह जाता है पर वह जो

आप अपने लिये परिश्रम करता है सो दृढ़ और बलवान् हो जाता है। इस लिये आलसी के छोड़ कोई यह नहीं कहता कि इस संसार में मेरा कोई सहायक नहीं है।

१७.—सिर का बर्णन।

मनुष्य की देह में अनेक भाग होते हैं उन में से सिर धड़ और हाथ पांव मुख्य भाग हैं। बहुतेरे जीवों का सिर नीचे की ओर के झुका रहता है पर मनुष्य के शरीर में सिर सब भागों से ऊपर रहता और चहुंओर घूमता फिरता रहता है।

मनुष्य के सिर में तीन बिशेष बस्तु होती हैं अर्थात् खोपड़ी और बाल और मुख। खोपड़ी के भीतर एक अति कोमल पदार्थ रहता है जिसे गूदा बोलते हैं। खोपड़ी में आठ हड्डियां होती हैं जो आरी के दांतों की नाईं एक दूसरे से जोड़ी जाती हैं। वह एक पोढ़े सन्दूक के समान है जिस के भीतर गूदा की रक्षा होती क्योंकि उस तक हानि नहीं पहुंचती। फिर बालों से खोपड़ी की रक्षा और सिंगार होता है।

चिहरे में आंख और नाक और मुख और ठुड्डी होते हैं और उस के दोनों पहलू में कान होते हैं। मुंह के भीतर बत्तीस दांत होते हैं इन के मिलाकर सीस में साठ हड्डियां होती हैं और यह सब बड़ी बुद्धि से अपने २ ठिकाने पर रखी और एक दूसरे

के साथ जुड़ी हुई हैं और चाहिये कि देखनेवाला उन के सृजनहार की बड़ी प्रशंसा गावे ।



१८.—बारी का दृष्टान्त ।

जब कि कहीं हम फुलवारी में टहलते हैं तो इधर तो फूलों के उत्तम २ पेड़ फलों से लदे हुए देख पड़ते हैं उधर फूलों की सुन्दरताई मन को मगन कर देती है और इन के संग ही कहीं कांटे कंटीले भी देखने में आते हैं। न तो इन कांटों को फूलों से कुछ सम्बंध होता है न फूलों को कांटों से कुछ नाता है इन दोनों की उत्पत्ति अलग २ होती है और प्रत्येक पेड़ के बीज भिन्न २ होते हैं और उन के फल फूल भी अलग २ होते हैं ।

यही दशा हमारे कामों और बचनों की भी होती है यदि कोई मनुष्य किसी को भला बुरा कहे और बुरी बातों का बीज बोये तो उस से बुराई ही उत्पन्न होगी । उस की सन्ती में दूसरा भी तुम को बुरा भला कहे वा यदि कोई किसी को मारे पीटे और इस प्रकार की बुराई का बीज बोये तो उस बीज से उस भांति का फल हाथ आयेगा और दूसरा भी अपने मारनेहारे को मारने चाहेगा ।

इसी प्रकार से यदि हम लोग धर्म्म का बीज बोयें और सब से प्रेम और सुशीलता करें तो इस प्रीति का फल अच्छा होगा और दूसरा भी हम से सुशीलता करेगा और प्रेम से हमारे साथ चलेगा ।

इस बर्णन से यह शिक्षा पाओ कि जैसा कोई बोवेगा उस का वैसा ही फल पायेगा । प्रेम की सन्ती प्रेम मिलता है और बैर के बदले बैर । तो बुराई को छोड़ो और भलाई करो और धर्म्म और आनन्द को प्राप्त करो ।



१९.—माता पिता की सेवा ।

सब को यह उचित है कि अपने २ माता पिता को प्यार करें । वे तो अपने बालबच्चों को अत्यन्त प्यारे जानते हैं जब से हम जन्मे तब से हमारी रक्षा करते आये हैं । यदि वह हम को प्यार न करते और बचपन से हमारी रखवाली न करते तो हम इस कुशल क्षेम की दशा को जिस में अब हैं कभी न पहुंचते । बचपन के दिनों में जब हम बल-हीन थे और चल फिर तो नहीं सक्ते थे और खा लेने और सो रहने वा रोने और उन को कष्ट देने को छोड़ कुछ और न कर सक्ते थे उसी समय उन की दया और प्रीति और उन की रखवाली से हमारा जीवन भला रहा ।

माता पिता की दया और प्रीति अति बड़ी होती है और बड़ा प्रेमी मित्र तुम्हारा कोई क्यों न हो तौभी उस की चाह उन की प्रीति की बरा-बरी तक पहुंच नहीं सक्ती है । बालकों के भोजन वस्त्र की कौन चिन्ता रखता है । कौन हैं जो उन के आनन्द से मगन होते हैं और उन के शोक और

दुःख से शोकित और दुःखी होते हैं। जब वे रोगी होते और बड़ी पीड़ा उन्हें लगी है तो कौन हैं जो उन की इतनी चिन्ता रखते कि उन के बिश्राम के लिये आप बड़ी बेचैनी उठाते हैं और दिन को दिन और रात को रात नहीं समझते हैं बरन रात दिन का कष्ट उठाकर उन की भलाई के लिये बिचार किया करते हैं।

बालकों को चाहिये कि अपने माता पिता की आज्ञाओं का सेवन करें और कभी नटखटी करके उन को शोक न दिलावें। चाहे वे सन्मुख हों वा न हों तौभी कभी कोई कर्म्म उन की इच्छा के बिरुद्ध न करें। निःसन्देह यदि वे अधर्म्म और अनुचित कर्म्म करने को कहें तो उन की बात को हम न मानें क्योंकि ईश्वर की आज्ञा मानना सब से बड़ा धर्म्म है और जब उस ने कुछ कहा है तो कभी उस के बिरुद्ध किसी के कहने से न करना चाहिये।



२०.—अन्न का वर्णन।

बहुत प्रकार के अन्न हैं जो अलग २ देशों में उत्पन्न होते हैं। विशेष करके इन्हीं के नाम को लेना चाहिये अर्थात् धान जिस से चावल निकलता है और गेहूं और ज्वार और बाजरा और मक्का और जुन्हरी इत्यादि। इन सब में इतनी समानता होती है कि इन के डंठे एक सां और खोखले और जोड़दार वा गांठीदार होते हैं। उन की पत्तियां



लंबी और पतली होती हैं और इन में दाने ऊपर को गुच्छे में लगते हैं। यह अन्न कई प्रकार के घास बताये जाते हैं और उन के उत्पन्न करने और ठीक रखने में बड़ी बुद्धिमानी दिखाई जाती है। परमेश्वर ने उन्हें अद्भुत रीति से बनाया है। यदि उन के डंठे अधिक पतले और बलहीन होते तो हर एक वायु के झोंके से टूट जाते। और यदि वह अधिक मोटे और दृढ़ होते तो उन में कम उत्पन्न होते और फिर चिड़ियां उन में बसेरा लेतीं और उन के दाने चुग लिया करतीं। दाने छिलकों में लपेटे हुए होते हैं जिसतें सूरज की धूप से सूखके मुरझा न जायें न ठण्डई के मारे ठिठुरके निष्फल हो जायें। इस से एक और भी यह लाभ होता है कि काटने के समय वा जब स्वामी खेत से घर वा खरिहान को ले जाते उस समय उस के दाने गिरने नहीं पाते।

गर्म देशों में धान और ज्वार और मक्का अधिक

बोये जाते हैं और गेहूं और जव बिशेष करके ठंढे देशों में उपजते हैं।

ये सब अन्न खाये जाते हैं। यही मनुष्यों के भोजन होते हैं और बड़े सुस्वाद होते हैं। इन के उत्पन्न करने में ईश्वर की बड़ी प्रीति प्रगट होती है। चाहिये कि हम उस दयालु और प्रेमी ईश्वर की आराधना करें और उस से प्रेम दिखावें।



२१.—परमेश्वर के क्रोध का वर्णन।

जब लड़के बाले अपने माता पिता की सेवा टहल करते हैं और उन की आज्ञाओं को मानते हैं तब वे उन से बहुत प्रसन्न होते हैं और वे उन को भला समझते हैं और अधिक प्यार करते हैं। परन्तु जब बालक उन्हें नहीं मानते हैं और उन का अनादर करते हैं तो वे अप्रसन्न होते हैं और उन के मनों में बड़ी उदासी और शोक उत्पन्न होता है। वह ऐसे लड़कों से खीझते हैं। यह बात तुम से कही गई है कि ईश्वर तुम्हारा स्वर्गबासी पिता है। क्या वह भी हम से कभी अप्रसन्न और क्रोधित होता है।

बिचार करना चाहिये कि हम बहुत से ऐसे काम करते हैं कि जिन से ईश्वर घिनाता है। वह कौन से काम हैं। यदि कोई मनुष्य अपने माता पिता को प्यार न करे परन्तु उन को भूल जाय और उन की कुछ चिन्ता वा आदर न करे और दूसरे

पर उन से अधिक प्रेम लगावे तो क्या वह क्रोधित न होंगे। निःसन्देह उन को यह बात अति अप्रसन्न होगी। इसी रीति से जब कोई ईश्वर को प्यार नहीं करता और उस की दया को भूलकर उस की भलाई का धन्यवाद नहीं करता है और उस के भजन करने को छोड़कर मूर्त्तों को पूजता और उन के आगे झुकता है तो वह भी उन से क्रोधित होता है। जब मनुष्य अपने माता पिता का कहना नहीं मानते हैं और एक दूसरे से झगड़ते रहते हैं और झूठ बोलते हैं और लोगों से नाना प्रकार की बुराई करते हैं तभी ईश्वर उन से अप्रसन्न होता है।

और यह भी सोचना चाहिये कि जिन लोगों के कर्म्मों से ईश्वर घिनाता है उन्हें दण्ड भी दे सक्ता है। वह मनुष्य को ऐसी आग में डाल सक्ता है जो कभी नहीं बुझती है। नरक का दण्ड उन का भाग होगा जो ईश्वर के बैरी ठहरते हैं।

ईश्वर से डरो। उस की आज्ञाओं को मानो। उसी को प्यार करो और केवल उसी की आराधना करो तो ईश्वर कभी तुम से अप्रसन्न और क्रोधित न होगा और तुम को सदा की आनन्दता देगा। धन्य वे हैं जो ईश्वर को प्यार करनेहारे हैं।



२२.—पेड़ लगाने का दृष्टान्त।

कहते हैं कि एक दिन किसी तरुण मनुष्य ने एक बूढ़े को आम के पेड़ लगाते हुए देखके उस से कहा

कि साहिब आप तो इतने बूढ़े हैं कि जब लों इस पेड़ में फल लगने के दिन आयेंगे तब लों कदाचित् आप जीते न रहेंगे। इस पेड़ के फल खाने का आप को क्या आशा है। क्यों आप उस को लगाने का कष्ट उठा रहे हैं।

उस बूढ़े ने अपने को सीधा करके और कुदारी के डंडे पर आप को संभालके उस को उत्तर दिया कि भाई किसी ने मेरे उत्पन्न होने से पहिले पेड़ लगाये थे जिन का फल मैं खाता हूं इस लिये मैं भी यह पेड़ लगाता हूं कि मेरे मरने के पीछे दूसरे उस का फल खायें।

हम को सदा दूसरे मनुष्यों से बड़ा लाभ मिलता है तो चाहिये कि हम भी इस की सन्ती में दूसरों का भला करें। प्रभु यीसू मसीह ने कहा है कि देना लेने से अति भला होता है।

ईश्वर उन पर भी दया करता जो उस को नहीं मानते हैं। वह सूरज को भले और बुरे दोनों के लिये उगाता है और धर्म्मी और अधर्म्मी दोनों पर मेंह बरसाता है। चाहिये कि हम इस बात की चिन्ता करते रहें कि भले कामों को छोड़ न दें और यों अपने स्वर्गीय पिता के ऐसे काम करें।



२३.—हंस को पहचानने का वर्णन।

किसी समय में ऐसा हुआ कि एक कौवे का बच्चा जब पहिली बार अपने खोंते से उड़कर बाहर

गया तो हंसों को देखकर अति व्याकुल हुआ और मारे डर के फिर लौट आया और अपनी माता से कहा कि माता मैं ने तो ऐसे पक्षी देखे हैं कि मारे डर के मेरे जी में जी नहीं रहा।

उस की माता ने पूछा कि बेटा तुम ने क्या देखा है।

उस ने कहा कि अद्भुत श्वेत २ बड़े पक्षी जो बहुत चीखते और सिर उठाये हुए चले जाते थे और वहां देखिये कि यह उड़े आते हैं।

उस की माता बोली कि बेटा यह तो केवल हंस ही हैं इन का तो क्या डर। और मैं तुम को यह शिक्षा देती हूं इस बात पर चित्त लगा कि जब कोई संसार में अपने सिर को उठाके और लोगों से ऊंचाई प्रगट किया चाहता है तो जान लो कि वही केवल हंस है।

कहावत है कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं पर जब उन के पास आते हैं तो केवल लकड़ी चमड़ा देखने में आते हैं।



२४.—बस्त्रों और ढंपनों का वर्णन।

पशुओं की देह पर बाल और ऊन इत्यादि होते हैं चिड़ियों की देह पर पक्ष होते हैं। मछलियों के शरीर पर देवली होती हैं। केवल मनुष्य के शरीर पर पतली कोमल सी खाल होती है। किन्तु ईश्वर ने मनुष्य को ज्ञान दिया है और इस के काम में

लाने से वह अपनी देह के लिये कपड़ा बना लेता है और जिस देश में रहता है उस की सर्दी गर्मी के अनुसार अपने शरीर के बिश्राम के लिये बस्त्र बना लेता है।

मनुष्य बहुधा रुई के बने हुए कपड़े पहिनते हैं कारण क्या कि वह हलका भी है और गर्म भी होता है। रेशमी अर्थात् कौशिक कपड़े से बहुत अच्छे बस्त्र बनते हैं किन्तु बड़े महंगे दाम का आते हैं इस रेशम के सूत का एक प्रकार के कीड़े बनाते हैं आदमी उन का लेकर कात लेते हैं और उन से कपड़े बुनते हैं। इंगलिस्तान में हिन्दुस्तान की सी धूप और गर्मी नहीं होती है क्योंकि वह ठण्डा देश है इस लिये वहां के लोग ऊनी कपड़े बहुत पहिनते हैं ऊन तो भेड़ों की पीठ से काटते हैं और एक प्रकार की ऊन है जिस का पशम कहते हैं और कपड़ा जो उस से बनता है पशमीना कहलाता है। कई देश ऐसे ठण्डे हैं कि वहां के लोग पशुओं की खाल पहिनते हैं इस प्रकार के बस्त्र से जिस का काबुल में संबूर कहते हैं बड़ी गर्मी मिलती है।

कोई देश में मनुष्य अपने सिर पर टोपियां रखते हैं और किसी में पगड़ियां बांधते हैं। लोग अपने शरीर का कुरतों और अंगरखों और पैजामों से ढांपे रहते हैं और मोजे और जूतियां और बूटों से अपने पैरों का गर्म रखते हैं।





२५.—एक लड़के और एक नदी का दृष्टान्त।

एक दिन का बर्णन है कि किसी बूढ़े ने एक छोटी नदी के तीर पर एक लड़के को बड़ी बिलम्ब लों बैठे हुए देखा। बूढ़े ने उस से पूछा कि पुत्र तुम उदास से क्यों बैठे हो और इतनी देर लों इस नदी को क्यों देख रहे हो।

उस लड़के ने कहा कि साहिब मैं यहां बैठा रहूंगा जब लों कि यह नदी बहके चली न जाय और जब इस का जल उतरके सूख जायगा तो मैं सूखे २ में इस के पार उतरूंगा।

बूढ़े ने उत्तर दिया कि पुत्र तुम्हारा यह बिचार ब्यर्थ है। यदि तुम जीवन भर यहां बैठे रहोगे तौभी यह नदी उतरने की तो नहीं है बरन उस का जल बराबर बहता ही रहेगा। यदि तुम को पार जाना है तो उस को मंझाके निकल जाओ।

इस की शिक्षा यह है कि इस जीवन में हमें बहुत सी रोक टोक मिलेंगी सो यदि हम को आगे जाना हो तो अवश्य है कि उन रोकों के हट जाने

की बाट न जोहें बरन उन पर विजय पावें क्योंकि जो समय हम को अभी मिलता है सो अपने मनोर्थ प्राप्त करने के लिये सब से उत्तम समय यही है और जो कुछ करना है सो अभी कर लें। आज के बराबर कोई समय नहीं है।



२६.—हाथी का वर्णन।

सकल पशुओं में जो जङ्गल और बनों में फिरते हैं हाथी बड़ा और बलवान् होता है। यह एशिया और अफ्रिका के बहुत से देशों में पाया जाता है। उस का शरीर बड़ा और सामर्थी है। उस की बड़ी टांग खंभे की नाईं देख पड़ती हैं। उस की आंखें देखने में तो छोटी हैं परन्तु उन की बड़ी अच्छी दृष्टि होती है। उस के कान बहुत बड़े होते हैं।

हाथी का सिर बहुत भारी है यदि उस का गला पतला और लंबा होता तो सहज से सिर उठाया न जाता परन्तु उस का गला अति छोटा और मोटा है तो भूमि से घास इत्यादि कैसे उठायेगा। इस लिये उस का बड़ा अद्भुत उपाय किया गया अर्थात् उस के एक सूंड़ है जो पोली होती है और अद्भुत प्रकार से बनी होती है वह नाक की सन्ती में उस के मुंह के ऊपर रखी जाती है और वह उस को जिधर चाहे अपनी इच्छानुसार फेर सक्ता है उस की सहायता से वह प्रत्येक छोटी बड़ी बस्तु को भूमि पर से उठा सक्ता है परन्तु ऐसी पोढ़ी भी होती है कि कभी २ उस के बल से बड़े पेड़ को जड़ से उखाड़ लेता है और उस से मटर को भी उठा लेता है।

हाथी नहाने से भी अति प्रसन्न होता है और अपनी सूंड़ से अपनी पीठ के ऊपर पानी छिड़क लेता है। कभी २ ऐसा भी होता है कि जब उस को बड़ी गर्मी जान पड़ती है तो वह इसी सूंड़ के द्वारा से पेड़ की डालियां तोड़कर उन से अपने ऊपर पंखा कर लेता है। जब लोग उस को पालते हैं तो वह बहुत सीधा हो जाता है और अपने महावत का कहना भी अच्छी रीति से मानता है और बड़ी चतुराई से काम करता है। हाथी कभी एक सौ बीस बरस तक जीता है।



२७.—मूर्त्तिपूजा का वर्णन।

इस बात के सोचे कि यदि किसी लड़के के भूख लगे ते वह रोटी मांगने के किस के समीप जायगा। यदि वह अपने माता वा पिता के निकट न जाय ते क्या उस के रोटी मिलेगी। यदि उन के पास जाने न चाहे किन्तु किसी पत्थर से रोटी मांगे ते क्या रोटी पायेगा। क्या पत्थर उस के कुछ दे सकेगा। क्या वह उस की बात सुन सकेगा वा उस से कह सकेगा कि अमुक स्थान में रोटी रखी है जाके वहां से निकाल ले। वा क्या वह यह कह सक्ता है कि यहां आ मैं तुझ के रोटी दूं। कभी नहीं। आज तक न किसी ने कभी यह देखा न सुना है कि पत्थर किसी से बोला हो अथवा किसी के कुछ दिया हो।

तिस पर भी ऐसा देखने में आता है कि बहुत मनुष्य इस प्रकार की मूर्त्तों की पूजा करते हैं। वे भली भांति ते जानते हैं कि हम के जे कुछ मिलता है वह परमेश्वर ही की दया से मिलता है तैाभी ईश्वर से अचेत होके लोग मूर्त्ति बनाते और काठ पाषाण पर भरोसा रखते हैं और उन से प्रार्थना करते हैं और समझते हैं कि यही हैं जे कि हमारे दुःखों के दूर कर सक्तीं और हम के सनातन का आनन्द दे सक्ती हैं।

सुने कि मूर्त्तों के विषय में परमेश्वर के धर्म्म-पुस्तक में क्या शिक्षा है उस में यह लिखा है कि उन की मूर्त्तें रूपा और सोना हैं मनुष्यों की बनावटें।

वे मुंह रखती हैं पर बोलती नहीं वे आंखें रखती हैं पर देखती नहीं वे कान रखती हैं पर सुनती नहीं उन की नाकें भी हैं पर सूंघती नहीं वे हाथ रखती हैं पर पकड़ती नहीं वे पांव रखती हैं पर चलती नहीं वे अपने गले से भी शब्द नहीं निकालतीं वे जो उन्हें बनाते हैं और वे सब जो उन का भरोसा रखते हैं उन्हीं के समान हैं।

मूर्त्तिपूजा अति ही अनुचित बात है। पूजा और आराधना केवल ईश्वर ही की करनी उचित है। वह सदा हमारी प्रार्थना को सुनता है और हमारी सकल दशाओं में हमें सहायता दे सक्ता है।



२८.—एक अन्धे चूहे और उस के मित्र का वर्णन।

एक समय का वृत्तान्त है कि एक मनुष्य संध्या के समय किसी ओर को हवा खाने के लिये चल निकला। चलते २ उस को एक स्थान पर चूहों का एक समूह चलता फिरता दृष्ट आया। उन को देखकर उस ने बिचार कर लिया कि यह चूहे किसी स्थान को छोड़कर दूसरे घर को ढूंढ़ने जाते हैं और उस को यह चिन्ता हुई कि देखो ये क्या करेंगे सो वह उन के पीछे २ चला।

आगे बढ़के देखता क्या है कि चूहों के मध्य में एक अन्धा और बलहीन चूहा बहुत धीरे २ चल रहा है। इस पर जो चित्त लगाके देखा तो जान गया कि उस के मुंह में एक तिनका लगा हुआ है और दूसरा चूहा भी मुंह से इस तिनके को पकड़के

उस के खींचे लिये जाता है और इस मित्र के उस की ऐसी दया और चिन्ता लग रही है जिस प्रकार माता पिता किसी अन्धे लड़के की चिन्ता में रहते हैं।

इस कथा से यह अर्थ निकलता है कि चूहे भी जो अज्ञान और निकम्मे जन्तु कहलाते हैं तौभी अपनी प्रीति के इस प्रकार से प्रगट करते हैं जिस रीति से कि हम मनुष्य भी प्रेम दिखाते हैं अर्थात् जैसे कि मनुष्य बिपत्ति के समय दुःखियों की सहायता करते हैं ऐसी दया उन में भी पाई जाती है।

२९.—मनुष्य की देह का वर्णन।

मनुष्य की देह का बड़ा भाग वह है जो गले और कटि के बीच में है इस भाग के धड़ भी कहते हैं। इस धड़ के कई भाग अर्थात् कंधा और छाती और पीठ और पेट हैं।

इस धड़ की थूनी वह हड्डी है जो कि पीठ में गले से कटि के नीचे तक पहुंचती है जिस के रीढ़ कहते हैं। इस रीढ़ में चैाबीस टुकड़े हड्डी के होते हैं। इस के टुकड़े इस लिये हैं कि देह सहज से झुका सके।

इस धड़ के ऊपरी भाग के छाती कहते हैं और छाती के इधर उधर के खण्ड के पसुली कहते और इन में बारह जोड़ होते हैं। पसुलियां रीढ़ से मिली हुई होती हैं और इन में की कई एक भी साम्ने के छाती की हड्डी से जुटी रहती हैं। जब कि हम सांस लेते हैं तब वायु भीतर उतरके फेफड़े

में पहुंचती है और सकल छाती में भरी रहती है हृदय फेफड़े के बीच में होता है। इसी फेफड़े में लोहू शुद्ध होके सारे शरीर में पहुंच जाता है।

छाती के नीचे झोझ रहता है यह तो एक थैली की नाईं है जिस में भोजन एकट्ठा होता और अन्न-रस की सहायता से घुलके दूध की नाईं हो जाता है तब फेफड़े में आ जाता है और वहां लोहू बनकर सारे शरीर में फैलता और देह को जीवन देता है। धड़ के नीचे के भाग को पेड़ू कहते हैं। ऐसी देह में परमेश्वर की सामर्थ्य और उस का अद्भुत विज्ञान देख पड़ता है। निःसन्देह मनुष्य अद्भुत प्रकार के सृजे हुए हैं।



३०.—बर्रें और मधुमक्खी का दृष्टान्त।

कहते हैं कि एक समय अचानक ऐसा हुआ कि एक बर्रें और मधुमक्खी के बीच में इस प्रकार की बातचीत हुई। बर्रें ने मधुमक्खी से पूछा इस का क्या कारण है कि मनुष्य हम को सदा दुःख देते और हंकाते हैं और तुम को प्यार करते हैं हम तो दोनों सपक्ष हैं और हमारे पंख भी एक दूसरे से मिलते

हैं बरन मेरे पंख तुम्हारे पंखों से कुछ सुन्दर और अच्छे भी होते हैं हम दोनों का रूप एक ही है हम दोनों ही का मधु का खोज होता है और हम दोनों ही अपने बैरियों के डंक मारनेवाली हैं। तिस पर भी लोग मुझे देखते ही मार डालने चाहते हैं पर तुम से कोई कुछ नहीं बोलता।

मैं तो उन के घरों में घुस जाती हूं और उन के आगे उड़ती फिरती हूं और अपना उत्तम रूप उन के दिखा देती हूं। तुम तो उन से डरती हो और उन के समीप तक नहीं जाती हो तिस पर भी वे तुम्हारे लिये बड़े २ घर बना देते हैं तुम्हारी रक्षा करते हैं और कठिनताई के समय तुम के भोजन भी दिया करते हैं। मैं तो इस बात के सोचके बिस्मित हो जाती हूं कि इस का क्या कारण हो सक्ता है कि वे तुम के इतनी प्रीति दिखाते हैं परन्तु सदा बैर से मेरा पीछा करते हैं।

मधुमक्खी ने कहा इस के कई कारण हैं पहिले तुम निरी आलसी रहती हो और किसी के लाभ नहीं पहुंचाती हो पर मैं सारे दिन परिश्रम करके मनुष्यों के लिये मधु बटोरके पहुंचाया करती हूं। मैं तो मनुष्य का सदा भला किया करती हूं इसी कारण से वे भी मेरे संग भलाई किया करते हैं।

सत्य है कि यदि हम चाहते हैं कि लोग हम से प्रीति दिखायें तो चाहिये कि हम भी उन का भला करें परन्तु यदि हम दूसरों के संग बुराई करें तो बुराई के छोड़ उन से हम के क्या मिलेगा। क्या

तुम ने यह कहावत नहीं सुनी है कि दुधैल गाय की दो लातें भी भली होती हैं।

३१.—बुरी बातों की बुराई का वर्णन।

किसी लड़के को किसी प्रकार के कुबचनों को कभी काम में न लाना चाहिये। इस देश में बहुधा लड़कों की यह रीति है कि गालियां देते और कुबचन बका करते हैं। जब पुरुष और स्त्रियां क्रोध में आके लड़ते हैं तो गाली देने वा कुबचन कहने को छोड़ उन के मुंह से कुछ सुन्ने में नहीं आता है और लड़के इन्हीं के बुरे निदर्शन से यह बुरी रीति पकड़ लेते हैं पर यह अति अनुचित है। अशुद्ध और बिगाड़नेवाली बातें अपने मुख से मत निकालो।

फिर व्यर्थ किरिया न खाओ। परमेश्वर के बचन में यह आज्ञा है कि कोई किरिया मत खाओ न स्वर्ग की न धरती की न और कोई किरिया परन्तु तुम्हारी बातचीत हां हां और नहीं नहीं होवे। और किसी को श्राप देना वा बुरा कहना वा परमेश्वर का नाम अकारथ लेना ये सब पाप की बातें हैं। बहुत बूढ़े और तरुण हैं जो ठट्ठे से ईश्वर का नाम लेते हैं यहां लों कि सुन्नेवाले को लाज आती है उसी के पवित्र नाम को अपने क्रोध में और अपने खेल में अनुचित रीति से लेते हैं किन्तु ऐसों के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि मैं उसे जो मेरा नाम अकारण लेता है बिन दण्ड दिये न छोड़ूंगा।

जिन लड़कों में ऐसी बुरी कुरीति हों उन की संगति न करना चाहिये क्योंकि कहावत है कि बुरी संगति अच्छी रीतों को बिगाड़ देती है और बुरे निदर्शन से बहुत बुराइयां उत्पन्न होती हैं। प्रतिदिन यों प्रार्थना किया करो कि हे ईश्वर मेरे होंठों की रक्षा कर।



३२.—साधारण बस्तुन का वर्णन।

रोटी गेहूं आदि के आटे से बनती हैं। मक्खन दूध से निकलता है। पनीर दही से बनता है। चा एक वृक्ष की सुखाई हुई पत्ती है। कहवा एक प्रकार की गुठली होती है। चीनी ऊख और कई पौधों से बनती है। मोम और मधु मधुमक्खी के छत्ते से निकलते हैं।

लोग समुद्र के खारे पानी को सुखाकर नोन को प्राप्त करते हैं और कहीं मिट्टी में से भी उसे खोद निकालते हैं। रुई कपास के पेड़ से उत्पन्न होती है। सनिया कपड़ा सन वा अल्सी की छाल से बनता है। बहुत सा गर्म कपड़ा ऊन अर्थात् भेड़ के बाल से बनाया जाता है। रेशम वा कौशिक बस्त्र एक प्रकार के कीड़े से प्राप्त होता है। पशुओं की खाल से चमड़े बनते हैं।

रस्सियां और थैले और टाट सन और पटुवे आदि से बनते हैं। कार्क जिस को हिन्दुस्तानी लोग काग कहते हैं एक पेड़ की छाल से बनता है।

ईंटें मिट्टी की बनतीं और आग में पका लिई

जाती हैं। गारा चूना श्रौर बालू श्रौर पानी से बनता है। शीशा बालू कड़ा पत्थर पीसा हुआ श्रौर एक प्रकार के लोन को मिलाकर पकाने से निकाला जाता है। पत्थर के कोयले भूमि की खानि से निकलते हैं। श्रौर लकड़ियों को जलाके दूसरे प्रकार का कोयला बनाते हैं। कागज कपड़े के चिथड़े श्रौर पुत्राल आदि के मिलाने से बनता है।



३३.—धर्म्मपुस्तक का वर्णन।

ईश्वर ने हमें एक धर्म्मग्रंथ दिया है जिस में वह हमें बतलाता कि हमें क्या जानना श्रौर क्या करना उचित है। उस ग्रंथ का नाम बैबल है जिसे धर्म्मपुस्तक कहते हैं क्योंकि बैबल पद का अर्थ पुस्तक है। उस का यह नाम इस लिये पड़ा कि यह सब पुस्तकों में उत्तम श्रौर श्रेष्ठ है। कभी २ इसे पवित्रलेख भी कहते हैं।

बैबल के दो विशेष भाग हैं एक नवीन दूसरा प्राचीन नियम कहलाता है। प्राचीन नियम प्रभु यीसू मसीह के अवतार लेने के पहिले लिखा गया श्रौर नवीन नियम उस के स्वर्ग पर चढ़ जाने के उपरान्त लिखा गया।

धर्म्मपुस्तक को उन धर्म्मी लोगों ने जिन को ईश्वर ने धर्म्मात्मा के द्वारा लिखने को बतलाया लिख दिया श्रौर उस में केवल वही बातें हैं जिन को परमेश्वर ने लिखवाने चाहा। इसी लिये यद्यपि बैबल मनुष्य के हाथ से लिखा गया तौभी ईश्वर ने

उसे लिखवाया और उस का बचन कहलाता है। प्रतिदिन बड़ी सावधानी से उसे पढ़ा करो और ईश्वर से प्रार्थना करो कि हम इसी ग्रन्थ की शिक्षाओं के अनुसार अपने जीवन को बिताया करें। जो कोई उस मार्ग में चलता जिस को वह पुस्तक बतलाती है वह दोनों लोक में कल्याण पावेगा।



३४.—राजा और लकड़हारे की कथा।

कहते हैं कि किसी मनुष्य ने पारस देश के नामी महाराजा से यह प्रश्न किया कि महाराज क्या आप ने ऐसे किसी जन को देखा है वा कभी किसी से ऐसे का वृत्तान्त सुना जो आप से श्रीमान् और माहात्मिक था।

राजा ने उत्तर दिया कि हां देखा है। एक दिन की बात है कि मैं ने नगर के सब निवासियों के लिये संभोजन बनवाया और सब लोगों को बुलाया पर अचानक उस दिन किसी महाजन के संग मैं जंगल की ओर टहलने को निकल गया। वहां मेरी दृष्टि एक लकड़हारे पर पड़ी जो लकड़ी का गट्ठा अपने सिर पर उठाये हुए था। मैं ने उस से पूछा क्यों साहिब क्या आप नहीं जानते हैं कि आज महाराजा ने नगर के सारे निवासियों को संभोजन में बुलाया है लोग वहां चारों ओर से ढुले पड़ते हैं आप यहां क्या कर रहे हैं क्या आप को उस संभोजन में जाना उचित नहीं है।

उस दरिद्री ने यह उत्तम उत्तर दिया कि महाराज जो मनुष्य अपने हाथ के परिश्रम से रोटी कमाके खा सक्ता है उस को यह अवश्य नहीं कि राजा की भीख की रोटी खाय।

महाराजा ने कहा कि मैं उस लकड़हारे को अपने से माहात्मिक जानता हूं। परन्तु राजा के यह कहने से हम उसी को अति महान् वा कीर्त्तिमान् जानते हैं। ऐसों की प्रशंसा गाना चाहिये परन्तु हिन्दुस्तान में एक अति बुरी रीति यह है कि लोग अपने जातिवाले वा कुटुम्बी लोगों को बड़े २ संभोजन में बुलाते हैं और योंहीं बहुत से रुपये निर्लाभ व्यय होते हैं और बहुत लोग आलस्य सीखते हैं जिस से उन की बड़ी हानि होती है।

३५.—लिखने के विषय में शिक्षा।

देखो कि इस चित्र में कोई लड़का पटिया पर लिखने को सीख रहा है पर बहुधा लिखना इस रीति पर सिखलाया जाता है कि शिक्षक आप कागज वा पटिया के ऊपर एक पांति लिख देता है अथवा एक उत्तम लिखी हुई पत्री लड़के को दे देता है कि उस को देखके आप संभाल संभालके लिखे। जब लड़का शिक्षक की बातों को सुनता और उन पर चित्त लगाता है और अक्षरों के ठीक बनाने में यत्न करता है तो कई दिन में अच्छी रीति से लिखने लगता है।

किन्तु मैं ने ऐसे बहुत लड़कों को निश्चिन्त देखा



कि पहिले हस्तलेख को भली भांति देख भालके दूसरे को प्रतिलिपि करते हैं परन्तु जब तीसरी पांति तक पहुंचते हैं तो ऊपर के लिखे पर बिचार न करके अपनी लिखी हुई पांतों की प्रतिलिपि करने लगते हैं और उस का फल यह होता है कि जितनी भूल दूसरी पांति में थी सो तीसरी में भी आयेगी और उन को छोड़ कुछ और भी और यों हर एक पांति और भी बुरी नीचे तक होती जाती है और लिखने में बढ़ती नहीं किन्तु बिगाड़ हो जायगा।

इस के अनुसार ऐसा देखने में आता है कि लड़के

अपने चाल चलन के सुधारने में यत्न तो नहीं करते हैं क्योंकि जो उन में बुराइयां थीं सो ही करते जाते हैं और नये २ अपराध उन में जोड़ते जाते हैं और उन का ढंग अच्छा नहीं बरन बिगड़ता जाता है और प्रतिदिन और भी निश्चिन्त और आलसी और आपस्वार्थी और आज्ञा उल्लंघन करनेहारे निकलते हैं।

हे लड़को अपने को ऐसे अपराधों से बचाओ। अच्छा निदर्शन देखके अपने को सुधारो और बुरे निदर्शन देखके बुरे मत बनो।



३६.—पृथिवी का वर्णन।

यह पृथिवी जिस पर हम लोग रहते हैं गेंद के समान गोल है। देखने में तो चपटी सी आती है पर इस का कारण यह है कि एक बेर में हम केवल उस का थोड़ा सा भाग देखते हैं। प्रतिवर्ष नौका पृथिवी के चारों ओर घूमती जाती हैं इस भांति कि

जिस स्थान के छोड़ देतीं उसी स्थान पर बिना पीठ फेरे और आगे बढ़ती २ लौट आती हैं। जो उस का आकार गोल न होता तो इस प्रकार का घूमना न हो सकता।

हिन्दुस्तान के बहुत निवासी समझते हैं कि पृथिवी शेषनाग पर ठहरी हुई है परन्तु यह बात झूठ है। पृथिवी सूर्य्य और चन्द्रमा के समान आकाश में तैरा करती है। जहां कहीं हम लोग पृथिवी पर चलते हैं वहां आकाश को अपने सिर के ऊपर देखते हैं।

जैसे पहिये अपनी धुरी पर घूमते रहते हैं इसी प्रकार से पृथिवी चौबीस घंटे में एक बेर चक्कर करती है और इसी से रात और दिन हुआ करते हैं। पृथिवी के उस अर्द्धभाग में जिस पर सूर्य्य की ज्योति पड़ती है उस में दिन होता है परन्तु उसी समय उस के उस अर्द्धभाग में जो सूर्य्य के साम्ने नहीं रहता उस में रात का अंधियारा रहता है। जिस समय हम लोगों के यहां प्रकाश होता क्योंकि सूर्य्य के साम्ने हैं और उस प्रकाश के कारण कामकाज करते हैं उसी समय जो लोग पृथिवी के उस पार हैं अंधियारे में हैं और सोते रहते हैं।

पृथिवी का एक और घूमना है अर्थात् वर्ष भर में एक बेर पृथिवी सूर्य्य के चारों ओर घूम आती है और इसी से ऋतु की बदली होती है। हिन्दुस्तान में तीन मुख्य ऋतु हैं अर्थात् जाड़ा गर्मी और बरसात। यूरोप में और पृथिवी के बहुतेरे दूसरे खण्डों में चार ऋतु होते हैं अर्थात् बसंत ग्रीष्म शरद और हेमन्त।

पृथिवी का व्यास प्रायः चार सहस्र कोस और परिधि साढ़े बारह सहस्र कोस है।



३७.—खरहा और कछुवा का दृष्टान्त।

सब लोग जानते हैं कि खरहा अति शीघ्रगामी जन्तु है और उस के सन्मुख कछुवा अति धीरे चलनेवाला जन्तु है। एक दिन किसी खरहे ने एक बेचारे कछुवे की आलस्य और मन्दता की निन्दा किई और कहा कि तू आलसी और मन्दगामी जन्तु मेरे साम्ने क्या है।

कछुवा हंस पड़ा और बोला कि आइये महाराज एक दिन कहो उस दिन हम तुम दौड़ दौड़ेंगे।

खरहा ने कहा अभी चलो मैं तुझे दिखला दूंगा कि मेरे पांव काहे के बने हैं। निदान बात की बात में दोनों चलने पर सिद्ध हो गये। बेचारे कछुवे ने कहीं मार्ग में सांस तक न लिई और धीरे २ बराबर चलता ही गया। खरहा तो कछुवे को अति तुच्छ जानता था और समझा कि इस के संग मेरा दौड़ना क्या अवश्य है निशाना तो अब लों बहुत

ही दूर है और वह मन्दगामी बड़ी देर में वहां पहुंच सकेगा आओ तो मैं थोड़ी झपकी ले लूं और सुस्ताने के पीछे एक दम भर में वहां पहुंचूंगा वह मेरे संग क्या चल सकेगा। यह बिचार करके चारों पैर लपेटके खर्राटे भरने लगा।

इतने में कछुवा तो आगे ही बढ़ता जाता था और थोड़े बिलम्ब में निशाने के ऊपर पहुंच गया। पीछे खरहा की जो आंख खुली तो यह न सोचा कि मैं कब से नींद में पड़ा रहा सो उछल कूदकर दौड़ता गया पर जब निशाने के समीप पहुंचा तो देखता क्या है कि कछुवा साहिब वहां खड़े हैं।

जिस बैरी को तुच्छ जाना उस ने जीत लिया। कहते हैं कि गया समय फिर हाथ नहीं आता। जो मनुष्य अपने कामकाज में बना रहता है सो उस से जिस का मन इधर उधर दौड़ रहा है अधिक बढ़ती पायेगा।



३८.—बन्दरों का वर्णन।

यह सब जानते हैं कि बन्दर तो बड़े कौतुकी जन्तु होते हैं। वे अति चतुर और स्याने होते हैं और लोग उन्हें ऐसे तमाशे सिखा सक्ते हैं कि देखनेवाला अति अचंभित हो जाता है। उन का रूप भी कुछ मनुष्य से मिलता है। उन के पांव मनुष्य के पांव के से नहीं बरन उन के हाथों की नाईं होते हैं इस लिये यूरोप के ज्ञानी लोग उन्हें चार हाथवाला जन्तु कहते हैं।



जिस बात के वे किसी के करते देखते हैं वे झट उस की नाईं करने चाहते हैं और इस लिये जो मनुष्य अकारण और किसी के सदृश कुछ काम करता है सो बन्दरजात कहलाता है।

बन्दर कई प्रकार के होते हैं कोई बिन दुम के हैं और उन के बूज़ना कहते हैं। किसी की दुम बड़ी लंबी होती है और मुंह काले होते हैं उन के लंगूर कहते हैं। और इन के छोड़ वह पतली दुमवाले होते हैं जो कि हिन्दुस्तान में बहुत पाये जाते हैं। बूज़ना बड़े होते हैं और कभी छोटे मनुष्य की ऊंचाई के बराबर होते हैं।

अफ्रिका देश में लंगूर बहुत पाये जाते हैं। इन का सिर कुछ कुत्ते के सिर के समान देख पड़ता है। वे बिच्छू आदि कीड़ों के खोज में पत्थरों के उलटा पुलटा देते हैं और जब किसी बिच्छू के पाते तो बड़ी चाह से खाते हैं। वे अति बलवान् और दुष्टस्वभाव होते हैं यहां तक कि मनुष्यों पर भी चढ़ाई

करते हैं। अमरिका के बन्दरों की दुम बहुत लंबी और बलवान् होती है इस को वे डालियों में लिपटा लेते हैं और डाल २ लटकते हुए झूला करते हैं।

हिन्दुस्तान में भी बहुत बन्दर होते हैं और अज्ञान हिन्दू लोग इन का बड़ा आदर बरन इन की पूजा भी करते हैं। उन में यह कथा प्रचलित है कि जब राजा रामचन्द्र ने लंकाद्वीप के राजा रावण पर चढ़ाई किई तब बन्दरों ने उन की बड़ी सहायता किई। लिखा है कि रामचन्द्र ने अपने भाई भरत से कहा कि हनुमान् ने मुझ पर इतनी कृपा किई जिस का भार उतार नहीं सक्ता हूं। हिन्दुओं के बहुत मन्दिरों में हनुमान् की मूर्त्ति रखी हैं और जैसे महादेव की मूर्त्तों पर वैसे ही इन पर भी जल और पान चढ़ाते हैं।

एक समय की बात सुन्ने में आई कि किसी हिन्दू ने एक बन्दर के बिवाह में बहुत से रुपये व्यर्थ उड़ा दिये। बन्दरों की बरन किसी बनाई बस्तु की पूजा करना कभी उचित नहीं हो सक्ती है और जो लोग ऐसे काम करते हैं अपने को बड़े मूर्ख प्रगट कर देते हैं और इस पाप के कारण नरक में उन का दण्ड होगा।



३९.—ईश्वर को प्रसन्न करने के उपाय।

मनुष्य को यह जान्ना उचित है कि परमेश्वर मनुष्य को बहुत ही प्यार करता और उस के चैन और कल्याण के लिये प्रतिदिन उपाय कर रहा है।

जब कि ईश्वर हमारी इतनी चिन्ता करता और हमारी भलाई और मंगल के लिये रात दिन अच्छे से अच्छे उपाय काम में लाता रहता है तो क्या हम को भी यही चिन्ता करनी अवश्य नहीं है कि हम भी उस के लिये क्या कुछ कर सक्ते हैं वा नहीं। अथवा वह किस रीति से हम से प्रसन्न हो सके।

कदाचित् तुम इस बात को सुनके यह पूछोगे कि ईश्वर तो हम से कहीं बड़ा और श्रेष्ठ है हम उस के लिये क्योंकर कुछ कर सक्ते हैं। तो इस का उत्तर लीजिये। ईश्वर के हाथ में तो सब कुछ है और वह सब कुछ कर सक्ता है उस को अवश्य नहीं है कि कोई उस की सहायता करे। तिस पर भी वह यह चाहता है कि हम उस की सेवा करें बरन आप बतलाता है कि हम भी यदि छोटे हैं तौभी उस के लिये ऐसा कुछ कर सक्ते हैं कि जिस से वह प्रसन्न होवे।

जब हम धर्म्मी बन्ने का यत्न करते हैं तब ईश्वर हम से प्रसन्न होता है। वह धर्म्म के सब कर्म्मों से रीझता है और सब कुकर्म्मों से क्रोधित होता है। चाहिये कि हम इस बात को सदा ही स्मरण करें और कभी न भूलें। अब कहो क्या तुम उस के सन्तुष्ट होने के लिये कुछ यत्न तो न करोगे।

सत्य है कि यदि वह तुम्हारी सहायता न करे तो कभी तुम ऐसा कुछ न कर सकोगे जो उस के साम्ने भला ठहरे। उस की सहायता हर समय हम को अवश्य है परन्तु वह हमें सहारा देने चाहता है और यदि हम मांगें तो देवेगा उस का धर्म्मात्मा हमारे

मनों के यहां लों बदल सकेगा कि हम पाप से घिन श्रोर पुण्य से प्रीति करने लगेंगे जैसे कि ईश्वर श्राप करता है श्रोर वैसा करके हम उस के मित्र बनेंगे।



४०.—घबराने श्रोर कुड़कुड़ाने के विषय में ।

एक साहिब ने कई लड़कों से एक समय यह कहा कि मुझे तो तुम्हारे लिये घबराने श्रोर कुड़कुड़ाने के विषय में एक शिक्षा देनी है। यह शिक्षा तो बहुत ही छोटी है पर सदा मन में पालने के योग्य है सो चित्त देके मेरी इस बात को सुनो श्रोर उस को प्रतिदिन काम में लाश्रो ।

शिक्षा यह है कि जो काम तुम से न हो सके उस के विषय में घबराना श्रोर कुड़कुड़ाना निष्फल होगा क्योंकि कितना ही घबराश्रो वह काम न बनेगा। श्रोर जो काम कि तुम से हो सक्ता है उस के ऊपर घबराना श्रोर कुड़कुड़ाना निष्फल है। इन बातों की सन्ती में भला यह है कि तुम जाके उस काम को कर लो ।

भला बेटो जब कि तुम्हारा मन किसी बात के ऊपर घबराने चाहता है तो पहिले पूछो कि क्या यह काम मुझ से हो सक्ता है वा नहीं। यदि हो सक्ता तो जाके करो। जो वह तुम से नहीं हो सक्ता है तो चुपके हो बैठ रहो क्योंकि तुम्हारा बिस्मित होना कुछ काम न श्रायेगा ।

जगत भर में ऐसा कोई नहीं जिस को दुःख श्रोर परीक्षा न होती होय सो मंगलमय होने का मार्ग

यह नहीं कि जिस बस्तु को पा नहीं सक्ते उस की चिन्ता में रहें परन्तु मार्ग यह है कि जो कुछ ईश्वर ने हमें दिया है उसी पर हम सन्तोष करें।

४१.—अंगों के वर्णन में।

ऊपरवाले अंग बांह हाथ और अंगुली हैं। बांहें कन्धों पर धड़ में जड़ी हैं हाथ कलाई पर बांह में और अंगुली गांठों पर हाथ में जड़ी हैं। हाथ का भीतरी भाग हथेली है और मुंदे हुए हाथ को मुट्ठी कहते हैं।

हाथ तो शरीर का विशेष सेवक है और बड़ी अच्छी सेवकाई भी करता है। हाथ को जो काम करना है उस के लिये वह भली भांति से बना है उस में तो बहुत सी छोटी २ गांठें होती हैं उन के कारण से हाथ और अंगुलियां बड़ी सुगमता से चारों ओर घूम सक्ती हैं और यों वे अपना काम भली भांति से कर सक्ती हैं।

नीचले अंग जांघ टंगड़ी पांव और पांव की अंगुलियां हैं। जो गांठ जांघ और टंगड़ी के बीच में है उसे घुटना कहते हैं। टंगड़ी और गोड़ के बीच में टखना होता है। यह नीचेवाले अंग ऊपर-वालों से पोढ़े और बलवान् हैं जिसतें सकल शरीर का भार संभाले रहें और चलने फिरने की सामर्थ्य बनी रहे। ऊपरवाले अंगों में तीस हड्डियां गिन्ने में आती हैं और उतनी ही नीचेवाले अंगों में हैं।

४२.—सिंह श्रार गदहे का दृष्टान्त ।

कथा कहते हैं कि किसी समय में एक गदहे श्रार एक सिंह का संग हुआ। सिंह ने चाहा कि गदहा मेरे संग चले जिसतें मेरे शिकार के जन्तु डर खाके निकल आवें। गदहे को सिंह की संगति से बड़ी मगनता हुई श्रार इस लिये वह फूला न समाता था श्रार ऐसा घमंडी हो गया कि जब कभी अपने संगी गदहों से मिल जाता था तो उन से बातें करने तक न चाहता था।

एक दिन चलते २ उस को कहीं एक गदहा मिल गया जिस की बर्षों से पहचान थी। उस बेचारे ने बड़े आदरसन्मान से उस को प्रणाम किया। तब तो इस ने कान खड़े किये श्रार उस को घुड़की देकर कहा कि तुम कैसे ढीठ हो। तुम हो कौन। मैं तुम को नहीं पहचानता हूं।

उस गदहे ने उत्तर दिया कि भला साहिब आप मुझ को नहीं पहचानते हैं क्या सिंह की संगति में होने से आप भूल गये कि गदहे हैं। सिंह की संगति हुई तो क्या गदहे के गदहे नहीं रहे।

यही दृष्टान्त कमीन लोगों का है। वे अपनी बड़ाई के दिन में अपनी पहिली श्रार कमीन दशा को भूल जाते हैं श्रार अपने को इसी गदहे की नाईं मूर्ख प्रगट करते हैं।

४३.—दूसरों की दृष्टि में प्यारा बनना।

बहुत से ऐसे लड़के देखने में आते हैं कि सब

कोई उन से मित्रता रखते हैं और वे सभों को प्यारे लगते हैं। परन्तु कोई ऐसे भी हैं जिन से कभी कोई प्रसन्न नहीं होता न उन पर प्रीति दिखाया चाहता है। तो इस अन्तर का कारण क्या है। मैं ने एक छोटी सी कथा सुनी जिस के सुन्ने से यह बात खुल जायगी। एक दिन किसी स्त्री ने एक लड़की से पूछा कि प्यारी तुम को हर कोई क्यों प्यार करता है इस का भेद बताओ। लड़की ने कहा मैं क्या बतलाऊं। क्या इस का कारण यह न होगा कि मैं भी हर एक को प्यार करती हूं। इस लड़की का उत्तर कैसा उचित था।

हे लड़को यदि तुम्हारे संगी लड़के तुम को प्यार न करें तो समझ लो कि इस का अपराध तुम्हीं में होगा क्योंकि हो नहीं सक्ता है कि जो सब दूसरों को प्यार करता है सो उन का भी प्रिय न हो जाय। यह बात सकल जगत में देखने में आती है कि जो औरों को प्रिय जानते हैं सब लोग उन से और भी प्रसन्न होते हैं। भलाई भलाई को उत्पन्न करती है और प्रीति से प्रीति उपजती है। इस के बिरुद्ध जो लोग झगड़ा करते और क्रोधित रहते और किसी और की प्रसन्नता वा इच्छा का कुछ बिचार नहीं करते हैं तो और लोग ऐसों को क्योंकर प्यार कर सकेंगे।

मित्रता उत्पन्न करने और सब मनुष्यों की दृष्टि में प्रिय बन्ने का यह विशेष कारण है कि तुम भी उन से मित्रता करो और उन की भलाई की चिन्ता करते रहो। यही वह नवीन आज्ञा है कि हम एक दूसरे को प्यार करें।



४४.—नारियल के पेड़ का वर्णन ।

नारियल के पेड़ का लंबा और पतला और सुन्दर काण्ड होता है । उस के सिर पर लंबे २ पत्तों का जो पर के समान हैं मुकुट सा बना रहता है । नारियल के फल की छाल के ऊपर भूराई और चिकनाई होती है । उस के नीचे बहुत सा चमड़ा खुला रहता है जिस की रगों से रस्सियां और चटाइयां बनती हैं ।

इस के फल का छिलका कड़ा होता है और जब लों नारियल कच्चा रहता है तब लों उस में स्वादिष्ट जल भरा रहता है। और जब गरी पक जाती तो घना श्वेत गूदा उस में से निकलता है वह मिठाई आदि पकवान में पड़ता और उसे निरी भी लोग खाते हैं और उसे सुखाकर और पेरकर लोग तेल भी निकालते हैं। नारियल के पत्तों को लोग बिनकर छप्पर और चटाइयां भी बनाते हैं।

नारियल के पेड़ के रस को जो उस में छेद करके टपका लिया जाता है बारुणी कहते हैं। पहिले वह पीने में मीठी और भली होती है परन्तु जब कुछ काल तक पड़ी रहती है तो वह मादक हो जाती और उस के पीने से नशा होता है और पीनेवालों को बड़ी २ हानि होती है। ताड़ी से लोग अर्क भी बनाते हैं। कोई २ मनुष्य ताड़ी पीकर अपना द्रब्य और अपने शरीर की भलाई और अपने आत्माओं को नष्ट कर देते हैं। भला यह होता कि वे कभी न पीते।

४५.—सब मनुष्य पापी हैं।

जब हमारे पहिले पिता आदम और हमारी पहिली माता हव्वा ने उस फल को खाया जिस का खाना ईश्वर ने उन्हें बर्जा था तो वे लोग बिगड़ गये और ईश्वर की प्रीति उसी काल से उन लोगों के मन से जाती रही। आदम और हव्वा ने ईश्वर की आज्ञा के उल्लंघन के अनन्तर जैसा हृदय उन का हो गया था वैसे ही जन्म से हम लोगों के भी हैं

और ईश्वर से प्रेम रखने के मार्ग को हम भूल बैठे हैं।

कोई अनुचित काम करना पाप है। हम सभों ने बार २ इस प्रकार के काम किये हैं और यों पाप करते ही रहते हैं। ईश्वर ने हम लोगों पर बड़ी दया किई है परन्तु हम लोगों ने जैसा योग्य था वैसा उस को प्यार नहीं किया है। उस ने तो हमें प्रतिदिन की रोटी पहुंचाई परन्तु हम ने उस का गुणानुवाद नहीं किया और हमारी दृष्टि उस की ओर से सदा हटती रहती है।

हम लोगों को उस की प्रार्थना करना अवश्य है परन्तु हम भूल गये। जो बातें हमारे माता पिता ने कहीं उन को हम ने नहीं किया। हम ने बुरी २ बातें कही हैं। जो बात सत्य न थी सो ही हम बोल गये और नाना भांति की बुरी २ चिन्तायें और इच्छायें हमारे मनों में उत्पन्न होती हैं। ये सब पाप की गिन्ती में हैं।

हमारे पाप बड़ी काली घटा के समान हो गये हैं। क्या कोई धूल के सब छोटे २ कणों को जब बड़ी आंधी चलती और बालू को घटा की नाईं उड़ाती गिन सक्ता है। यह तो कधी नहीं हो सक्ता। तो हम जान रखें कि हमारे पाप भी उन से अगणित हैं।

४६.—न्यायी महाराजा की कथा।

किसी समय में पारस के देश का ऐसा महाराजा था जो न्याय करने के लिये अति नामी और प्रसिद्ध

हो गया। एक दिन वह आखेट खेलने को गया और जब भूख उस को अति सताने लगी तो भोजन लाने को आज्ञा दिई। शिकार खेलते २ एक हिरन मारा गया सो सेवक उस के मांस को पकाके साम्ने लाये पर अकस्मात् उस समय सेवकों के पास कुछ लोन न रहा सो सेवकों ने एक लड़के को लोन लाने के लिये एक समीप की बस्ती में भेजा।

महाराजा ने उन को बातें करते सुन लिया सो जब वह लड़का बिदा हुआ उस ने उस को पुकारके कहा कि छोकड़ा लोन के लिये पैसा ले जा और बिन मोल दिये हुए लोन न लाना।

सेवकों में से एक ने बिन्ती किई कि पृथिवीनाथ बिन मोल दिये थोड़ा सा लोन लेने में क्या अपराध है।

महाराजा ने उस को उत्तर दिया कि जितनी बिपत्तें और बुराइयां जो सकल जगत को दुःख देती हैं उन सभों की जड़ ऐसी ही छोटी २ बातों से पड़ी। यदि मैं लोन ले लूं तो कदाचित् मेरे सेवक किसी की गाय ले लेंगे।

देखिये कि महाराजा ने कैसी अच्छी बात कही। बिन आज्ञा पाये किसी की सूई तक को न लेना चाहिये बरन दूसरों की वस्तु की लालसा भी करनी अनुचित है।



४७.—कपोत और चींटी का दृष्टान्त।

एक चींटी प्यास के मारे अति दुःखी हो एक

निर्मल ठण्डे जल के सोते के निकट पानी पीने के गई। पीते २ अचानक उस में गिर पड़ी। उस बेचारी ने बहुतेरा हाथ पांव मार मारकर चाहा कि बचूं परन्तु जल से निकल न सक्ती थी। उस सोते के समीप एक कपोत बैठा हुआ उस की दशा के देख रहा था। जब उस के प्रगट हुआ कि चींटी अब डूब मरेगी तो उस से रहा न गया उस ने झट पट एक झाड़ी की टहनी नोचके उस के पानी में चींटी के निकट डाल दिई और इस के सहारे से वह चींटी सूखे पर निकल आई।

थोड़े दिवस पीछे एक बहेलिये का वहां से जाना हुआ। उस ने कपोत के देखके अपना जाल उस के पकड़ने के फैलाया। कपोत बेचारा न जानता था कि कोई मेरे लिये जाल फैलाता है परन्तु चींटी ने सोचा कि अब मेरा मित्र जाल में फंसा चाहता है सो उस ने बहेलिये की एड़ी पर ऐसा काटा कि वह चोंक पड़ा और कपोत भी डरकर उड़ गया। सत्य है कि जो भलाई बोता है सो भलाई ही लवेगा।

४८.—पृथिवी के खण्ड।

पृथिवी तो दो बड़े अंशों में बिभक्त है। एक को पूर्वीय गोलाई और दूसरे को पश्चिमीय गोलाई कहते हैं। पूर्वीय गोलाई में तीन बड़े खण्ड हैं अर्थात् एशिया यूरोप और अफ्रिका हैं।

पृथिवी का सब से बड़ा खण्ड एशिया है जिस



में हम लोग रहते हैं श्रोर सकल पृथिवी के निवासियों में से आधे से अधिक इस एक खण्ड में होंगे हिन्दुस्तान भी एशिया का एक भाग है। एशिया के पहाड़ पृथिवी भर के पहाड़ों में ऊंचे हैं श्रोर उस में बड़ी लंबी चोड़ी नदियां भी हैं।

यूरोप श्रोर खण्डों से छोटा है परन्तु एशिया को छोड़के श्रोर सभों से उस की आबादी अधिक है। वहां के मनुष्य बड़े बुद्धिमान् श्रोर अति शासन करनेहारे श्रोर पराक्रमी हैं। पृथिवी के खण्डों में अफ्रिका बड़ा गर्म देश है। वहां के निवासी हबशी सीदी इत्यादि हैं।

पश्चिमी गोलाई में उत्तर श्रोर दक्षिण अमरीका हैं। अमरीका बड़ाई में एशिया से थोड़ा ही कम है परन्तु उस में निवासी बहुत कम हैं। इस खण्ड की दशा जो माने एक बड़ा टापू है कोलंबस साहिब ने सन १४९२ ईस्वी में पहिली बार प्रगट कर दिई। पृथिवी भर में सब से बड़ी नदियां अमरीका में पाई जाती हैं।

आष्ट्रेलिया जो एक बड़ा टापू है और पासिफक नामे महासागर में जो द्वीप समुदाय हैं ये दोनों मिलकर पृथिवी के पांचों भाग में हैं और नाम इस का ओशियानिया है।



४९.—लोमड़ी और सारस का दृष्टान्त।

कहते हैं कि एक लोमड़ी के मन में एक समय यह दुष्टता आई कि सारस के साथ कुछ ठट्ठेबाजी करे और उसे हंसी में उड़ावे। यह बिचार कर उस ने उसे बुलाया कि आज आकर हमारे संग भोजन कीजिये। जब सारस नेवते के अनुसार आया तो लोमड़ी ने एक छिछले से थाल में बहुत पतला शोरुवा डालकर उस के आगे रख दिया और बोली कि इसे हम तुम खायें। लोमड़ी तो उसे सहज से चाट सक्ती थी पर बेचारा सारस कुछ भी नहीं कर सक्ता था उस की चोंच तो लंबी और पतली सी होती है तो शोरुवा उस में कब उठ सक्ता था सो उस को कुछ भी प्राप्त न हुआ परन्तु यह बिचार करके कि इस ने दुष्टता से ऐसा उपाय निकाला है चुपका हो रहा।

पीछे उस ने अपने जी में कहा कि मुझ से भी तो अच्छा उपाय हो सक्ता है। सो उस ने लोमड़ी के प्रेम का धन्य मानके कहा कि अब कल आप भी आइये और मेरे संग भोजन खाइये। जब लोमड़ी उस के यहां आई तो सारस ने एक लंबे और तंग मुंह की झारी में मांस के छोटे २ टुकड़े भरे हुए उस के आगे ला रखे और बोला कि महाराज खाइये। सारस ने तो अपने लंबे पतले गले को झारी के मुंह में डालकर अच्छी रीति से भोजन खाया पर लोमड़ी से कुछ भी न बन आया। उस का मुंह तक उस के भीतर न पहुंचा सो वह जो कुछ उस बर्त्तन के ऊपर गिरा गिराया पाया उसी को चाट चूटके रह गई। यों लोमड़ी ने अपनी दुष्टता का फल और बदला भोगा और मारे लाज के वहां से बिदा हुई।

अर्थ यह है कि जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे संग न करें तुम भी उन के संग वैसा न करो।

५०.—सिंह का वर्णन।

सिंह तो पशुओं का राजा कहलाता है क्योंकि वह बली और भयानक होता है और जो जन्तु उस के साम्ने आते प्रायः हर एक को मार डाल सकता है। अपनी पूंछ के केवल झपट्टे से बड़े २ बलवान् मनुष्यों को भूमि पर पटक सकता है। जैसा बिल्ली चूहे को लेकर भाग जाती वैसे ही सहज में सिंह बड़ी बछिया को उठा ले जा सकता है।

सिंह चार पांच फुट ऊंचा और बैल के समान



लंबा होता है। उस का सिर बड़ा होता और उस के गले पर केसर अर्थात् लंबे बाल रहते हैं। जब वह क्रोध में आता तो उस का भयंकर स्वरूप हो जाता है। वह अपने केसर को उठाता और अपने पांजरों को पूंछ से पीटता और उस की आंखों में से आग बरसने लगती है और उस का गर्जना बादल की कड़क के समान होता है। सिंह दिन के समय तो मांद के भीतर पड़ा सोता रहता है और रात्रि को आहार के खोज में निकलता है। जब शिकार साम्ने आता है तब भूमि पर दबक बैठता है और तब बिल्ली की नाईं उस बेचारे पर टूट पड़ता है। हिन्दुस्तान के गुजरात देश में अब लों कहीं २ सिंह पाये जाते हैं।

लिखा है कि दुष्ट आत्मा अर्थात् शैतान गर्जते सिंह के समान इधर उधर फिरता और खोज करता है कि किस मनुष्य को पाऊं और फाड़ डालूं।





५१.—एक धनवान् मूर्ख का दृष्टान्त ।

लिखा है कि किसी धनवान् की भूमि में बहुत कुछ उपजा और उस ने देखा कि अब तो मेरे हाथ बहुत कुछ लगा अब इस को कहां भरूं । भूमि में इतना बहुत कुछ उत्पन्न हुआ है कि रखने के लिये स्थान नहीं रहा तो क्या करूं। सोचते २ एक उपाय सूझ पड़ा कि मैं यह करूंगा कि अपनी पुरानी बखारियां तोड़कर बड़ी २ बनाऊंगा और वहां अपना सब अन्न और अपनी सब संपत्ति रखूंगा और बहुत आनन्द से दिन बिताऊंगा खूब खाऊंगा और सुख बिलास से मन बहलाऊंगा क्योंकि बहुत बर्षों के लिये मेरी बहुत संपत्ति रखी हुई है ।

परन्तु वह इसी सोच और आशा में था कि ईश्वर ने उसे कहा हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जायगा तब जो कुछ तू ने एकट्ठा किया है सो किस का होगा और यह तेरे किस काम आवेगा।

यही दशा उस मनुष्य की होती है जो अपने लिये इस संसार में धन बटोरता है और ईश्वर की ओर धनी नहीं है। हमारे मुक्तिदाता प्रभु यीसू मसीह ने कहा है यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे उस को क्या लाभ होगा। चाहिये कि हर कोई स्वर्गीय धन के प्राप्त करने के लिये चिन्ता और यत्न करे।

५२.—आलस्य के विषय बातचीत।

एक दिन का वर्णन है कि प्यारेलाल और सुन्दर-लाल नामे दो लड़कों की पाठशाला को जाते हुए मार्ग में भेंट हो गई। प्यारेलाल ने कहा भाई सुन्दरलाल कुछ बातचीत करते चलें।

उस ने उत्तर दिया कि भाई प्यारेलाल तुम तो अद्भुत प्रकार के लड़के हो तुम तो पाठशाला में बातचीत तक नहीं करते।

वह बोला कि भाई सुन्दरलाल मैं तो अनुचित नहीं करता हूं। आप ही न्याय कीजिये क्या स्कूल बातचीत करने का स्थान है हम वहां तो बातचीत करने के लिये नहीं जाते वहां तो केवल पढ़ना लिखना सीखने को जाते हैं।

उस ने उत्तर दिया कि प्यारेलाल यह तो सच है किन्तु यदि कुछ थोड़ा सा बक २ भी करें तो क्या अपराध है। सारे दिन पुस्तक ही को देखना मुझे अच्छा नहीं लगता है। मैं तो यों घबराता और बिस्मित हो जाता हूं।

प्यारेलाल ने उत्तर दिया कि इस में सन्देह नहीं। मैं जानता हूं कि आप के यह अच्छा नहीं लगता है पर इस का फल भी देखिये कि आप की कैसी अज्ञानता देख पड़ती है। मौलादाद के तीन ही मास पाठशाला में आये हुए और वह तुम से ऊपर रहता है।

सुन्दरलाल बोला हां पर इस की क्या चिन्ता है। आज ही मैं ते बातचीत करने और खेलने कूदने के छोड़ नहीं सकता हूं। मुझे पढ़ने की कुछ इच्छा नहीं है।

दूसरा बोला हे सुन्दरलाल क्या तुम कुछ दिन में बड़ा होना न चाहोगे।

वह बोला कि पढ़ूं वा न पढ़ूं बड़ा तो अवश्य हूंगा।

प्यारेलाल ने उत्तर दिया बड़े तो हो जाओगे पर कैसी बड़ाई होगी बड़ा गंवार बड़ा अनपढ़। लोग तुम को देखके हंसेंगे और ठट्ठे मारेंगे।

सुन्दरलाल ने उत्तर दिया भला जी क्या चिन्ता है। जो हो सो हो बातें करना और खेलना तो मैं छोड़ता ही नहीं।

प्यारेलाल बोला कि भला भाई जो चाहो सो करो पर इतना जान रखो कि गंवार ही निकलोगे। मैं तो शक्ति भर अपनी पुस्तक छोड़ता नहीं और योंहीं परिश्रम करता रहूंगा कि अपने माता पिता और शिक्षक की दृष्टि में भला लड़का रहूं।

सत्य है कि आलस्य का फल दरिद्रता होती है।



५३.—भोजन श्रोर बिश्राम के विषय में ।

भोजन से हमारा प्रतिपालन होता है श्रोर निद्रा से बिश्राम मिलता श्रोर खोया हुश्रा बल फिर श्रा जाता है। मुख्य पदार्थ जो भोजन में श्राते हैं सो भात रोटी तरकारी मांस मछली इत्यादि हैं। जब मनुष्य रोटी श्रोर मांस मछली को तरकारी के साथ खाता है तो उस का शरीर बलवान् होता है।

जब भोजन की इच्छा पेट में जान पड़ती है तो उस को भूख लगना कहते हैं श्रोर भूख तब श्रधिक होती है जब हम खुले मैदान में श्रधिक चलते फिरते हैं। परिश्रम करने के पीछे भूख भली भांति होती श्रोर हम लोग चाह करके खाते हैं श्रोर हमारे भोजन से श्रधिक लाभ पहुंचता है श्रोर उस का सुस्वाद भी प्रगट होता है। जितना पेट में पच सके उस से श्रधिक जब हम खायें तो उस से हमारा भला न होगा श्रोर जब दिन में बार २ भी खाते हैं तो उस से बल नहीं होता।

जब पानी की इच्छा होती है उस को प्यास लगना कहते हैं। सब से उत्तम पीना निर्मल जल का है। श्रोर चाए श्रोर कहवा जो हम थोड़ा २ पियें तो सुख चैन प्राप्त होता है। बहुत मनुष्यों की यह रीति है कि पानी पीने से श्रप्रसन्न हो जाते श्रोर मदिरा ताड़ी श्रादि मादक बस्तु पीने लगते हैं जिन के पीने का फल यह होता है कि तन श्रोर मन दोनों नष्ट हो जाते हैं। ऐसी बस्तुन को

त्यागना बुद्धिमानी है ऐसा न हो कि हम मद्यपी हो जायें।

निद्रा से माने शरीर को नवीन सामर्थ्य मिलती है। जब हम सो जाते तो कभी २ स्वप्न देखते हैं परन्तु स्वप्न निरर्थक चिन्ता है जो कि मन में उठती है उस से कुछ अर्थ नहीं निकलता।

५४.—अखरोट का दृष्टान्त।

एक दिन दो लड़के एक अखरोट के पेड़ तले मिले जुले खेल रहे थे। इतने में एक अखरोट टूटके भूमि पर गिर पड़ा इन में से एक ने दौड़के उसे उठा लिया। दूसरे ने कहा मुझे दे। यह अखरोट मेरा है क्योंकि मैं ने उस को गिरते हुए देखा। दूसरे ने कहा अरे तेरा कहां से आया। मैं ने भूमि पर से उसे उठा लिया। इधर ला मेरा अखरोट मुझे दे। निदान यह दोनों लड़ पड़े।

उन का झगड़ा यों होने लगा कि इतने में उन दोनों से बड़ा एक लड़का वहां आ पड़ा। उन को बखेड़ा करते देखके उस ने पूछा क्यों लड़को लड़ते क्यों हो। एक ने अखरोट का सारा वृत्तान्त उसे कह सुनाया। स्याने लड़के ने कहा कि मुझे दे तो दो। मैं अभी झगड़े का न्याय करूंगा। यह कहके उस ने अखरोट लेके उस को दो टुकड़े कर डाले। छिलके का एक टुकड़ा एक के हाथ में रखके बोला कि यह तुम्हारा है क्योंकि तुम ने अखरोट को गिरते देखा। और दूसरा टुकड़ा दूसरे के हाथ में

रखके बोला कि यह तुम्हारा है क्योंकि तुम ने उसे उठा लिया। और गूदे को अपने मुंह में डालके बोला कि यह मेरा है क्योंकि मैं ने झगड़ा निबटाया है। अब तो छुट्टी हुई।

यही दशा उन लोगों की होती है जो लड़ते झगड़ते और कचहरी में नालिशी होते हैं। वहां इतने रुपये उड़ा दिये जाते हैं कि संपत्ति नहीं रहती किन्तु छिलका ही छिलका लड़नेवाले के हाथ में रह जाता है। लाभ हुआ क्या खाक। लड़ाई झगड़े का अन्त बुरा होता है और हाथ कुछ नहीं चढ़ता तो झगड़े से चैाकस रहना भला है।

५५.—एक अंधे दरिद्री का वृत्तान्त।

आंख परमेश्वर की दिई हुई कैसा बड़ा बरदान होता है। इसी से हम संसार की सारी बस्तुओं को देख सकते हैं और उन की सुन्दरता से मगन होते हैं। आंखों का मिट जाना वा अंधलापन होना बड़े दुःख का कारण होता है। अंधे बेचारे बेबश हो द्वार २ भीख मांगते फिरते हैं और दूसरा मनुष्य उन का हाथ पकड़के उन को लिये फिरता है। कभी २ बेघरके होते और जंगल मैदान में मारे फिरते और भीख ही में जीवन को ब्यतीत करते हैं। ऐसों की अवश्य सहायता करनी उचित है। और उन को भीख देने से मुंह न मोड़ना चाहिये यदि उन के रहने के लिये स्थान स्थापन न हो।

यद्यपि बीमारों और भूखों और अंधों और बूढ़ों

और औरों को जिन्हें परमेश्वर ने बल नहीं दिया उन की सहायता करनी अवश्य है परन्तु आलसी और बलवान् भिखारियों को भीख देना अनुचित है। अंधे लंगड़े लूले तो अपने लिये कुछ कर नहीं सकते हैं और यदि हम उन पर दया न करें तो दुःखी होंगे परन्तु उन बलवानों का बेकाम फिरना बुरी बात है। परमेश्वर ने कहा है कि जो काम करने नहीं चाहता न चाहिये कि वह भोजन करे।

पर किसी भांति से यह मत समझो कि भीख देना वा दरिद्रियों को बांटना पुण्य की बात है। हमारा कोई कर्म्म परमेश्वर के आगे पुण्य नहीं ठहर सकता अर्थात् हम ऐसा कोई कर्म्म नहीं कर सकते कि जिस से मुक्ति का आसरा हो। धर्म्म हमारे हाथ के किये से मोल नहीं लिया जाता है। जो बचेगा सो केवल प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा बचेगा।

५६.—गुड़ और चीनी का वृत्तान्त।

ऊख अर्थात् गन्ना एक प्रकार का गिरहदार सरकंडा है कि जिस की चीनी खांड़ राब गुड़ और नाना प्रकार की मिठाइयां बनती हैं। वह छः फुट से लेके बीस फुट तक ऊंचा हो जाता है। उस के पोढ़ों को काटके भूमि में रख देते हैं और इन्हीं से ऊख उपजती है और खेत में बर्ष भर बरन कभी २ तेरह चौदह महीने तक खड़ी रहती है। इन को

काटके उस के पत्ते नोच डालते और अगोले काट लेते हैं और ऊख के गट्ठे बांधके पेरने को ले जाते हैं।



इन का जो रस पेरने से निकलता है उसे घड़ों में बटोर लेते हैं और बड़े २ लोहे के कड़ाहों में डालके आग पर यहां लों पकाते हैं कि बहुत गाढ़ा राब हो जाता है और जब वह ठण्डा हो जाता है तो उस के दाने छितर जाते हैं। जो मीठा पानी इस में निचुड़कर निकल आता है उस को राब कहते हैं इस कच्चे खांड़ को जब निर्मल कर लेते हैं तो अति उत्तम और श्वेत चीनी मिस्री आदि बन जाती हैं।

ऊख को छोड़ कई और पेड़ हैं जिन के मीठे रस से चीनी बनती है हिन्दुस्तान में खजूर के पेड़ के रस से बहुत राब बनता है। परमेश्वर के नाम का उन सब उत्तम बस्तुओं के लिये जिन्हें हमारे सुख चैन के लिये उस ने उत्पन्न किया है धन्यबाद हो।

५७.—ईश्वर का पुत्र ।

जब परमेश्वर ने हमारे पहिले माता पिता आदम और हव्वा के उत्पन्न किया ते उन से कह दिया कि यदि तुम मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके पाप करोगे तो निश्चय दण्ड पाओगे । तुम को इस संसार में दुःख और कष्ट उठाना होगा तुम्हारे शरीर सड़के और गलके मिट्टी में मिल जायेंगे और तुम्हारे आत्मा स्वर्ग के आनन्द में पैठने न पायेंगे।

हमारे आदि माता पिता आदम और हव्वा को ईश्वर ने भली भांति समझाया तिस पर भी उन्हों ने ईश्वर का कहना न माना बरन उस की आज्ञा के बिरुद्ध करके पापी हो गये और परमेश्वर का बचन मिथ्या नहीं हो सक्ता है । मनुष्य पाप के कारण से अवश्य दण्ड पावेंगे । जो पाप करते हैं सो निश्चय दुःख भोगेंगे और उन के शरीर का बिनाश होगा । परन्तु ईश्वर ने चाहा कि मनुष्य के आत्मा को नरककुण्ड में जाने से बचावे इस लिये उस ने कहा कि मेरा प्यारा पुत्र प्रभु यीशु मसीह संसार में जाकर और मनुष्य के समान उस में रहकर आदम और उस के संतान की सन्ती मरे ।

यह करने के लिये ईश्वर का पुत्र अति प्रसन्न हुआ और प्रतिज्ञा किई कि मैं आनन्द से मनुष्यों के प्राणों के बदले प्राण दूंगा । उस ने अपने पिता से कहा कि देखो मैं जाता हूं तेरी इच्छा पूरी करने को मैं प्रसन्न हूं ।

हम को उचित है कि इस मुक्ति के उपाय के लिये ईश्वर की स्तुति करें और कहें कि हे पिता हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू ने हम पर अति प्रीति करके अपना एकलौता पुत्र हमारे लिये दे दिया। हमें मसीह की इस बड़ी प्रीति को भूलना न चाहिये बरन सदा उस का धन्य मानें कि हे प्रभु यीशु हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू ने हम को इतना प्यार किया कि हमारे लिये अवतार लिया और हमारी सन्ती अपना रुधिर बहाया।

५८.—घूंसे के बदले चूमा।

किसी छोटे लड़के ने जो पांच बरस का था एक बेर जैसा कि बहुत निर्दय भाई करते हैं अपनी बहिन के सिर पर खींचके एक ऐसा घूंसा मारा कि वह बेचारी लड़की तिलमिला गई। उस लड़की ने भी क्रोध करके चाहा कि उस को थप्पड़ मारे पर ज्यों उस ने हाथ उठाया ही था त्यों शिक्षक ने जो यह बात देख रहा था कहा कि बेटी भैया को न मारना बरन उस को प्यार करके चूम लो।

बहिन ने हाथ नीचे करके सोचा कि अजी इस ने तो मुझे मारा है मैं उसे क्यों न मारूं। तब शिक्षक की ओर ताकने लगी कि मानो उस ने उस की बात को बूझ नहीं लिया था। वह इस सन्देह में थी कि शिक्षक ने फिर कहा कि मेरी प्यारी भला होगा कि तुम अपने भाई को चूम लो।

तब तो वह छोटी लड़की अपने भाई के गले में

लिपटकर उसे चूमने लगी। भाई को यह स्वप्न में भी न सूझा था कि घूंसे के बदले मेरी बहिन मुझे प्रेम करेगी सो उस का जी भर आया और अपने अपराध से लज्जित होके फूट फूटके रोने लगा। उस की बहिन अपने नन्हे २ हाथों से धीरे २ उस के आंसू पोंछती और बोलती जाती थी कि भैया मत रो मुझे बहुत चोट नहीं लगी। परन्तु वह ऐसा रोया कि उस की हिचकियां लग गईं। उस की बहिन के प्यार ने उस के कठोर मन को तोड़ डाला और इस में कुछ आश्चर्य्य नहीं क्योंकि ऐसी अवस्था में कौन नहीं रोता।

प्रभु यीशु मसीह कहते हैं कि अपने शत्रुओं को प्यार करो। जो तुम्हें स्राप दें उन्हें आशीष देओ और जो तुम से घिन करते उन का भला करो। क्या ही अच्छी बात होती कि सब लोग ऐसा ही करते।



५९.—एक गिद्ध और कौवा का दृष्टान्त।

किसी समय में एक बड़ा सा गिद्ध पहाड़ की चोटी पर से अपने खोंते से टूटा और एक भेड़ी के बच्चे

के। अपने नखों में दबाकर उड़ गया और उस के। अपने बच्चों के आगे खाने के। रख दिया।

एक कौवा उस स्थान पर बैठा हुआ इस बात के। देख रहा था। वह बोल उठा भला हुआ। गिद्ध ते। बड़ा काम कर गया। आओ मैं ते। परीक्षा करूं मैं जानता हूं कि मैं भी ते। ऐसा कर सकूंगा। इस गर्बित बिचार से वह एक पेड़ पर से एक भेड़ के बच्चे पर टूटा और उस के ऊन में अपने नखों के। गाड़ दिया पर जब उस के। लेके उड़ जाने चाहा ते। अद्भुत सन्देह में पड़ गया। उस में भला इतनी सामर्थ्य कहां थी कि इतना भारी बोझ लेके उड़ सके। बरन उस के नख भी ऊन में ऐसे बझ गये कि निकल न सके। तब ते। बड़ी बिपत्ति में पड़ा और कांव २ करने लगा और चाहा कि निकल भागे।

उस भेड़ के गड़रिये ने यह दशा देखके कौवे के। दौड़कर पकड़ लिया और अपने बच्चों के। देके कहा कि लेओ इस से खेलो। लड़कों ने पूछा कि पिता यह कौन सी चिड़िया है। उस ने कहा कि बच्चो अब ते। यह समझता था कि मैं गिद्ध हूं किन्तु कौवे का कौवा प्रगट हुआ है।

फल यह है कि मनुष्य के। उचित है कि हर काम के करने से पहिले सोच समझके देख ले कि जिस काम में हाथ डालता हूं उस के पूरा करने की सामर्थ्य और शक्ति मुझ में है वा नहीं। बिन समझे बूझे काम उठाना बड़ी मूर्खता है।



६०.—महासागर का वर्णन ।

भूमण्डल की तीन चौथाई को समुद्र छेंके है और केवल एक चौथाई सूखा है। जल के बड़े बड़े समूहों को सागर और समुद्र कहते हैं। सूर्य्य की गर्मी सागर के जल को भाफ के आकार में ऊपर खींचती है उसी से बादल बनते और यह पृथिवी के ऊपर जाके बरसते और उसे हरित कर देते हैं। समुद्र के पानी को सुखाने से मनुष्य के कार्य्य के लिये बहुत सा लोन बनता है और समुद्र में नाना भांति की मछलियां रहती हैं जिन के खाने में बहुत देश के लोग अति प्रसन्न होते हैं।

जो हम लोग समुद्र के तट पर थोड़े काल तक खड़े रहते तो देखते कि जल हमारी ओर आ आकर चढ़ता जाता अथवा दूर होके घटता चला जाता है इस चढ़ाव और उतार को ज्वारभाठा कहते हैं और बारह घंटे में एक बेर ज्वारभाठा आता जाता है अर्थात् छः घंटे लों चढ़ाव और छः घंटे लों उतार रहता है दिन रात योंहीं आता जाता है। और परमेश्वर के इस उपाय से एक बड़ा लाभ यह निकलता है कि समुद्र का जल बिगड़ने नहीं पाता है किन्तु फरछा रहता है।

पृथिवी के जल के पांच महासागर हैं और उन्हीं की छोटी शाखा अनेक हैं। एशिया और अमेरिका के बीच में पास्फिक महासागर है। हिन्द का महासागर एशिया के दक्षिण में है। अटलांटिक महासागर की एक ओर अमेरिका और दूसरी ओर यूरप और

अफ्रिका हैं । उत्तर हिमसागर उत्तर केंद्र की ओर-पास है और दक्षिण हिमसागर दक्षिण केंद्र को घेरता है । यूरप और अफ्रिका के बीच में रूम समुद्र है जिस को मेडिटरेनियन कहते हैं ।



६१.—लड़के और बाघ का दृष्टान्त ।

किसी जंगल में एक झुण्ड भेड़ी का चरता था। उस की रखवाली के लिये एक लड़का भेजा गया था । उस जंगल में बाघ भी रहते थे इस डर से लोगों ने जो उस स्थान के समीप कामकाज करते थे उस को यह कह दिया था कि यदि कभी बाघ दिखाई पड़े तो चिल्लाओ तो हम तुम्हारी सहायता के लिये दौड़े आवेंगे ।

इस लड़के के मन में यह दुष्टता आई कि आओ तो देखें ये लोग बचाने को आयेंगे वा नहीं । यह बुराई सोचकर कुछ हानि का बिचार न किया परन्तु ठट्ठा करके चिल्ला उठा था कि दौड़ो २ बाघ

आया बाघ आया जब कि वहां कोई बाघ न देख पड़ता था।

लोग उस का शब्द सुनके दौड़ पड़े परन्तु बाघ का कुछ नाम वा चिन्ह न पाकर वे बेचारे बहुत व्याकुल हुए। उन्हों ने सोचा कि यह तो हमें ठट्ठे में उड़ाता है हम को निर्लाभ दुःख हुआ है यह हमारे काम का हरजा अकारण करता है। जब यह बात उन के मन में पैठ गई तो वे निश्चिन्त हो गये और उस के कहने को कुछ भी मन में न लाये।

किन्तु पीछे को ऐसा हुआ कि एक दिन बाघ सचमुच आ पहुंचा और झुण्ड पर टूटा और लड़का फिर चिल्लाने लगा कि बाघ रे बाघ रे। परन्तु कोई मनुष्य उस की सहायता को न आया। वे समझे कि यह ठट्ठेबाज़ी कर रहा है। यह वृथा ही चिल्लाता और सहायता मांगता रहा क्योंकि कोई उसे सहायता देने को नहीं गया और बाघ भेड़ों पर झपटा और उन में से बहुतेरी मार डालीं।

शिक्षा यह है कि झूठ बोलना बुरी बात है। कभी ठट्ठे में भी झूठ न बोलना चाहिये क्योंकि यदि झूठे लोग सत्य भी बोलें तो कोई उन की नहीं पतियाता। कहावत है कि सांच को आंच नहीं।



६२.—उकाब के विषय में।

महागिद्ध जिस को उकाब कहते हैं सो पक्षियों का राजा भी कहलाता है। वह अनेक प्रकार का होता है परन्तु सब से बड़ा और बलवान् सुबर्णी

उक़ाब है इस लिये कि उस के पंख सुनहरे रंग के होते हैं। जब वह खड़ा होता तो तीन फुट ऊंचा होता है और जब अपने पंख उड़ने को फैलाता है तो उस का लंबान सात फुट होता है।



उस की चोंच सींग सी टेढ़ी और बहुत पोढ़ी होती है। उस के पर धूंमले रंग के होते हैं और टंगड़ियों में चंगुल तक पर रहते हैं। उस के नख बहुत चोखे होते हैं और उन से वह गहके पकड़ सकता है। उक़ाब अपना घोंसला कहीं एकान्त में पहाड़ की चोटी पर अथवा ऊंचे कड़ारे पर बनाता है। वह उसे वृक्षों की डालियों और लकड़ियों से बनाता और उन के भीतर सरहरी बिछा देता है।

सब चिड़ियों में उक़ाब बहुत ऊंचा उड़ता और उस की अति तीव्र दृष्टि होती है। वह जब आकाश में बहुत ही ऊंचा हो तब अपने आखेट को देख सकता है और उस पर बाण के समान टूटता है। वह बट और सारस और खरहा और मेम्ने और बकरी के बच्चे तक को उठा ले जाता है बरन यह

भयानक पक्षी कभी २ लड़कों को भी उठाकर उड़ जाता है। यह बात ज्ञात हुई है कि कोई २ उक़ाब सौ बर्ष से अधिक जीता है।



६३.—प्रभु यीशु मसीह का जन्म।

जब इस संसार को उत्पन्न किये हुए चार सहस्र वर्ष बीत चुके थे और आदम और हव्वा को मरे हुए तीन सहस्र वर्ष से अधिक हो गये थे और संसार मनुष्यों से भर गया था तब ईश्वर ने अपने प्यारे पुत्र को इस संसार में भेजा। और ईश्वर ने यह चाहा कि मेरा पुत्र पहिले छोटा सा बच्चा बने क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति पहिले छोटा बच्चा रहता है। ईश्वर ने अपने बेटे को भेजा कि मरियम नामक एक दीन स्त्री का बालक होवे। उस के कोई बालक न था। वह अच्छी स्त्री थी और ईश्वर को प्यार करती थी।

मरियम के पति का नाम यूसुफ था। वह भी धर्म्मी मनुष्य था और मरियम पर बहुत दया रखता

था। यूसुफ यीशु मसीह का पिता न था क्योंकि उस ने धर्म्मात्मा की सहायता से अवतार लिया।

एक बेर जब मरियम यहूदिया के बैतुलहम नामे छोटे नगर में थी तब ईश्वर ने उसे बालक दिया। उस समय यूसुफ और मरियम गोशाला में टिके थे क्योंकि बस्ती और सराय में उन के लिये स्थान न रहा। जब मसीह का जन्म हुआ तो मरियम ने उस को एक चरनी में रख दिया क्योंकि वे लोग यात्रा करते वहां आये थे। मरियम ने जाना कि मेरा बच्चा यद्यपि दूसरे छोटे लड़कों के समान देख पड़ता है तथापि ईश्वर का पुत्र है। मरियम से कहा गया था कि जब तुम को बालक मिले तो उस का नाम यीशु रखियो। यीशु पद का अर्थ निस्तारक है।

यीशु का मन और लड़कों के चित्त की नाईं बुरा न था किन्तु बहुत सीधा और प्रेमी था। वह पाप करने को न जानता था। जो कुछ यूसुफ और मरियम उसे कहते सो सब वह मान लेता था और ईश्वर के ध्यान से प्रसन्न रहता था। उस का पिता ईश्वर उसे बहुत चाहता था और सब कोई उसे प्यार करते थे इस लिये कि वह अति सूधा और दयालु था और ज्यों २ वह बढ़ता गया त्यों २ लोग उस का यश गाते थे।





६४.—कामकाजों का वर्णन ।

मनुष्य को भोजन बस्त्र और घर आदि पदार्थों के प्राप्त करने के लिये काम करना आवश्यक होता है बिन जीवनोपाय किये जो बस्तु हम चाहते हैं सो हाथ नहीं आती हैं। यह भी देख पड़ता है कि कामकाज चाहे कोई हो परन्तु एकाएकी आ नहीं जाता है किन्तु सीखते २ आता है। जो मनुष्य चित्त लगाकर और बिलम्ब लों किसी काम को करता है वह धीरे २ उस में अति प्रवीण हो जाता है। इस लिये कार्य्य सीखने का उत्तम उपाय यह है कि मनुष्य किसी उद्यम में लगे रहें।

उद्यम नाना प्रकार के हैं। किसान के यत्न से अन्न उत्पन्न होता है। रोटीवाला वा रसोइया रोटी पकाता है। मांसिक मांस को बेंचता है। मछुवे मछली पकड़ते हैं। जुलाहे कपड़े बुनते हैं। दर्जी कपड़े सीते हैं। चमार जूतियां बनाते हैं। राज मिस्तरी घर उठाते हैं। बढ़ई लकड़ी की सामग्री

तैयार करते हैं। लुहार ताले और कील कांटे बनाते हैं। बनियों के कारण लोग बड़े कष्ट से बचते हैं क्योंकि बणिज और व्यापार के द्वारा और २ देशों से वे नाना प्रकार की बस्तु लाके रखते हैं।

इन को छोड़ और भी बहुत से उद्यम हैं जिन से बहुतों को लाभ पहुंचता है। शिक्षक लड़कों को ज्ञान सिखाते हैं। उपदेशक धर्म्म की बातें सुनाते हैं। वैद्य रोगियों को औषधि देते हैं। ग्रन्थकर्त्ता पुस्तकें लिखते हैं। और छापेवाले पुस्तकों को छापते हैं।

और इन नाना प्रकार के कामों के द्वारा से मनुष्य एक दूसरे को सहायता देते हैं। किसान को जुलाहे का प्रयोजन होता है और जुलाहे को किसान का। मनुष्य को उचित है कि परिश्रम करके एक दूसरे को लाभ पहुंचाये। बेकाम बैठने से लाज को छोड़ और कुछ हाथ नहीं आता है। जो आलसी होके यत्न करने को तुच्छ जानता है सो नाना प्रकार की बुराइयां करना सीखता है।



६५.—लड़के और अमरूद का वर्णन।

एक दिन का वृत्तान्त है कि एक मनुष्य अमरूद का एक टोकरा सिर पर रखे हुए बाज़ार में बेंचने के लिये जाता था। अचानक उस में से दस बारह अमरूद लुढ़क पड़े परन्तु वह न जानता था कि मेरे फलों में से कुछ गिर गये हैं। उस के पीछे एक लड़का चला आता था। उस ने अमरूद गिरते देख उस

मनुष्य के पुकारके कहा मियां ठहर जाओ तुम्हारे अमरूद गिर गये हैं।

यह उस लड़के की बात सुनकर ठहर गया और लड़के ने फल उठाके उस के दे दिये और उस मनुष्य ने कहा कि लड़के तुम ने मुझ पर बड़ी दया किई से तुम इस में से सब से बड़ा अमरूद अपने लिये निकाल लो मैं तुम्हारी सचाई से बहुत प्रसन्न हूं।

जब वह लड़का अमरूद लेके चला तो एक दूसरा लड़का उस के पास आया और बोला तुम तो बड़े मूर्ख हो। सब अमरूद जो गिरे क्यों न रख लिये। उस के क्यों दे दिये। यदि तुम सब के रख लेते तो मुझे भी दे एक मिल जाते।

उस ने उत्तर दिया कि भाई यदि तुम के अमरूद की इच्छा है तो यह ले लो यह मेरा है और मुझे इस के देने का अधिकार है। यदि मैं उस के अमरूद दबा रखता और उस में से तुम के देता तो मैं चोर ठहरता। मैं दीन हीन तो हूं इस में सन्देह नहीं परन्तु मुझे अपनी भलमन्सी का अधिक बिचार है। मैं किसी रीति से यह करने नहीं चाहता हूं जिस से मेरी बदनामी हो जाय।

६६.—घरों का वर्णन।

घर कई भांति के होते हैं। बहुत लोग डेरों में रहते हैं जिन के जब चाहते झटपट गिरा देते हैं और जब चाहें खड़ा कर सकते हैं। बहुतेरे कंगाल बेचारे पत्तों की झोंपड़ी बनाकर उस में रहते हैं

और २ भी बहुत से लोग अपने लिये मिट्टी के घर बनाकर फूस से छा लेते हैं। अच्छे मकान ईंट और पत्थर से बनाते हैं और उन से भी अच्छे राजभवन कहलाते हैं।

घर के नीचे का भाग नेव और ऊपर का भाग छत कहलाता है। छत की टेक वा उस का सहारा भीतों पर होता है। घर में से भीतर बाहर पैठने निकलने के लिये द्वार होते हैं। खिड़कियों के द्वारा प्रकाश और बयार आती जाती है। बड़े २ घरों में बहुत सी कोठरियां होती हैं किसी में लोग बैठते हैं किसी में सोते हैं किसी में बाहरवालों को बैठाते हैं और किसी में कुछ और किसी में कुछ करते हैं और इसी रीति ऐसे घरों के रहनेवालों को बड़ा बिश्राम मिलता है।

घरों को भूमि से ऊंचे बनाना चाहिये। जो घर नीचे पर होते हैं जहां कि गीलाई अधिक है उन में रहने से लोग बहुधा रोगी हो जाया करते हैं। उन में अधिक खिड़कियां रखने से लाभ यह है कि प्रकाश और बयार से लोग अधिक भले चंगे रहते हैं। घर को निर्मल और शुद्ध भी रखना चाहिये। उस के समीप कूड़ा कर्कट बटोर रखना उचित नहीं है क्योंकि उस से रोग का डर रहता है। यदि फूल घरों के आगे लगाये जावें तो घर की बड़ी शोभा हो जाती है और मन मगन रहता है।



६७.—प्रभु यीशु मसीह की क्रिया ।

प्रभु यीशु मसीह जब लों कि तीस बर्ष का न हुआ था तब लों गलील नामे देश के नासरत नगर में रहता था। उस समय में उस ने लोगों को शिक्षा करने और अद्भुत कर्म्म दिखाकर लोगों से इस बात का प्रमाण करने लगा कि मैं ईश्वर का पुत्र हूं।

वह नगर २ और गांव २ में उपदेश देने और भलाई करने जाया करता था। वह लोगों के घरों में और मार्ग के तट पर और पहाड़ के ऊपर और समुद्र के तीर मनुष्यों को मंगलसमाचार की बातें सुनाता रहा और कभी २ एकान्त स्थल में रात भर अपने पिता की आराधना में लगा रहता था।

वह रोगियों को चंगा करता कोढ़ियों के कोढ़ को दूर करता अन्धों की आंखें खोलता गूंगों की जीभ और बहिरों के कान खोलता और लंगड़ों को हिरण के समान चलने का पराक्रम देता था कि वे कूदते फांदते हुए ईश्वर की बड़ाई करते थे। जंगल में सहस्त्रों को थोड़ी सी रोटी और मछलियों से खिला-कर उन्हें तृप्त किया। उस ने मृतकों को जिलाया भूतों को निकाल दिया समुद्र में हिलकोरे उठते समय उस ने वायु और लहरों से कहा कि शांत और धीमे हो जाओ और झटपट शांति हो गई।

पाप का चिन्ह अथवा कलंक उस में उस के बड़े २ शत्रुओं से भी नहीं पाया गया। उस ने हम लोगों के लिये ईश्वर की व्यवस्था को माना। उस का हृदय प्रीति से भरा था। जब वह लोगों को बिन चरवाहे

की भेड़ों के समान भटकते देखता तो उस के हृदय में करुणा उठती थी अपने मित्र लाजर की समाधि पर जाके रोया और उन लोगों के निमित्त जो मुक्ति के लिये उस के निकट नहीं आये उस की आंखों से आंसू की धारा बही।

६८.—इंगलिस्तान का वर्णन।

उस बड़े टापू का जो यूरप की पश्चिम ओर है इंगलिस्तान दक्षिणी भाग है। यहां से तो वह उत्तर पश्चिम की ओर है और यदि कोई मनुष्य बंबई से सीधा वहां को जाने चाहे तो अग्निबोट में तीन सप्ताह चलकर उस देश में पहुंच सकता है। उस टापू की उत्तर सीमा में स्काटलंड देश है और समुद्र में थोड़ी दूर पश्चिम की ओर ऐरलंड नामे दूसरा टापू है जो बड़ाई में लंका से कुछ अधिक है।

इंगलिस्तान बहुत रमणीक और उपजाऊ देश है। कहीं २ वहां छोटी पहाड़ियां तो हैं पर बहुत ऊंचे पहाड़ जैसे इस देश में हैं वहां नहीं हैं। वहां हिन्दुस्तान की सी गर्मी भी नहीं होती है। बरसात के लिये वहां कोई विशेष ऋतु नहीं है बरन बारहों महीने कभी २ पानी गिरा करता है और घास सदा हरी रहती है। जाड़े में बहुत पेड़ों की पत्तियां गिर जाती हैं और भूमि बर्फ से छिप जाती है। कम गर्मी के कारण से धान उस देश में अच्छी रीति से उत्पन्न नहीं होता न खजूर न ताड़ न केले न आम के पेड़ होते हैं किन्तु गेहूं और आलू और

नाना भांति के अच्छे २ फल बहुतायत से वहां फलते हैं।

उस देश में सिंह और भालू और भेड़िये भी नहीं मिलते। वहां बिच्छू भी नहीं होता और सांप कम और छोटे होते हैं। वहां की भेड़ बकरी और गाय बैल और घोड़े बहुत श्रेष्ठ पाये जाते हैं। जैसे हिन्दू बैलों से गाड़ी खिंचवाते वैसे अंग्रेज़ कम करते परन्तु घोड़ों को अधिक काम में लाते हैं।

अंग्रेज़ों के भोजन में रोटी और आलू और मांस मछली अधिक होता है।

इंगलिस्तान में पाठशाले बहुतायत से हैं और उस के निवासी बहुत करके पढ़ना लिखना जानते हैं। उस देश का मुख्य नगर लण्डन नामे है वह पृथिवी के और सब नगरों से बड़ा है। इंगलिस्तान का राज्य विक्टोरिया नामे महारानी के अधिकार में है और वह हिन्दुस्तान की महारानी भी है।



६९.—एक चतुर उल्लू का वर्णन।

कहते हैं कि एक उल्लू पेड़ पर बैठा हुआ अपनी

बुद्धिमानी के उमंग में अपने को अपार ठहराके कहता था कि देखो तो मनुष्य कैसे अज्ञान होते हैं। वे सूरज के संग उठते हैं और दिन भर काम किया करते हैं और यह नहीं जानते हैं कि सूरज इस लिये निकलता है कि हम सब सो जायें। मुझे तो इस बात का बड़ा आश्चर्य्य होता है क्योंकि वह रातही को मेरा हू हू करना सुनते हैं और यह बिचार नहीं करते कि यदि रात का समय कामकाज के लिये भला न होता तो मैं रात को क्यों निकलता। फिर दिन को चूहे तो मिलते ही नहीं और मनुष्य बिन चूहों के क्या कर सकते हैं। मैं ने तो एक मोटा चूहा देख पाया मैं उसे रात को खा लूंगा क्योंकि रात की अंधेरी में वह मुझे देख न सकेगा।

वह चूहा जो बैठा हुआ उस उल्लू की बातें सुन रहा था सोचने लगा कि अहा हा यह मेरे ही खाने की चिन्ता में लगा होगा भला तो मैं दिन ही को कुछ ढूंढ़ ढांढ़के खा पी लूंगा और रात को बिल में पड़ा रहूंगा देखूं तो यह उल्लू क्या करेगा।

चूहे का यह उपाय चल गया और उल्लू भूखाही रह गया सत्य है कि अपना यश गाना और अपनी बुद्धिमानी प्रगट करना लाज का कारण ठहरता है।

७०.—प्रभु योशु मसीह की मृत्यु का वर्णन।

धर्म्मियों की बातें अच्छी होती हैं और उन के काम भी भले और शुद्ध हैं और अधर्म्मी की बातें बुरी और उन के कर्म्म अशुद्ध हैं। भलाई और

बुराई में इतनी बिरुद्धता है कि अधर्म्मी लोग धर्म्मियों को प्यार नहीं करते हैं। प्रभु यीशु मसीह के सब बचन ठीक ओर उस के सब काम उत्तम थे सो दुष्ट लोगों को उस के धर्म्ममय काम बहुत अप्रसन्न लगे ओर उन से घिन करके उन्हों ने चाहा कि उसे मार डालें।



एक दिन रात के समय उन्हों ने उस को पकड़के बांधा। यीशु ने उन्हें ऐसा करने दिया क्योंकि संसार में इसी लिये वह आया था कि लोगों के पापों के लिये मर जाय। उन दुष्टों ने यीशु से ठट्ठा करने को एक अच्छा बस्त्र पहिनाया जिस से कि राजा के समान देख पड़े।

उन्हों ने कांटों का मुकुट बनाके उस के सिर पर रखा ओर राजदण्ड की सन्ती उस के हाथ में एक नर्कट पकड़ा दिया ओर तब यह बहाना करके कि हम आप की आराधना करते हैं उस को दण्डवत करने लगे। उन्हों ने उस के मुंह पर थूका भी ओर नर्कट से उस के सिर में मारा भी। इस के पीछे

उन्हों ने उस को कोड़े मारे और उस को पकड़के क्या किया कि उसे क्रूस पर लगाकर और हाथ पांव कीलों से ठोंककर टांग दिया और वह लटका हुआ वहीं बड़े दुःख क्लेश से मर गया। तौभी प्रभु यीशु मसीह मरते २ उन निर्दय मनुष्यों के लिये यही प्रार्थना करता था कि हे पिता उन को क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं। तब अपना प्राण ईश्वर को सौंप दिया।

जब मसीह का प्राण शरीर से निकल गया उस समय सूर्य्य पर अंधेरा छा गया और पृथिवी डग-मगा उठी ऐसा कि देखनेवाले कहने लगे कि सचमुच ईश्वर का पुत्र था। शरीर उस का क़बर में गाड़ दिया गया परन्तु वह तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा और चालीस दिन के पीछे लोगों के देखते २ स्वर्ग पर चला गया। वह अब तक वहां बिराजमान है और फिर कभी न मरेगा। वह सदा लों जीता है और अपने लोगों के लिये बिन्ती करता है।



७१.—छिपकलियों का वर्णन।

छिपकलियां अनेक प्रकार की होती हैं। कितनी घरों में रहतीं और कीड़ों को खाती हैं जब कोई

कीड़ा उन को दृष्टि पड़ता है तो वे दबी हुई उस को देखा करती हैं और जब उस को अचेत पातीं तो अचानक लपकके उस को पकड़ लेती हैं। उन की आंखें बड़ी चमकीली होती हैं। उन की पूंछ बहुत सहज से टूट जाती है और कहते हैं कि कभी २ जब छिपकलियां डर जातीं तो पूंछ आप से आप गिर जाती है पर उस की जड़ से फिर नई पूंछ निकल आती है।

छिपकलियों को प्रचार सकते हैं ऐसा कि वे समीप आकर हमारे हाथों से चावल ले लेती हैं। वे अण्डे देतीं और धूप के कारण फूटके उन में से बच्चे निकल आते हैं।

इन को छोड़ एक बड़े प्रकार की छिपकलियां होती हैं जिन को गिर्गट कहते हैं। वे पत्थरों और झाड़ियों में रहते हैं। उन का रंग प्रायः भूरा होता है। हरी छिपकली भली और निरपराधी जन्तु है। उस का आहार कीड़ा है और मनुष्य को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाती है। लड़के लोग इन को बहुधा बाल के फंदे लगाकर पकड़ लेते और मार डालते हैं।

एक और प्रकार की है जिस को गोह कहते हैं जो कभी तीन फुट लंबी होती है। इस देश के कंजड़ लोग इस का मांस खाते हैं और उस को बड़ा सुस्वाद बतलाते हैं। वह कीड़े और फल बरन अण्डे तक यदि मिल जायें तो खा लेती है।

एक और प्रकार की छिपकली होती है जो अपनी पसुलियों को पंखों की नाईं फैलाकर एक

डाल से दूसरी डाल पर उड़ जाती है बरन कभी २ उड़कर एक पेड़ से दूसरे तक पहुंच जाती है।

७२.—वायु का वर्णन।

वायु तो ऐसी वस्तु है कि देखने में नहीं आती और तौभी जहां कहीं हम हैं तहां हमारे चारों ओर भरी रहती है। आकाश और प्रत्येक घर उस से भरा रहता है। वह सारी पृथिवी को घेरे है और पचीस कोस के निकट ऊपर तक पहुंचती है। यदि हम अपने हाथ हिलायें वा किसी वस्तु को झुकायें तो प्रगट होगा कि वायु पास है और उस के बहने से हम को उस का अनुभव होता है। बहती वायु को बयार कहते हैं। जब बयार अधिक चलती है तब उस का शब्द भी सुन्ने में आता है और जब उस के झोंके से पेड़ की पत्तियां हिलती हैं और धूल उड़ने लगती तो हम उस के कामों को देख सकते हैं।

वायु ही से सब पशु पक्षी जीते रहते हैं। उस के बिना न पेड़ उगते न मनुष्य को जीवन मिल सकता। आग वायु बिना नहीं जल सकती। जो वायु कि स्वास में पीते हैं उस से लहू शुद्ध हो जाता और हम भले चंगे रहते हैं। जो वायु फेफड़ों में गई और फिर निकल आई है सो अशुद्ध और सांस लेने के योग्य नहीं है। इस लिये जब कि अधिक लोग किसी कोठरी में बैठे रहते हैं तो वहां की वायु बिगड़ जाती है और उस के स्वास लेने से मनुष्य

को हानि होती है। इसी प्रकार जो वायु कि रुके और सड़े हुए पानी से निकलती है और मुहरियों और गंदी बस्तुओं से निकलती है उस से मनुष्य बहुधा रोगी हो जाते हैं। चाहिये कि हर कोई अपने को इन बुरी वायुओं से बचावे और ऐसा उपाय करे कि निर्मल वायु बाहर से सदा घर के भीतर पहुंचे।

जब कि बयार बड़ी प्रचण्डता से बहती तब उस से नाना प्रकार का लाभ होता है। वह बुरी वायु को दूर करती और नौका के पाल में भरकर उसी को चला देती है। जो बयार अधिक बल से बहती उस को आंधी कहते हैं और जो वह घेरा बांधके बहती उसे बौंड़र कहते हैं।

७३.—सिंह और सांड़ों का दृष्टान्त।

कहानी है कि किसी समय में चार सांड़ जो सदा एक संग रहते और उठते बैठते थे। उन के अलग न होने का अर्थ यह था कि वहां बहुत बन-पशु फिरा करते थे और जब तक यह एक साथ रहते कोई उन्हें अहेर न कर सकता था।

एक सिंह ने उन्हें बार २ देखा और उन्हें अपना अहेर करना चाहता था पर जब लों वे एक दूसरे की सहायता और रक्षा करते रहे उस का साहस न हुआ कि उन पर चढ़ाई करे। दूर २ से देखकर सिंह के मुंह में लालसा का पानी भर २ आता था तौभी कोई उपाय न सूझ पड़ता था।

अन्त को सिंह ने यह सोचा कि यह अहेर सेंतमेंत

हाथ से जाता है और जब लों कि चारों सांड़ों में ऐसी प्रीति बनी रहेगी तब लों मुझ से कुछ न बन आयेगा। इसी चिन्ता में उस को एक उपाय सूझ पड़ा अर्थात् उस ने अपने जी में कहा कि इन में किसी रीति से फूट आ जाय तब तो निःसन्देह मेरी चढ़ बनेगी। सो उस ने इस बात में अति परिश्रम किया कि फुसफुसाने और दोष लगाने के मार्ग से उन चारों में वियोग कर दिया जाय।

उस के उपाय से यहां लों फल हुआ कि सांड़ एक दूसरे से डाह करने और सन्देह करने लगे और उन की प्रीति की सन्ती में बैर उत्पन्न हुआ। सो वे एक दूसरे से अलग हुए और दूर २ स्थानों में चरने लगे।

जब सिंह ने यह देखा कि अब इन में से कोई किसी को सहायता नहीं दे सकता है तो उन चारों को पकड़ पकड़कर खा गया। शिक्षा यह है कि जिस घर में फूट है वह घर स्थिर न रहेगा।



७४.—सांपों का वर्णन।

सांप का शरीर लंबा और पतला होता है। वह

बहुत सहज से मुड़ जाता है इस का कारण यह है कि उस की रीढ़ की हड्डी में बहुत सी छोटी २ गांठें होती हैं और उस की पसुलियां पांव के समान काम आती हैं और उस का चलना गोजर के चलने के समान है ।

बहुत से सांप बिषैले होते हैं पर नाना प्रकार के ऐसे भी हैं जो कुछ हानि नहीं कर सकते। यदि तुम जानना चाहते हो कि कौन सांप बिषैला है और कौन नहीं है तो उस का मुंह देख लिया करो। जो सांप कुछ हानि नहीं करते उन के ऊपर के चौभड़ में दो पांति दांत रहते हैं और बिषैले सांप में एक पांति दांत ऊपर चौभड़ में औरों को छोड़ पहलू में लंबे होते हैं और यह लंबे दांत खोखले हैं और एक २ जड़ के पास एक थैली होती है ।

जब सांप किसी को काटता है तो थैली दब जाती है और बिष दांत के खोखले में से होकर घाव में जाता और लहू में मिलकर सारे शरीर में फैल जाता है ।

जब हानिकारी सांप अथवा बावला कुत्ता किसी को काटे तो चाहिये कि घाव के ऊपर उसी अंग में एक रस्सी कसके बांध देवे इस लिये कि बिष सारे शरीर में फैल न जाय। एक हाथ से घाव को दबाओ और दूसरे हाथ से उस को काट देओ जिस्तें लोहू बिष को बाहर खींच लाये अथवा लोहा आग में लाल करके घाव को जला देना चाहिये। इस उपाय से बहुत मनुष्यों के प्राण बच जाते हैं। घाव को बल से चूसके थूक देना भी चाहिये अथवा गर्म

पानी से धोके लोहू को निकाल देना उचित है। सांप के काटे को मंत्र कुछ काम नहीं आता।



७५.—अच्छे गड़रिये का वर्णन।

हर कोई जानता है कि गड़रिया भेड़ के रखवाले को कहते हैं। अच्छा गड़रिया उन भेड़ों को जो उस को सौंपी रहती हैं बड़ी ही चौकसी और सावधानी से रखता है। वह उन को हरी घास के मैदान में चराता है और निर्मल जल के सोते वा नदी से उन को पानी पिलाता है। वह दिन रात उन की रक्षा और भलाई की चिन्ता में रहता है।

यदि कोई भेड़ी का बच्चा कहीं भटक जाय तो वह सारी भेड़ों को किसी शरणस्थान में छोड़के उस खोये हुए बच्चे के खोज में निकल जाता है और जब

लों उस को न पाये तब लों उस का पीछा नहीं छोड़ता है। और जब वह हाथ आ जाता है तो उस को अपने कांधे पर धरके बड़े मंगल से लौट आता है। जब कोई जंगली जन्तु भेड़ों पर चढ़ाई करता है तो वह उन के प्राण बचाने के लिये अपने प्राण तक को जोखिम में डालता है।

प्रभु यीशु मसीह ने कहा है कि अच्छा गड़रिया मैं हूं। उस के भक्त लोग उस की भेड़ कहलाते हैं। जब मनुष्य परमेश्वर से भटक गये तब यह अच्छा गड़रिया स्वर्ग से आया जिस्तें उन को ढूंढ़के फिरा लावे और बचावे। उस ने उन के लिये अपना प्राण भी दे दिया और क्रूस पर मारा गया। वह सदा उन की रखवाली करता है और नाना प्रकार से उन की सहायता करता है।

मसीह की भेड़ें कैसे पहचानी जाती हैं। अच्छा गड़रिया अपनी भेड़ों को पहचानता है। जब वह उन को बुलाता है तो वे उस का शब्द सुनके उस के पीछे हो लेती हैं। इस रीति मसीह की भेड़ें वे हैं जो उस को प्यार करते और उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं। इन को वह कुशल क्षेम से स्वर्ग में पहुंचा देता है बरन मसीह यह चाहता है कि सब लोग मेरे होके उस शरणस्थान में पहुंचाये जावें।

७६.—बरसात के विषय में।

जो तुम थोड़ा सा जल गर्मी के दिन में किसी बासन में डालकर धूप में रख दो तो कुछ बिलम्ब

में बासन को खाली पाओगे। जिस रीति कि पानी को बहुत गर्म करने से उस में से भाफ उठती है इसी रीति सूर्य्य की गर्मी के कारण से बासन का पानी धीरे २ उड़ जाता है परन्तु खौलते पानी की भाफ दिखाई देती और यह तो इतनी पतली होती है कि नहीं दिखाती है। इसी भांति सूर्य्य की धूप पानी को समुद्र से खींचती है और जो जल इस प्रकार से ऊपर जाता है सो बादल बन जाता है और मेंह होकर नीचे गिर पड़ता है।

कभी २ जब मेंह की बूंदें किसी ठण्डी वायु के कारण से गिरने लगती हैं तब जल ओले में होके पड़ता है। जब बदली का पानी बूंद होने के पहिले ठण्ड के मारे जम जाता है तब यह हिम हो जाता है और पतली २ फूही में होके भूमि पर गिरता है। जिस समय यह हिम अर्थात् पाला गिरने लगता है उस समय ज्यों २ वायु से इधर उधर उड़ती रुई के समान गिरता है त्यों २ निपट ठण्डा रहता है।

बरसात से बड़े बड़े लाभ होते हैं। जो मेंह न पड़े तो अन्न उत्पन्न न होय भूमि सूखकर कड़ी हो जायगी घास पात हरे न देख पड़ेंगे पोखरे सूखकर छूछे हो जाते हैं। तो उस समय हम खेतों को सींच नहीं सकेंगे फिर पौधे जो पानी न पावें तो मुर्झा-कर सूख जायेंगे। ईश्वर पृथिवी पर मेंह भेजता है यह मनुष्य के लिये ईश्वर का उत्तम दान है। उस की भलाई के लिये हमें उस का धन्यवाद करना चाहिये।

७७.—मरी का वर्णन ।

कभी २ शीतला शीतरस ज्वर इत्यादि बहुतायत से किसी स्थान में होता है उस को लोग मरी कहते हैं। ऐसे समयों में इस देश के अज्ञानी लोग बड़ी मूर्खता का व्यवहार करते हैं। वे देवी देवताओं भूत और प्रेतों की मन्नत मानते हैं और समझते हैं कि यही लोग उन सभों को भेजते हैं इस लिये कभी २ दान देते हैं और कभी चढ़ावा चढ़ाते हैं। ऐसे कर्म्मों से रोग मिट नहीं जाता क्योंकि यह देवी देवता उन को दूर नहीं कर सक्ते हैं। उन को ऐसी कुछ सामर्थ्य नहीं है। उन की पूजा से केवल ईश्वर का क्रोध भड़कता है।

चाहिये कि लोग ऐसे व्यर्थ व्यवहारों को छोड़ देवें। केवल एक है जिस के हाथ में मरना जीना है तो अपना सब कुछ परमेश्वर के हाथ में छोड़ दो जो सब कुछ कर सक्ता है। परन्तु बहुतेरे कार्य्य ऐसे हैं जिन के प्रचार करने से मरी की कुछ रोक होती है जैसे कि

पहिले—घरों में चूना करवाया जाय और मैला वा कूड़ा कर्कट और गंधाता पानी कहीं घर के समीप न रहने पावे। सब मुहरियों को धुलाके स्वच्छ करना बड़ी लाभदायक बात है। इस देश के लोग बहुत करके यह अज्ञानता करते हैं कि घरों के आसपास हर प्रकार का कूड़ा कर्कट का ढेर लगा रखते हैं नहीं सोचते कि इन के कारण से बहुत से रोग उत्पन्न होते हैं।

दूसरे—देह धोने और शरीर शुद्ध और गर्म रखने से बड़ा लाभ होता है।

तीसरे—अपने भोजन के विषय से चिन्ता करनी चाहिये कि कच्ची रोटियां कच्चा फल वा बासी बस्तु भोजन के लिये योग्य नहीं है और जो जल पीने और पकाने के काम में आवे सो बहुत ही स्वच्छ हो।

चौथे—अधिक जागते रहना और ओस में खुले पड़े रहना वा अनुचित परिश्रम करना मरी के समय में इन सब कामों को त्यागना चाहिये।

पांचवें—बिपत्ति के समय मन को दिलासा प्राप्त करने के लिये परमेश्वर से रक्षा मांगना चाहिये और प्रभु यीशु मसीह के कारण से उसी के शरणागत होना अवश्य है। सब लोगों को चाहिये कि टीका लगवावें क्योंकि टीका देने से बहुधा माता नहीं निकलती और कदाचित् निकले भी तो दुःख न्यून होता है।



७८.—वेसर और घोड़े का दृष्टान्त।

एक वेसर और एक घोड़ा जिन पर लोन के बोरे लदे हुए थे संग संग मार्ग में चले जाते थे। उस दिन बड़ी धूप थी और बड़े पहाड़ के उतरने से चलते २ बेचारा वेसर निपट व्याकुल हो गया और थककर अपने बहुत भार पर कुड़कुड़ाने लगा। इस व्याकुलता से उस ने घोड़े से कहा कि हे मित्र कृपा करके मेरे भार से कुछ थोड़ा सा ले लीजिये और अपने भार पर डाल लीजिये क्योंकि मैं ऐसा थक गया हूं कि मेरा प्राण अभी निकलने पर है आप

तो मेरे समान थके नहीं हैं आप का घर से निकले केवल एक ही घंटा हुआ है ।

घोड़े ने उत्तर दिया चल हट मुझ को तेरे भार से क्या लाभ है क्या मैं अपना और तेरा उठा ले चलूं मेरा तेरा स्वामी भली भांति जानता है कि हमारा तुम्हारा कितना २ उठाना उचित है ।

यह सुनकर वेसर बेचारा चुप हो रहा क्योंकि क्या उपाय था । बड़ी कठिनता से वह थोड़ा आगे चला तब गिरके भार के नीचे दबा हुआ मार्ग ही में मर गया। जब उस के स्वामी ने यह बात देखी तो उस का सारा भार उतारकर घोड़े पर लाद दिया ।

तब तो घोड़ा मारे भार के बड़ी कठिनता से चलने लगा क्योंकि भार के दुगना होने से उस की पीठ टूटी जाती थी और उस का प्राण नाक तक आ लगा था । वह बहुत पछताया कि मैं ने क्यों अपने दुःखी मित्र की उसी समय सहायता न किई क्योंकि यदि उस समय उस का साझी हो गया होता तो इस बिपत्ति से बचता ।



७९.—दूसरों को मगन रखने की विधि ।

हे पढ़नेहारो क्या तुम को ज्ञात है कि तुम्हें औरों को मगन रखना उचित है । परमेश्वर तुम से यह चाहता है कि तुम ऐसी चाल चलो कि जिस से तुम्हारे माता पिता और भाइयों और बहिनों

श्रोर मित्रों श्रोर पड़ोसियों के। श्रानन्द होवे। हम इस उचित कर्म्म को कैसे करें।

यदि हम अपने माता पिता की आज्ञासेवन करें सब लोगों से झूठ छोड़के सत्य बोलें मन लगाके स्कूल में पाठ सीखें जे। काम बतलाया जाय उस के। श्रानन्द से कर दें श्रोर सब कुछ जो करना हो तन मन से करते रहें किसी से बोलना हो ते। प्रेम से बोलें तो मित्र पड़ोसी हम से क्यों प्रसन्न न होवें।

श्रोर उचित है कि सभें के। दया श्रोर प्रीति दिखावें किसी से कड़ुवाहट की बातें न निन्दा की बातें बोलें। जब हम दूसरे के। प्यार करते श्रोर उन से प्रेम रखते श्रोर काम श्रोर बात में उन की भलाई करते हैं तब उन की श्रानन्दता से हम भी मंगलमय होंगे।

क्या तुम ने कभी किसी नटखट लड़के के। श्रानन्दित देखा। क्या झगड़े लड़ाई करने से कभी किसी का कल्याण हुश्रा। क्या वे लोग जो केवल श्रपनी ही चिन्ता में रहते हैं सुख बिलास के। पहुंचते हैं। कभी नहीं। वे न श्राप मंगलमय हैं न श्रोरों के। मंगल देते हैं। इस लिये लड़कें श्रोर तरुणों के। यह उचित है कि नम्र श्रोर दीन श्रोर सभें की भलाई चाहनेवाले होवें।



८०.—गांव श्रोर नगरों का वर्णन।

मनुष्यों के। श्रकेले रहना श्रच्छा नहीं लगता। वह दूसरों के संग मिले जुले रहने से श्रथवा श्रपने

लड़के बालों में रहने से प्रसन्न होते हैं। जो लोग उन के निकट दूसरे घरों में रहते हैं वे परोसी कहलाते हैं। अच्छे परोसी लोग आपस में मेल करके रहते हैं और सब कामकाज में एक दूसरे को सहायता देने के लिये तैयार रहते हैं। जो कभी किसी प्रकार का झगड़ा उठा तो वे झटपट परस्पर लड़ने वा कचहरी में जाने नहीं लगते किन्तु मेल मिलाप कर लेते हैं।

सौ पचास घर जहां मिलते उसे गांव और जहां बहुत से घर होते उसे नगर और बस्ती कहते हैं। नगरों में घर पांति २ बने रहते और इन के बीच से सड़क निकल जाती है और सड़क के दोनों ओर घर आबाद होते हैं। जिस नगर में राजा रहता है उसे राजधानी वा प्रधान नगर कहते हैं।

प्राचीनकाल में हिन्दुस्तान में बहुतेरे नगरों की चारों ओर दीवारें बनी रहा करती थीं कि जिस में डांकू लुटेरे आकर उन्हें लूटने और वहां के निवासियों को मार डालने में रुके रहें। अंग्रेज़ी राज्य में ऐसा प्रबन्ध है और लोग ऐसे निडर रहते हैं कि ऐसी भीतों का कुछ प्रयोजन नहीं।

८१.—दो स्वामियों का वर्णन।

जितने मनुष्य इस संसार में रहते हैं सब दास दासी हैं। जगत भर में दो ही स्वामी हैं और लोग इन में से किसी न किसी की सेवा अवश्य करते हैं। हमारा सर्व महा स्वामी ईश्वर है। उस ने हमें जीवन दिया। उसी की सामर्थ्य से हम जीते और

चलते फिरते हैं। यह संसार और उस के सब पदार्थ उसी के दिये हुए हैं। उस की सारी आज्ञायें अच्छी हैं और वह यह चाहता है कि हम इस रीति जीवन को बितावें कि दोनों लोक में हम आनन्दित रहें।

दूसरा स्वामी दुष्टात्मा शैतान है और वह अति बुरा और दुष्ट है न चाहिये कि उस का कुछ अधिकार हम पर होवे। उस ने हमें बनाया नहीं न हमें कभी कोई अच्छी बस्तु दिई पर मनुष्य उस को अपना स्वामी इस लिये बनाते हैं कि उन के मन बिगड़े हुए हैं। शैतान सदा मनुष्यों को अपने बुरे मन की इच्छाओं के अनुसार चलने को कहता है और इस लिये मनुष्य उस से प्रसन्न होके उस को अपना स्वामी बना लेते हैं। दुष्टात्मा उन से इस जीवन में पाप करवाता है जिसतें मरने के पीछे उन्हें दुःख में डाले। शैतान की सेवा की मज़दूरी नरक में पड़ना है।

कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता है। इस लिये लिखा है कि आज के दिन इस बात को चुन लो कि इन दोनों स्वामियों में से किस की सेवा करोगे। यदि ईश्वर को अपने स्वामी के लिये चुन लोगे तो सदा लों आनन्दित रहोगे पर यदि उस को त्यागके दुष्टात्मा की सेवा से प्रसन्न होगे तो सनातन लों दुःख में पड़े रहोगे।



८२.—उतावलीपन से काम का बिगाड़।

एक दिन का वर्णन है कि गोबिन्द और रामा नामे दो लड़के पाठशाला में बैठे हुए एक हिसाब

करने में लग रहे थे। थोड़ी देर के पीछे गोबिन्द बोल उठा कि मेरा हिसाब अब पूरा होता जाता है तुम्हारी क्या दशा है।

रामा ने उत्तर दिया मेरे हिसाब का कुछ आधा हो गया है मैं बहुत चाहता कि वह शीघ्र हो चुकता पर मैं डरता हूं कि यदि उतावली करूं तो तुम्हारे समान कहीं हिसाब में भूल चूक न रह जाय।

गोबिन्द बोला मैं तो हिसाब करने में बहुत उतावली करना प्रसन्न करता हूं। पर जब गोबिन्द अपना लिखा हुआ लेके अपने शिक्षक को दिखलाने गया तब प्रगट हुआ कि हिसाब ठीक न उतरा उस में भूल पाई गई सो उस बेचारे को वही हिसाब फिर करना पड़ा।

इतने में रामा का हिसाब भी पूरा हो गया। वह भी उस को लेके अपने शिक्षक के पास गया और शिक्षक ने उस को ठीक पाकर उस की प्रशंसा किई।

इस वृत्तान्त से प्रगट है कि यद्यपि काम का शीघ्र करना उचित है तथापि उस को ठीक करना चाहिये यद्यपि कुछ और भी बिलम्ब हो जाय क्योंकि उतावलेपन में काम बिगड़ता है।

८३.—लोमड़ी और ढोल का दृष्टान्त।

एक दिन प्रातःकाल एक भूखी लोमड़ी भोजन के खोज में निकली। संयोग से एक स्थान पर उसे एक मुर्गी दाना चुनती हुई दृष्टि आई। लोमड़ी उस को देखकर बहुत प्रसन्न हुई और बिचार किया कि

अच्छा अहेर आगे आया। यह कहके चाहती ही थी कि उस पर झपटे कि एकाएक ऐसा शब्द हुआ जिस से वह अति बिस्मित हुई।



वहां पर एक पेड़ था जिस पर एक ढोल लटका हुआ था और वायु के झोंके से डालियों से टक्कर खा रहा था जिस से बड़ा शब्द होता था। लोमड़ी ने तो ढोल को कभी देखा ही नहीं था सो जब उस की दृष्टि उस पर पड़ी तब उस ने समझा कि यह तो कोई मोटा जन्तु है। सो लालसा के मारे मुर्गी का बिचार छोड़ उस पेड़ पर कूदके चढ़ गई। किसी न किसी उपाय से वह ढोल लोमड़ी के हाथ आया और मुर्गी उसे देखकर भाग गई।

पर वहां क्या था। उस की लकड़ी और चमड़े से उस का अर्थ कब निकल सकता था। तब तो वह बहुत पछताई और बोली हाय हाय मैं ने कैसी मूर्खता किई जिस को मोटा जन्तु समझके उस का पीछा किया वह तो निकम्मा है और मुर्गी भी सेंतमेंत हाथ से जाती रही। कहावत है कि हाथ में की एक चिड़िया उड़ती दो चिड़ियाओं से भली है।



८४.—गर्जने के विषय बातचीत ।

हे बेटे आज सूर्य्य दृष्टि नहीं आता पर गर्मी के मारे जीव बेचैन हो रहे हैं। वायु कुछ भी नहीं चलती और पत्ती तक नहीं हिलती है। आकाश काला सा देख पड़ता है और अंधियारा छाया हुआ है। देखिये तो इस कोठरी में कैसी ज्योति क्षण भर चमक गई। लो वह फिर ऊपर चली गई। यह क्या है। इस ज्योति को बिजली कहते हैं। सुनो तो कैसा तड़प रहा है। अब तो जल भी बरसने लगा। देखो तो कैसी बड़ी २ बूंदें गिर रही हैं। यह लो। अब तो पानी धड़ाके से गिर रहा है।

बिजली बड़ी शीघ्र चलती है। उस के वायु में चलने से वायु में मौज उठती है और इन मौजों की टक्कर कान पर पड़ती है जिस से बड़ा शब्द सुन्ने में आता है। तड़प के पहिले ज्योति चमक जाती है इस लिये कि शब्द से ज्योति अधिक शीघ्र चलती है। वायु में शब्द पांच पल में एक मील तक पहुंच जाता है। यदि बिजली की तड़प और कड़क के बीच में पन्द्रह पल का अन्तर हो तो प्रगट होता है कि बिजली की लपक तीन मील दूर हुई थी।

कड़क और बिजली और आंधी से वायु ठण्डी और निर्मल हो जाती है। परन्तु ऐसे समय में किसी पेड़ के नीचे खड़ा न होना चाहिये क्योंकि यदि बिजली पेड़ पर गिरे तो जो मनुष्य उस के नीचे होता है बिजली से मारा जायगा। ऐसी

दशा में खुले मैदानों में रहना श्रोर भीज जाना इस से भला होता है ।



८५.—मिठाई श्रोर गहने का दृष्टान्त ।

किसी बड़े धनवान ने एक समय एक हाथ में मिठाई लिई श्रोर दूसरे हाथ में बहुमूल्य हीरा श्रोर किसी बालक के श्रागे जो समीप खड़ा था रख दिया श्रोर कहा कि लड़के मेरे दोनों हाथों को देख श्रोर इन में से जिस को तेरा जी चाहे मेरे हाथ में से ले ले । लड़का तो हीरा का मोल न जानकर मिठाई चाहता था सो तुरन्त उस को उठाया श्रोर श्रपने मुंह मे रख लिया ।

उस बालक का पिता भी उस समय उस के संग ही था सो यह दशा देख बोल उठा कि श्ररे मूर्ख लड़के तू ने यह क्या किया । तेरी मिठाई ने एक पल भर का सुस्वाद तुझे दिया । वह तो गले से उतरके मिट्टी हो गई यदि तू उस बहुमूल्य हीरे को ले लेता तो वह तेरे जीवन भर तेरे काम श्राता । तू ने बड़ी मूर्खता किई ।

उस ज्ञानवान ने बालक के पिता से कहा कि साहब श्राप तो इस बालक को मूर्ख कहते हैं पर श्राप ने तो इस से भी बड़ी मूर्खता की बात किई है । श्राप इस समय श्रपने लिये इस बिगड़े हुए संसार के सुख बिलास को जो इसी बालक की मिठाई की नाईं श्रभी मिटनेवाले हैं चुन लेते हैं श्रोर उस धर्म्म को जो सनातन लों तुम्हारे काम श्रायेगा श्रपने

पास से ऐसा फेंक देते जैसा बालक ने इस हीरे को त्याग दिया है।

८६.—मेंडक का वर्णन।

मेंडक एक प्रकार का जन्तु है जो किसी रीति से कुछ हानि नहीं करता। वह बाटिका में बड़े काम आया करता है क्योंकि उन कीड़ों को जो पौधों को बिगाड़ते हैं खा लेता है।

मेंडक की उत्पत्ति अंडे से होती है और ये अंडे पानी के कुंड के थाह में रखे जाते हैं। जब कि बच्चे अंडे से निकलते हैं तो उसे मेंडकी नहीं कहते हैं क्योंकि यह बहुत अद्भुत प्रकार की दिखाई देती है और कुछ २ मछली के समान होती है सिर उस का गोल और काला और एक लंबी सी पूंछ होती है पर उस के पांव नहीं होते हैं और मछली की नाईं गलफड़े से स्वास लेती है। परन्तु शीघ्र ही उस का रूप बदल जाता है। पहिले दो पिछले गोड़ दिखाई देते हैं तिस के पीछे अगले दो पांव। और उस की पूंछ सुकड़ते २ मिट जाती है और योंही थोड़े बिलंब में मेंडक के समान दृष्टि आती है।

मेंडक अपनी जीभ के द्वारा अपना अहेर पकड़ता है। उस की जीभ चिपकीले लस से ढंपी होती है और उस के कारण से कीड़े उस में चिपक जाते हैं। जिस भांति हम लोग भोजन को निंगलते उसी भांति मेंडक वायु को निंगलता है। जो उस का मुंह खुला हुआ न रखा जाय तो सांस न लेने के कारण वह मर जायगा।

यूरप के कई खण्डों में एक प्रकार के मेंडक को खाते हैं और अमरीका का महा मेंडक ऐसा बड़ा होता है कि एक मुर्गी के बच्चे को निंगल जा सक्ता है।



८७.—प्रार्थना का वर्णन।

यदि ऐसी बात हो कि कोई महाराजा तुम से ऐसा कहे कि जिस बस्तु में तुम्हारा भला हो और वह तुम्हें आवश्यक हो तो जब कभी मुझ से कहोगे तो मैं तुम्हें दूंगा तो क्या तुम इस बचन से आनन्दित न होगे। क्या तुम उस के पास बार २ नहीं जाते। परन्तु परमेश्वर ने जो कि राजाओं का राजा है वैसाही बचन हम लोगों के लिये दिया है। उस ने कहा है कि मांगो तो तुम को दिया जायगा।

यह बात सत्य है कि जो ईश्वर तुम्हें प्यार करता तो ऐसी कोई बस्तु जिस को तुम चाहते हो पर उस से तुम्हारी हानि हो वह प्रीति करके तुम्हें न देगा जैसे कि बुद्धिमान माता पिता छोटे से बच्चे को चोखी छुरी जिसे वह खेलने को मांगता है न देंगे। कोई पिता ऐसा मूर्ख न होगा कि अपने बालक को केवल उस के मांगने से ऐसी बस्तु देगा जिस से बालक को हानि पहुंचे। किन्तु जो तुम उचित रीति से उस बस्तु को मांगो जिस से तुम्हारा भला होगा तो परमेश्वर तुम्हारी सुनेगा।

मनुष्यों को चाहिये कि प्रतिदिन प्रातःकाल के समय दिन भर की रखवाली के लिये प्रार्थना करें और संध्या समय रात भर की रक्षा के लिये बिन्ती करें। इस के संग हम उस से यह भी मांगें कि हमारे सब पापों को क्षमा कर और अपने पवित्र आत्मा को हमारे हृदय के शुद्ध करने के लिये भेज जिस से कि हम आगे को तुझे भली भांति प्यार करें। और यह भी धर्म्म है कि जैसे तुम अपने लिये प्रार्थना करते हो उसी भांति और लोगों के लिये भी मांगा करो।

तुम्हें प्रार्थना करना चाहिये कि सब लोग अपने मुक्तिदाता प्रभु यीशु मसीह को जानें और उस से प्रीति करें। ईश्वर से मांगो कि मरने के अनन्तर वह तुम को बैकुण्ठ में पहुंचाये। प्रातःकाल और संध्या के समय ईश्वर से प्रार्थना करनी किसी भांति न भूलो।



८८.—सूर्य्य का वर्णन ।

सूर्य्य तो आग का गोला है और हम को गर्मी और प्रकाश देता है। सूर्य्य की गर्मी हमें गरमा देती है। सूर्य्य के कारण पौधे उगते हैं। उसी के प्रकाश से हम अपने काम देख भालके करते हैं।

पृथिवी जिस पर हम लोग रहते हैं उस से सूर्य्य तेरह लाख गुणा बड़ा है और दूरी उस की यहां से पैाने पांच करोड़ कोस है और इसी कारण से वह ऐसा छोटा देख पड़ता है। जो पृथिवी पर से सूर्य्य पर जाने को सड़क होती और तुम दिन रात एक घोड़े को बराबर दैाड़ाये रहते तो सात सैा वर्ष में वह वहां पहुंचता।

देखने में ऐसा आता है कि सूर्य्य आकाश में चढ़ता उतरता चला जाता है परन्तु यह बात यथार्थ नहीं है। सूर्य्य नहीं चलता परन्तु हमारी पृथिवी उस के चारों ओर फिरती है और जब हम लोग सूर्य्य के साम्ने घूमके आते हैं तो भोर का आरंभ होता है परन्तु जो लोग कि सूर्य्योदय कहते हैं उस का यह कारण है कि वह उदय होते देख पड़ता है। जब सूर्य्य हमारी दृष्टि से लोप हो जाता है तैाभी वह प्रकाश होना नहीं छोड़ता किन्तु और २ लोगों को ज्योति और गर्मी देता है। जब कि हमारे यहां रात होती है तब उन के यहां दिन होता है। आधी पृथिवी पर सदा सूर्य्य का प्रकाश और आधी पर अंधियारा रहता है। जब इस देश में दोपहर दिन होता है तब इंगलण्ड में सूर्य्योदय और अमरीका

में आधी रात होती है। परन्तु पृथिवी में ऐसे दो भाग हैं जहां बर्ष भर में केवल एक दिन और एक रात होती है अर्थात् सूर्य्य छः महीने तक दिखाता और फिर छः महीने तक लोप हो जाता है।

भोर को तड़के सूर्य्योदय से पहिले उठना अच्छा है। बहुतेरे लोग सूर्य्य को पूजते हैं यह बड़ी मूर्खता और दुष्टता है उन्हें ईश्वर को जिस ने सूर्य्य को बनाया पूजना उचित है।



८९.—अफ़ीम का वर्णन।

अफ़ीम पोस्त अर्थात् खशखश से निकलती है और बिहार और मालवा आदि हिन्दुस्तान के भागों में बहुतायत से होती है। पोस्त के खेत जब फूलने लगते हैं तो देखने में बहुत अच्छे होते हैं। जब फूल गिर जाते हैं तो पोस्त की बोंड़ी बहुत बड़ी हो जाती है और छोटे गेंद सी हो जाती है। किसान लोग सांझ को पोस्त को छूरी से छेद देते हैं जिस

में से रस दूध की नाईं निकलकर और वायु पाके सूखकर काला पड़ जाता है और गोंद सा चिपकके पोस्त के ऊपर जम जाता है। लोग प्रातःकाल छूरी से इस रस को निकाल लेते और छाया में सुखाते हैं और यही अफ़ीम कहलाती है।

अफ़ीम औषध के बड़े काम आती है। वह बड़े मोल पर बिकती है परन्तु बहुत लोग इस से अपनी बड़ी हानि करते हैं क्योंकि उस को इस लिये खाते और पीते हैं कि उस से एक प्रकार का नशा होता है ऐसा करने से देह का बड़ा बिगाड़ होता है। अफ़ीम पीनेवाले अपने रूप से पहचाने जाते हैं उन की आंखें घुस जाती हैं पीठ झुक जाती है शरीर दुबला पड़ जाता है। उन की चाल भी लड़खड़ाने लगती है और अफ़ीमवाले शीघ्र मर भी जाते हैं। ज्ञानवान को उचित है कि अफ़ीम भांग धतूरा इत्यादि मतवालेपन की वस्तुन को त्याग दे।

९0.—जब हम लोग मरेंगे तब कहां जायेंगे।

हम सब लोग अवश्य मरेंगे कदाचित् शीघ्र ही मर जायेंगे। हो तो सकता है कि आजही रात को मर जावें। यहां जितनी वस्तु देखने में आती हैं सब नाशमान हैं। कोई मनुष्य इस संसार में सदा लों जीता नहीं रहा है न रहेगा परन्तु यह भी है कि हम अपने मरने के समय को नहीं जानते बरन अपने जीवन को बेठिकाना जानते हैं। पर मरने के

पीछे मनुष्य की क्या दशा होती है और उस का आत्मा कहां को जाता है ।

ईश्वर ने हम लोगों को आज्ञा दिई है कि एक ऐसा स्थान है जिसे बैकुण्ठ कहते हैं उस में धर्म्मी लोग जायेंगे और एक दूसरा स्थान है जिस में अधर्म्मी लोग जायेंगे उसे नरक कहते हैं । बैकुण्ठ बहुतही पवित्र और आनन्दमय स्थान है और कोई बुरी वस्तु उस में कभी प्रवेश नहीं पा सकती है । वहां पर ईश्वर और प्रभु यीशु मसीह हैं और उस के पवित्र दूतगण और धर्म्मी मनुष्य जो कि मन में शुद्ध हो गये हैं । जो लोग बैकुण्ठ में रहते हैं उन के आनन्द का वर्णन कहने में नहीं आ सकता है । ईश्वर उन की आंखों से आंसुओं को पोंछ डालेगा और वहां पर फिर आगे को न मृत्यु न शोक न बिलाप न दुःख होगा ।

नरक शैतान के दुष्ट दूतों के और दुष्ट मनुष्यों के रहने का स्थान है । वह मानो एक झील सा बर्णन किया जाता है जिस में आग और गंधक सदा जला करती है और जहां रोना और दांत पीसना है जहां पर कीड़ा रहता है जो कभी नहीं मरता और वह आग जो कभी नहीं बुझती है । धर्म्मपुस्तक में लिखा है कि पापी और जो लोग ईश्वर को भूलते हैं नरक में डाले जायेंगे ।

जो हम लोग यीशु मसीह को प्यार करें और पाप से घिन करें तो उस के संग सदा लों रहेंगे जहां सब लोग प्रेम और आनन्द में परिपूर्ण हैं ।



६१.—मक्खी का वर्णन ।

मैं तुम से यह बात करूंगा कि मक्खी की उत्पत्ति किस रीति होती है और कि वह क्या खाती है और वह क्या २ करती है । मक्खी अंडे से उत्पन्न होती है । अंडे से निकलते समय उस का रूप कीड़े सा होता है और वह कीड़ा धीरे २ मक्खी बन जाता है ।

मक्खी के छः पांव और दो पंख होते हैं । वह उड़ती भी है और पांवों से चल फिर भी सकती है । उस के पांव ऐसी अद्भुत रीति से बने हैं कि छत पर सिर लटकाये हुए चल सकती है । उस की आंखें हर ओर को एक ही संग देख सकती हैं और इसी कारण से वह सब कुछ बहुतही शीघ्र देख सकती है ।

मक्खी मिठाई को चाहती है और उस के मुंह पर एक प्रकार की सूंड़ होती है जैसे हाथी के और उसी के द्वारा से वह अपना भोजन उठा लेती है । मक्खियों से एक लाभ की बात यह होती है कि वह वायु को शुद्ध कर देतीं और हानिकारक वस्तुओं को खा लेती हैं । यदि वे सड़ जायें तो दुर्गन्ध उत्पन्न करें । मक्खियां अपने शरीर को शुद्ध और निर्मल रखने चाहती हैं और इस लिये अपने पांवों से अपने को पोंछा किया करती हैं ।





९२.—लोमड़ी और कौवे का दृष्टान्त ।

कहते हैं कि किसी समय में एक लोमड़ी चलते फिरते किसी बन की ओर जा निकली । जल तो उसे बहुत मिला सो वह जल पीके तृप्त हुई पर खाने को कुछ नहीं मिलता था सो उस को यह चिन्ता लगी कि यदि कहीं कुछ भोजन हाथ आ जाय तो क्या ही बड़ी बात हो । प्रातःकाल से भूख के मारे फिर रही हूं न मुर्गी न बटेर न कोई पशु पक्षी मिला और जब लों अंधियारा न हो जाय तब लों कुछ बन नहीं पड़ने का क्योंकि तब लों मुझे किसी घर के पास जाने का साहस न होगा ।

इसी सोच में पड़ी हुई सिर मार रही थी कि एकाएक एक कौवा पेड़ की डाली पर बैठा हुआ दृष्टि आया । यह कहीं से एक टुकड़ा पनीर का उड़ा लाया था । पनीर को देखकर लोमड़ी के मुंह में पानी भर आया और इस चिन्ता में हुई कि इसे

क्योंकर छीन लूं। उस समय उसे एक उपाय सूझ पड़ा। वह पेड़ के नीचे जाके कौवे से यह कहने लगी कि वाह साहिब आप का क्या कहना है। आप का रंग रूप ऐसा मनभावन है कि आप की सुन्दरता मेरी आंखों में बस गई है। मैं ने जीवन भर ऐसी चिड़िया नहीं देखी। यदि आप कुछ थोड़ा सा राग सुना देते तो मेरा जी ठण्डा हो जाता। मैं जानती कि आप का गाना बहुतही अच्छा होगा।

वह कैावा उस के मधुर बचन से यहां लों मोहित हो गया कि मारे आनन्द के फूला न समाया श्रीर बिचार किया कि मैं तो कुछ राग गाऊंगा तो यह मुझ से श्रोर भी प्रसन्न होगी। यह बिचारके वह कैं कैं करने लगा। फिर क्या था पनीर तो भूमि पर गिर पड़ा श्रोर लोमड़ी का अर्थ सिद्ध हुआ। वह झट उस को चट कर गई श्रोर बोली कि सलाम। पनीर के लिये मैं तो आप को धन्य मानती हूं पर आप का राग आपही को अच्छा लगा। परन्तु बिचार कीजिये कि जब कोई ऐसे कुडोल कुरूप पक्षी की प्रशंसा गाये तो अर्थ कुछ श्रोर ही होगा। शिक्षा यह है कि लल्लोपत्तो करनेवालों से चोकस रहो।

६३.—चन्द्रमा का वर्णन।

चन्द्रमा सूर्य्य के समान प्रकाशमान नहीं है परन्तु सूर्य्य से पृथिवी के बहुत निकट है। कभी २ हम लोग चन्द्रमा को पूरा श्रोर गोल सा देखते हैं उस को पूर्ण चन्द्र श्रोर उस दिन को पूर्णमासी कहते

हैं। पूरा होने के उपरान्त यह थोड़ा २ घटने लगता है यहां लों कि सब का सब दृष्टि से लोप हो जाता है। उस दिन को अमावश कहते हैं। लोप हो जाने के थोड़े दिन पीछे वह फिर दिखाई देता है पहिले तो बहुत छोटा होता है परन्तु प्रतिदिन थोड़ा २ बढ़ता जाता है यहां लों कि फिर पूरा हो जाता है। इस बढ़ती घटती के पहिले दिन को परीवा कहते हैं।

इस प्रकार से प्रत्येक महीने में नया चन्द्रमा देखने में आता है। काहे चन्द्रमा कभी तो बड़ा और कभी छोटा देख पड़ता है। इस का कारण यह है कि उस का केवल वह भाग हम लोगों के देखने में आता है जिस पर कि सूर्य्य का प्रकाश रहता है। सूर्य्य तो अपनी निज ज्योति से प्रकाशित होता है परन्तु चन्द्रमा निज ज्योति से नहीं चमकता परन्तु सूर्य्य का प्रकाश उस में जाता है। जिस समय हमारे और सूर्य्य के बीच में चन्द्रमा आ जाता है तो अंधेरा अलंग हमारी ओर रहता है और तब हम उसे तनिक भी नहीं देख सकते।

चन्द्रमा का आकार गेंद की नाईं गोल है। पृथिवी चन्द्रमा से पचास गुणा बड़ी है। चन्द्रमा प्रायः सूर्य्य के समान बड़ा दिखाई देता है इस कारण कि सूर्य्य उस से चार सौ गुणा दूर है।

जैसे कि पृथिवी पर पहाड़ और क्षेत्र हैं वैसेही उस पर भी हैं। चन्द्रमा का पहाड़ी भाग प्रकाशित रहता है क्योंकि क्षेत्रों की अपेक्षा सूर्य्य का प्रकाश उस में अधिक जाता है। चन्द्रमा में जल कभी दिखाई

नहीं देता। चन्द्रमा से हम लोगों को प्रकाश मिलता है पर वह उष्णता नहीं देता।

९४.—सूई और पोन का दृष्टान्त।

कहानी है कि एक समय सूई और पोन बेकाम पड़े रहे और उन में झगड़ा उठा जैसे कि आलसियों की रीति होती है। पोन ने सूई से कहा कि तू किस काम की है तेरे सिर पर गूंज तो है ही नहीं तुझ से क्या अर्थ निकल सकता है।

सूई ने उत्तर दिया कि तुझ में नाका तो है ही नहीं तेरी गूंज किस काम की है।

पोन ने पूछा यदि नाके में सदा कुछ न कुछ पड़ा ही रहे तो वह किस काम आ सकता है।

सूई बोली मैं तो तुझ से अधिक परिश्रमी हूं तू मेरे बराबर कामकाज नहीं कर सकता है।

पोन ने कहा तू ऐसी अहंकारिन है कि झुकती ही नहीं यदि झुके तो टूटेगी।

सूई बोली कि तू तो बेचारा योंही टेढ़ा तिरछा हो रहा है यदि तुम चुप न रहोगे और उत्तर दे दे मुझे क्रोध दिलाओगे तो मैं तुम्हारा सिर तोड़ डालूंगी।

पोन ने कहा तू जो हाथ लगाये तो मैं तेरी आंख फोड़ डालूंगा।

भला इन का झगड़ा यों अनुचित रीति से होता रहा कि एक लड़की भीतर आ गई और सूई से सीने लगी। वह छोटी लड़की थी और सीना न जानती

थी सो सूई का नाका टूट गया। तब उस ने पीन की गूंज में सूत बांधकर सीने चाहा पर गूंज भी अलग हो गई सो लड़की ने उस को भी नोचकर सूई के पास भूमि में डाल दिया। शिक्षा यह है कि कड़ुवी बातों से झगड़ा बढ़ता है।

९५.—अहीर के लड़के का वर्णन।

एक अहीर का लड़का किसी बाटिका के निकट एक गाय को मैदान में चरा रहा था। पासही एक पेड़ फल से लदा हुआ खड़ा था। फल को देखके लड़के से न रहा गया।

वह गाय का बिचार छोड़के पेड़ पर चढ़ फल के खाने में लग गया। गाय ने अपने को अकेला पाकर बारी का मार्ग लिया और खाईं तोड़ ताड़ भीतर घुस गई और पेट भरके जो चाहा सो खाया और फूल के पैाधों को भी पांवों के नीचे रैांदके नाश कर डाला। जब लड़के की दृष्टि अकस्मात् गाय पर पड़ गई तो क्रोध के मारे पेड़ पर से उतर एक लाठी ले गाय को पीट चला।

इतने में इस लड़के का पिता इस बृत्तान्त को खड़ा देख रहा था। लड़के से अति अप्रसन्न हो उस पास आया और उस से पूछा क्यों लड़के छड़ी किस की पीठ पर पड़नी चाहिये गाय की पीठ पर वा तुम्हारी पीठ पर। वह तो निर्बुद्धि और बिन समझ जन्तु है पर तुम ज्ञान और समझ रखते हो। कहो तो इस का दोष गाय पर है वा तुम पर।

लड़के ने मारे लाज के सिर झुका लिया और उस का मुंह उदास देख पड़ा।

अर्थ इस का यह है कि जब वे लड़के जिन की अच्छी शिक्षा हुई है बुराई करते तो उन का काम अज्ञानों के काम से बुरा होता है। जिसे बहुत दिया गया है उस से बहुत मांगा भी जायगा।

९६.—भाई और बहिन का दृष्टान्त।

किसी मनुष्य के दो बालक थे एक पुत्र और एक पुत्री। पुत्र सुन्दर लड़का था परन्तु पुत्री रूपहीन थी। एक दिन खेलते २ इन भाई बहिन ने दर्पण में अपनी २ सूरत देखी। लड़का अपनी सुन्दरता से प्रसन्न होके बोला कि देख लो बहिन मेरा रूप कैसा सुन्दर है। बहिन ने समझा कि ऐसा कहकर वह मेरे कुरूप पर हंसी करता है और मुझ को तुच्छ करता है। उस को यह बात यहां लों बुरी प्रगट हुई कि उस ने अपने पिता से उस का वर्णन किया और कहा कि मेरा भाई मेरा बड़ा अनादर करता है।

उस के पिता ने जो बड़ा ज्ञानवान मनुष्य था यह सुनके क्रोध न किया पर दोनों को बुलाके उन्हें अपनी गोद में ले लिया और बड़े प्यार से उन से कहा हे बच्चो सुनो और मेरी शिक्षा पर चित्त लगाओ। मेरी आज्ञा यह है कि तुम दोनों प्रतिदिन दर्पण में अपनी २ प्रतिमा देखा करो। तुम हे मेरे बेटे इस लिये देखा करो कि टेढ़ी और तिरछी दृष्टों और क्रोध के चिन्हों से अपने मुंह की सुन्दरता को न बिगाड़ो।

और तुम हे मेरी प्रिय पुत्री जिस में अपनी असुन्दरता को प्रेम के काम करने और प्रीति की बातें बोलने से छबि में बदल डालो। कहावत है कि भला वह है जो भला करे।



९७.—दो बैलों का दृष्टान्त।

कहते हैं कि एक बार एक जोड़ी बैल जो एक संग जुता करते थे परस्पर उलझ गये। उन के नाम हम दरू और भरू रखेंगे। दरू ने कहा हे भरू तुम ने तो हमारी सांस नाक में कर रखी है। तुम ने टेढ़ा खींचके मेरे गले को छील डाला।

भरू बोला तुम भी तो मुझ को बड़ा दुःख दिया करते हो।

दरू ने उत्तर दिया तुम बड़ी निश्चिन्तता से चलते हो यहां तक कि उस दिन मेरी आंख में सींग मार दिया।

भरू बोला तुम ने भी तो मेरे कान में चोट लगाई।

दरूं ने कहा तुम ऐसे धीरे २ चलते हो कि मुझ ही को अकेले गाड़ी खींचनी पड़ती है।

भरूं बोला मैं भी तो अपनी सामर्थ्य भर खींचता हूं। यदि तुम मुझ से बलवन्त हो तो मेरा क्या अपराध है। जो कुछ मुझ से हो सकता है सो ही करता हूं और मुझ पर मार भी बड़ी पड़ती है।

दरूं ने कहा यदि गाड़ीवाला तुम को मारता है तो मैं क्या करूं क्या इस में मेरा कुछ दोष है।

भरूं बोला सत्य बात तो यह है कि मैं तुम्हारे संग जुतना ही नहीं चाहता हूं मुझे तुम्हारी संगति नहीं भावती है। मेरा निर्बाह तुम्हारे संग होना कठिन है। मैं तुम से दुःखित हूं।

दरूं ने कहा कि मेरी भी यही दशा है। मैं भी तुम से अति क्लेशित हूं और मुझ को तुम्हारे संग काम करना अच्छा नहीं लगता है। परन्तु क्या करूं जोतनेवाला अपनीही इच्छा के अनुसार तुम को हमारे साथ नाथ देता है।

संयोग से वहां पर एक कुत्ता भी खड़ा २ उन की बातें सुन रहा था। उस ने उन से कहा कि तुम लोग बड़े मूर्ख हो। भला तुम्हारे इस झगड़े और निन्दा से क्या लाभ हो सकता है। यदि तुम दोनों एक दूसरे के लिये धीरज धरते तो तुम दोनों की बड़े आनन्द से निभ जा सकती है। भला तो यह है कि धीरज धरो और जो जिस से हो सके वह वैसा ही करे। इस में तुम दोनों के लिये कल्याण होगा।

शिक्षा यह है कि इस संसार में कई प्रकार के जुए हैं जिन में लोग जोते जाते हैं पर कोई जुआ ऐसा

भारी नहीं है जो कि धीरज और प्रेम से हलका न हो जाय। जो कुछ दुःख हो उस को बिन कुड़कुड़ाये और बिन घबराये उठाओ।

९८.—नील का वर्णन।

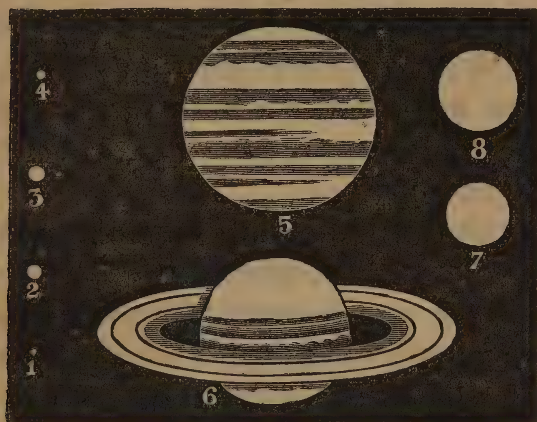
नील का झाड़ दो तीन फुट ऊंचा होता है। उस की पत्तियां कुछ अंडे के रूप पर होती हैं और दो २ करके टहनी के दहिने बायें लगी होती हैं जहां से कि पत्तियों की कलियां फूटती हैं वहां पर लाल रंग के फूलों के गुच्छे निकलते हैं।

जब नील फूलने पर आता है तो उस को काटके नील बनाने के लिये चहबच्चों में भर देते हैं। जब चहबच्चों की तीन चौथाई नील के गट्ठों से भर जाती है तो उस में जल ऊपर लों भर देते हैं और भारी लक्कड़ उन पर रख देते हैं कि नील बहा बहा न फिरे। इन चहबच्चों के नीचे एक डाट लगी होती है और जब जल का रंग पीले पर आ जाता है तब उस डाट को खोल देते हैं और उस का पानी दूसरे चहबच्चे में भर देते हैं और उस को बांसों से पीटते हैं जब तक कि उस पानी में दाने न पड़ जायें।

जब ये पानी के नीचे बैठ जाते हैं तो उस पानी को निकाल लेते हैं फिर उस को पका लेते हैं जब लों सूख न जाय। फिर उस नीली मिट्टी को दबा दबाकर छोटी २ टिकियां बनाके बेचने के लिये सन्दूकों में भर देते हैं।

नील बहुधा हिन्दुस्तान ही में उत्पन्न होता है

परन्तु आजकल अमरीका के गर्म देशों में कहीं २ उसे बोने लगे हैं। यह नील रंग के बड़े काम आता है और बहुमूल्य भी होता है।



९९.—तारों का वर्णन।

तारे दो प्रकार के होते हैं एक जो चलते नहीं उन्हें स्थिर तारे कहते हैं। दूसरे वे जो औरों के बीच चलते फिरते रहते हैं उन्हें ग्रह कहते हैं।

ग्रह सूर्य्य के चहुंओर घूमते हैं। ग्रह भी दो प्रकार के होते हैं पहिले वे जो पृथिवी के समान केवल सूर्य्य की परिक्रमा करते हैं। दूसरे वे जो चन्द्रमा की नाईं अपने से बड़े ग्रहों को घूमा करते हैं और उन के संग सूर्य्य के ओर पास घूमते हैं। बुध, शुक्र, पृथिवी, मंगल, बृहस्पति, शनैश्चर, और नेप्च्यून, ये सब प्रथम वर्ग के ग्रहों में मुख्य हैं।

शुक्र जिस को प्रातःकालिक और सायंकालिक तारा भी कहते हैं पृथिवी से कुछ छोटा है। बृहस्पति सब ग्रहों से बड़ा है उस का प्रमाण पृथिवी से तेरह सौ गुणा बड़ा है। बृहस्पति के चार चन्द्रमा हैं। शनैश्चर के आठ हैं और वह आप चौड़े चिपटे मंडलों से घिरा है। ग्रह आप अंधेरे हैं सभों में सूर्य्य का प्रकाश जाता है। जितने ग्रह कि अब लों देखने में आये हैं कुछ दो सौ के निकट हैं परन्तु बहुधा अति छोटे हैं।

बहुतेरे लोग इस देश में समझते हैं कि ग्रह पृथिवी के पदार्थों पर अधिकार रखते हैं परन्तु यह बड़ी भूल है। वह तो केवल मिट्टी पत्थर और जल के सब पिण्ड हैं। पृथिवी भी उन में का एक ग्रह है। सब पदार्थों का अनुशासक ईश्वर है।



कभी २ आकाश में अद्भुत पूंछवाले तारे दिखाई देते हैं जिन्हें केतु कहते हैं। अज्ञानी लोग उन से

डरते और समझते हैं कि यह अशुभ है परन्तु यह भी मूर्खता है।

स्थिर तारे बड़े २ सूर्य्य हैं। वे बहुत ही दूर हैं और वे इसी कारण बहुत छोटे देख पड़ते हैं। मनुष्य उन को गिन नहीं सकते परन्तु उन का सृजनहार उन की संख्या बतलाता और उन के नाम ले ले पुकारता है।



१००.—ईश्वर का खोजी होना।

धर्म्मपुस्तक में लिखा है कि एक दिन कोई मनुष्य अपने खेत में अन्न काटने को गया था। थोड़ी बिलम्ब में उस का बच्चा अपने पिता के पास दौड़ा आया और बोला पिता मेरा सिर गया। उस के पिता ने उस को माता के पास घर भेज दिया। वह बेचारा अपनी माता की गोद में बैठे २ दोपहर के समय मर गया।

प्रगट है कि बच्चे और तरुण दोनोंही मर जाते हैं। इस जीवन का कुछ ठिकाना नहीं है। इस लिये न कहना चाहिये कि मुक्ति की चिन्ता करने के लिये बहुत समय होगा अवसर पाके हम इस का बिचार करेंगे। अब का समय तो सब से उत्तम है। अभी मुक्ति का खोज करना सहज होगा। यदि अभी अपना मन मुक्तिदाता को न दो तो पाप करते २ मन कठोर हो जायगा। संसार की चिन्तायें तुम्हारे मन में भर जायेंगी और ईश्वर की ओर से उस को हटा देंगी।

अब का समय ईश्वर को बहुत प्यारा होता है। यदि हम यौवन के दिन उसी की सेवा में बितावें तो वह हम से अति प्रसन्न होगा। उस ने कहा है कि मैं उन्हें प्यार करता हूं जो मुझे प्यार करते हैं और वह जो मुझ को सवेरे वा बचपन में ढूंढ़ते हैं मुझ को पावेंगे।

परमेश्वर को अभी ढूंढ़ो क्योंकि कौन कह सकता है कि कब मेरा जाना होगा। कदाचित् यह तुम्हारा पिछला समय होवे कोई नहीं जानता कि मेरी कल को क्या दशा होगी। कल का भरोसा मत करो। मुक्ति के लिये जो कुछ करना है आजही कर लो। लिखा है कि यदि आज तुम उस का बचन सुनो तो अपना मन कठोर न करो।





१०१.—ईश्वर की दस आज्ञा।

अगले समय में ईश्वर ने मूसा के सीना पहाड़ पर एकान्त में बुलाके अपने लोगों के लिये उसे दस भारी आज्ञा सुनाईं और इन आज्ञाओं के कहने का यह तात्पर्य्य बतलाया कि तेरा परमेश्वर ईश्वर जो तुझे मिसर की भूमि से और बंधुआई के घर से निकाल लाया मैं हूं।

पहिली आज्ञा—मेरे सन्मुख तेरे लिये दूसरा ईश्वर न होगा।

दूसरी आज्ञा—अपने लिये खोदके किसी मूर्त्ति वा किसी वस्तु की प्रतिमा जो ऊपर स्वर्ग में अथवा नीचे पृथिवी में अथवा जल में वा जो पृथिवी के नीचे है मत बनाइयो तू उन को प्रणाम न कीजियो न उन की सेवा कीजियो इस लिये कि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर हूं जो ज्वलित ईश्वर हूं पितरों के अपराध

का दण्ड उन के पुत्रों को जो मेरा बैर रखते हैं उन की तीसरी और चौथी पीढ़ी लों दिवैया हूं और उन में से सहस्रों पर जो मुझे प्यार करते हैं और मेरी आज्ञाओं को पालन करते हैं दया करता हूं।

तीसरी आज्ञा—परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारथ मत लीजियो क्योंकि परमेश्वर उसे जो उस का नाम अकारथ लेता है निष्पाप न ठहरावेगा।

चौथी आज्ञा—बिश्राम के दिन को पवित्र रखने के लिये स्मरण कीजियो छः दिनों में अपने समस्त कार्य्य कीजियो परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर ईश्वर का है उस में कोई कुछ कार्य्य न करे न तू न तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा दास न तेरी दासी न तेरे पशु न तेरा पाहुन न जो तेरे फाटक के भीतर है इस लिये कि परमेश्वर ने छः दिन में स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और सब कुछ जो उन में हैं बनाया और सातवें दिन बिश्राम किया इस कारण परमेश्वर ने बिश्राम के दिन को आशीषमय और पवित्र ठहराया।

पांचवीं आज्ञा—अपने माता पिता को प्रतिष्ठा दे जिस्तें तेरी बय जिसे तेरा परमेश्वर ईश्वर तुझे देता है अधिक होवे।

छठवीं आज्ञा—हत्या मत कर।

सातवीं आज्ञा—परस्त्रीगमन मत कर।

आठवीं आज्ञा—चोरी मत कर।

नवीं आज्ञा—अपने परोसी पर झूठी साक्षी मत दे।

दसवीं आज्ञा—अपने परोसी के घर का लालच मत कर अपने परोसी की स्त्री और उस के दास और उस की दासी और उस के बैल और उस के गदहे और किसी बस्तु की जो तेरे परोसी की है लालच मत कर ।

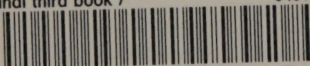
हमारे प्रभु की पिछली आज्ञा ।

हमारे प्रभु यीशु मसीह ने स्वर्ग पर उठ जाने के पहिले अपने चेलों को यह पिछली आज्ञा दिई कि तुम सारे संसार में जाके सब लोगों में सुसमाचार का प्रचार करो । जो कोई बिश्वास करके बपतिसमा लेगा सो त्राण पावेगा पर जो कोई बिश्वास न करेगा उस को दण्ड होगा ।

इति ।

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

1898.


491.43 H66
c.1
000
Hindi third book /
040101
3 9304 00061870 3
ASSOCIATED MENNONITE BIBLICAL SEMINARY

पहाड़ा ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३
४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४
५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५
६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२	७८	८४	९०	९६	१०२	१०८	११४	१२०	१२६
७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	६३	७०	७७	८४	९१	९८	१०५	११२	११९	१२६	१३३	१४०	१४७
८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०	८८	९६	१०४	११२	१२०	१२८	१३६	१४४	१५२	१६०	१६८
९	१८	२७	३६	४५	५४	६३	७२	८१	९०	९९	१०८	११७	१२६	१३५	१४४	१५३	१६२	१७१	१८०	१८९
१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०	१७०	१८०	१९०	२००	२१०
५५	११०	१६५	२२०	२७५	३३०	३८५	४४०	४९५	५५०	६०५	६६०	७१५	७७०	८२५	८८०	९३५	९९०	१०४५	११००	११५५